राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान संपादक – पुरातत्त्वाचार्य, जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर, जयपुर]

*

ग्रन्थांक १३

[राजस्थानी-हिन्दी साहित्य-श्रेणी]

क्याम खां रासा

*

—: प्रकाशक :—

राजस्थान राज्यसंस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर

जयपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

'राजस्थानी-हिन्दी साहित्य-श्रेणी' के अन्तर्गत प्राचीन राजस्थानी-गुजराती-हिन्दी भाषाके जो ग्रन्थ प्रेसोंमें छप रहे हैं उनकी नामावलि ।

पद्यात्मक रचनाएं –

१. कान्हड दे प्रबन्ध-कर्ता जालोर निवासी कवि पद्मनाभ ।
२. गोराबादल-पदमिणी चउपई-कर्ता कवि हेमरतन ।
३. वसन्तविलास–फागु काव्य ।
४. कूर्मवंशयशप्रकाश अपर नाम लावारासा-कर्ता चारण कवि गोपालदान
५. क्यामखां रासा – कर्ता मुस्लिम कवि जान ।

गद्यात्मक रचनाएं –

६. बांकी दासरी ख्यात ।
७. मुंहता नैणसीरी ख्यात ।
८. राठोड वंसरी उत्पत्ति ।
९. खींची गंगेव नींबावतरो दोपहरो, राजान राउतरो वात वणाव आदि ।
१०. दाढाला एकलगिडरी वात ।

छपनेके लिये तैयार होनेवाले कुछ ग्रन्थ

राजस्थानी सुभाषित रत्नाकर ।
पुरातन राजस्थानी गद्य संचय ।
जहांगिर यशश्चन्द्रिका - कवि केशवदास कृत ।
रणमल्लछन्द - कवि श्रीधरव्यास कृत ।
जलाल गहाणीरी वात ।
कुतबदी साहजादेरी वात ।
हितोपदेश गद्यालेरी भाषा
बेताल पचीसीरी वात । इत्यादि - इत्यादि ।

मुस्लिम कवि जान रचित

क्यामखां रासा

विस्तृत भूमिका एवं टिप्पणी आदिसे समलंकृत

संपादन कर्ता

डॉ. दशरथ शर्मा एम्. ए. पीएच्. डी.;

अगरचंद नाहटा; भंवरलाल नाहटा

प्रकाशन कर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर

जयपुर, (राजस्थान)

[प्रथमावृत्ति; प्रति सं० ७५०]

विक्रमाब्द २०१०] मूल्य [illegible] ७५ न० पै० [खिस्ताब्द १९५३

मुद्रक—पी. एच्. रामन्, एसोसिएटेड ए. एन्ड प्रि. लि., ५०५, आर्थर रोड, बम्बई ७

क्याम खा रासा - अनुक्रमणिका

**
*

किंचित् प्रास्ताविक

'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' में प्रकाशित करनेके लिये, बीकानेरके ज्ञानभंडारोंमेंसे कुछ ग्रन्थ प्राप्त करनेकी दृष्टिसे सन् १९५२ में बीकानेर जाना हुआ, उस समय, प्रसिद्ध राजस्थानी साहित्यसेवी श्रीयुत अगरचन्दजी नाहटाके पास प्रस्तुत **'क्यामखां रासा'** की प्रतिलिपि देखनेमें आई। ग्रन्थकी उपयोगिता एवं विशेषताका खयाल करके हमने इसे, इस ग्रन्थमालामें प्रकट करने का निश्चय किया और तदनुसार मुद्रित होकर अब यह विद्वानोंके हस्त संपुट में उपस्थित हो रहा है।

ग्रन्थ और ग्रन्थकारके विषय मे यथालभ्य सब बातें संपादक-त्रयीने विस्तृत भूमिका और ऐतिहासिक टिप्पण आदि द्वारा उपलब्ध कर दी हैं जिससे पाठकोंको ग्रन्थका हार्द समझने में यथेष्ट सहायता मिल सकेगी।

मूल ग्रन्थकी केवल प्रतिलिपि ही हमें मिली थी जो श्री नाहटाजीने कुछ समय पहले, उन्हे प्राप्त हस्तलिखित प्राचीन प्रतिके उपरसे करवा रखी थी। प्राचीन ग्रन्थोके संपादनकी हमारी शैली यह रहती है कि किसी कृतिका संपादन कार्य जब हाथमें लिया जाता है तब उसकी अन्यान्य दो चार प्रतिया प्राप्त करनेका प्रयत्न किया जाता है। यदि कहींसे उसकी ऐसी प्रतिया मिल जाती हैं तो उनका परस्पर मिलान करके, भाषाकी, छन्दकी, अर्थकी और वस्तुसंगति आदिकी दृष्टिसे, विशिष्ट रूपसे पर्यवेक्षण करके मूल पाठकी वाचना तैयार की जाती है और भिन्न-भिन्न प्रतियोंमे जो शाब्दिक पाठभेद प्राप्त होते हैं उन्हे मूलके नीचे पादटिप्पणीके रूपमें दिया जाता है। प्राचीन ग्रन्थोके सपादनकी यह पद्धति विद्वन्मान्य और सर्वविश्रुत है। परन्तु जब किसी ग्रन्थका कोई अन्य प्रत्यन्तर शक्य प्रयत्न करने पर भी, कहींसे नहीं प्राप्त होता है, तब फिर वह कृति केवल उसी प्राप्त प्रतिके आधार पर यथामति संशोधित-संपादित कर प्रकट की जाती है। प्रस्तुत 'क्यामखां रासा' भी इसी तरह, केवल जो प्रतिलिपि हमें प्राप्त हुई उसीके आधार पर, संशोधित कर प्रकाशित किया जा रहा है। जिस मूल प्रतिपरसे, श्री नाहटाजीने अपनी प्रतिलिपि करवाई थी वह मूल प्रति भी हमारे देखनेमें नही आई। इससे हमको यह ठीक विश्वास नही है कि जो वाचना प्रस्तुत मुद्रण में दी गई है वह कहां तक ठीक है।

प्रेसमेंसे आनेवाले प्रुफोंका सशोधन करते समय हमें इस रचनामें भाषा और शब्द संयोजनाकी दृष्टिसे अनेक स्थान चिन्तित मालूम दिये है जिनका निराकरण मूल प्रति और एकाध प्रत्यन्तरके देखे विना नही किया जा सकता। लेकिन उसके लिये कोई अन्य उपाय न होनेसे इसको यथाप्राप्त प्रतिलिपिके अनुसार ही मुद्रित करना हमें आवश्यक हुआ है। राजस्थानके साहित्यसेवी विद्वानोंसे हमारा अनुरोध है कि वे इस रचनाके कुछ प्रत्यन्तर – जो अवश्य कहीं-न-कहीं होने चाहिये – खोज निकाले, जिससे भविष्यमें इसकी एक अच्छी विशुद्ध वाचना तैयार करने-करानेका प्रयत्न कोई उत्साही मनीषी कर सके।

कवि जान राजस्थानका एक बड़ा और प्रसिद्ध कवि हो गया। यद्यपि जाति और धर्मसे वह मुसलमान था लेकिन उसकी रचनाओंके पढ़नेसे मालूम होता है कि वह भाव और भक्तिकी दृष्टिसे प्रायः हिन्दु था। उसका शरीर मुस्लिम था परन्तु आत्मा हिन्दु था। यदि उसने अपनी रचनाओमें अपने व्यक्तित्वके परिचायक कोई उल्लेख न किये होते तो पाठकोंको इन रचनाओंका कर्त्ता कोई हिन्दु-इतर है ऐसी कल्पनाका होना भी असंभवसा लगता।

कविकी विविध प्रकारकी और विस्तृत संख्यावाली रचनाओंके विषयमें संपादक मित्रोंने यथेष्ट प्रकाश डाला है। इससे ज्ञात होता है कि कवि अपने समयमें राजस्थानका एक प्रमुख साहित्यकार रहा है। शायद इतनी विविध रचनाएं, उस समयके अन्य किसी हिंदु या जैन विद्वान्ने नही की हैं। कविका अनेक विषयों पर अच्छा अधिकार मालूम देता है। भाषा और भावों पर तो उसका बड़ा ही प्रभुत्व प्रतीत हो रहा है। लोक भाषाके ग्रन्थोंकी प्रतिलिपि करनेवाले लेखकोंकी लिखन-पद्धति प्रायः शिथिल और अनियमित होती थी, इस लिये ऐसी रचनाओंमें लेखनभ्रष्टताके कारण भाषाभ्रष्टताका प्राचूर्य उपलब्ध होना स्वाभाविक है और इसी कारणसे किसी भाषा कविकी कृतिका पूर्णतया विशुद्ध रूपमें प्राप्त होना असंभवसा रहता है। परंतु यदि ऐसी प्राचीन रचनाओंके दो चार भिन्न स्वरूपके अच्छे प्रत्यन्तर मिल जाते है तो उनके आधार पर विशेषज्ञ विद्वान् किसी भी रचनाकी विशुद्ध वाचना ठीक तरहसे उपस्थित कर सकता है। जैसा कि हमने ऊपर सूचित किया है प्रस्तुत 'क्यामखां रासा' उक्त एक ही प्रतिलिपिके आधार पर मुद्रित किया गया है ओर इससे इसमें भाषा, छन्द, वर्णसंयोजन आदिकी दृष्टिसे बहुतसे स्थान शिथिलता ओर अशुद्धताके उदाहरण स्वरूप दृष्टिगोचर होते हे परंतु हमारा विश्वास है कि यदि दो-एक अन्य प्रत्यन्तरोंके आधार पर, इसकी विशुद्ध वाचना तैयार की जाय तो, जान कविकी यह कृति एक उत्तम कोटिकी साहित्यिक रचना सिद्ध होगी। उस समयके हिन्दु या जैन कविकी कोई रचना, शायद ही कवि जानकी रचनाकी तुलनामें स्पर्द्धा करने योग्य सिद्ध हो।

कविका स्वभाव बहुत उदार है। वह राजपूत जातिकी वीरताका बडा प्रशंसक है। अपने चरित्रनायकके विपक्षियोंकी वीरताका भी वह अच्छा सहानुभूतिपूर्वक वर्णन करता है। क्यामखानी वंशवाले, वास्तवमें चौहान वंशीय राजपूत थे और इसलिये कवि चौहान कुलका गौरव-गान करनेमें अपना गर्व समझता है। वह चौहान कुलको राजपूत जातिमें सबसे बड़ा गौरवशाली कुल मानता है। उसके विचारमे

जिती जात रजपूत की, सगरे हिंदसतान।
सबमें निहचै जानियो, बडौ गोत चहुवांन॥

... ...

चाहुवांन यातें कह्यो चहूं कूटमें आन।
सगरे जंबू दीपमें सम को गोत न आन॥

... ...

"फूलनि मधि गुलाल, चुनियनि जैसी लाल ।
राइनमें तैसो गोत चक्कवै चौहांन को ॥"

इसलिये अपने चरितनायक अलिफखानका, इस चौहान गोतमें उत्पन्न होना कविके मनमें बड़े गौरवकी बात है और वह प्रारंभहीमें बड़े गर्वके साथ इसका उल्लेख करता हुआ कहता है कि

"अलिफखांनु दीवानको बहुत बडौ है गोत ।
चाहुवांनकी जोरको और न जगमें होत ॥"

चौहानकुलकी उत्पत्ति की जो कथा इस कविने दी है वह शायद अन्य किसी ग्रन्थमें नहीं है और इस दृष्टिसे यह एक नूतन अन्वेषणीय वस्तु है। कवि पृथ्वीराज चौहान (प्रथम के ?) द्वारा काबूलसे दूब मंगा कर, दिल्लीके मैदानोंको हराभरा कर देनेका जो उल्लेख करता है (पृ. ६, पद्य ६५) वह भी एक, ऐतिहासिकोंके लिये गवेषणीय विचार है।

कविकी वर्णनशैली स्वाभाविक और सरल है। न इसमें कोई शब्दाडंबर है न अत्युक्तिका अतिरेक है। उक्तिपद्धति अच्छी ओजस्भरी हुई और रचना प्रवाहबद्ध एवं रसप्रद है।

भाषाविद्या (फाइलोलॉजी) की दृष्टिसे यह ग्रन्थ और भी अधिक महत्त्वका है। इसमें डींगलकी वह कृत्रिम शब्दावलि बहुत ही कम दिखाई देती है जो बादकी शताब्दीमें बनी हुई चारणोंकी रचनाओंमें भरपूर दृष्टिगोचर होती है। इसकी शब्दावलि पर शौरसेनी अपभ्रंशकी बहुत कुछ छाया दिखाई देती है और साथमें प्राचीन राजस्थानीका पुट भी अच्छे प्रमाणमें उपलब्ध होता है। हमारा अभिमत है कि किसी उत्साही और परिश्रमी विद्वान्को या विद्यार्थीको चाहिये कि किसी युनिवर्सिटीकी पीएच. डी. की डीग्रीके लिये इस कविकी रचनाओंका भाषाविज्ञानकी दृष्टिसे गंभीर अध्ययन कर, तुलनात्मक निबन्ध उपस्थित करनेका प्रयत्न करे।

इस भाषाविद्याके विचारका उल्लेख करते समय, प्रस्तुत प्रकरणमें जो एक कथन हमें प्राप्त हुआ है वह विद्वानोंके लिये और भी विशेष विचारणीय है।

बीकानेरकी अनूपसंस्कृत लाइब्रेरीके, एक हस्तलिखित प्राचीन गुटकेमें, रूपावली नामक आख्यान लिखा हुआ है जिसका थोड़ा-सा परिचय संपादकोंने अपनी भूमिकाके पृ. ११ पर दिय है। यह रूपावली आख्यान प्रस्तुत कवि जान ही की कृति है या अन्य किसीकी यह इस परिचयसे ज्ञात नही हो सकता। इस आख्यानकी पहली चौपाईमें कहा गया है कि **फतहपुर नगर जहां बसा है उस देश या भूमिका नाम बागर* है और वहांके आसपास जो भाषा बोली जाती है वह भली प्रकार की सोरठ-मारू है जिसमें सुन्दर रूपसे भाव प्रकट किये जाते हैं।** हमारे लिये

---

* ग्रन्थकारने वर्तमानमें शेखावाटी कहलानेवाले प्रदेशका नाम--जिसमें फतहपुर और झूंझनु आदि नगर बसे हुए हैं—वा ग ड लिखा है—यह भी भौगोलिक दृष्टिसे अन्वेषणीय है। राजस्थानका वह प्रदेश, जिसमें डूंगरपुर, बांसवाडा, प्रतापगढ आदि नगर बसे हुए है प्राचीन कालसे वा ग ड नामसे प्रसिद्ध है। इसी तरह राजस्थानकी दक्षिणी सीमा पर आया हुआ कच्छ और उत्तर गुजरातके बीचमें जो छोटा रण कहलाता है उसके आसपासके प्रदेशका नाम भी वा ग ड है और जो प्राय: कच्छ-वागडके नामसे प्रसिद्ध है। कवि जानके समकालीन साहित्यमें फतहपुर आदिका होना भी वा ग र या वा ग ड प्रदेशमें बताया गया है। यों राजस्थानके सीमा प्रान्तों पर तीन बागडी प्रदेशोंका उल्लेख मिल रहा है। इस वा ग ड शब्दका वास्तविक अर्थ क्या है यह भी एक विचारणीय वस्तु है। जैन ग्रन्थोंमें वा ग ड विषयके बहुतसे उल्लेख प्राप्त होते हैं।

भाषाका यह **सोरठ-मारू** नाम बिल्कुल नया और विचारणीय है। मारू का अर्थ तो स्पष्ट ही है कि जिसका सम्बन्ध मरूभूमिसे हो वह **मारू** है; पर इसके साथ सोरठ शब्दका क्या संबन्ध है? हमारा खयाल है कि कविको सोरठ शब्दसे वह भाषाप्रदेश अभिप्रेत है जिसे वर्तमानमें गुजराती भाषा-भाषी प्रान्त कहा जाता है। जिस प्रकार भौगोलिक दृष्टिसे सोरठका प्रदेश प्राचीन कालसे सर्वत्र विश्रुत रहा है इसी तरह वहांकी जनभाषा भी, जो कि वर्तमानमें तो वह गुजरातीके नामसे ही सर्वत्र प्रसिद्ध हो रही है, उस समय, सोरठके नामसे प्रसिद्धिमें रही हो और फतहपुरके प्रदेशके लोगोंकी जो बोली रही हो उसमें **मारू** और **सोरठ** की बोलीका विशिष्ट संमिश्रण रहा हुआ होनेसे कविनं उसे इस नामसे उल्लिखित किया हो।

आधुनिक राजस्थानी और गुजराती दोनों भाषायें मूलमें एक थी। मुगलोंके शासन कालके मध्य समयसे धीरे-धीरे इनमें कुछ पार्थक्य होने लगा। भाषावैज्ञानिकोंने प्राचीन राजस्थानी एवं गुजरातीको एकरूप मान कर उसके लिये **प्राचीन पश्चिमीय राजस्थानी** ऐसा शास्त्रीय नाम निश्चित किया है। लेकिन इस नामनिर्देशमें बहुतसे विद्वानोंको सन्तोष नही है। अतः वे कोई ऐसा नामनिर्देश करना-कराना चाहते हैं जिससे राजस्थान और गुजरातकी भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक संयुक्तता और सहकारिताका स्पष्ट बोध हो सके। गुजरातके एक विशिष्ट कवि, लेखक, विचारक और विवेचक विद्वान् श्रीयुत उमाशंकर जोशीने इसके लिये **मारू-गूर्जर** शब्दका प्रयोग करना पसंद किया है। उक्त रूपमती आख्यानके कर्ता द्वारा किया गया **सोरठ मारू** शब्दका प्रयोग देख कर हमें इस विषयमें विशेष प्रेरणा मिली है और हमारी कल्पनामें कवि उमाशंकरजी द्वारा सूचित राजस्थान और गुजरात की सास्कृतिक एकताका सारसूचक **मारू-गूर्जर** शब्द प्रयोग ठीक उपयुक्त लगता है। राजस्थान और गुजरातके विशिष्ट भाषाविद् विद्वान् इस पर अवश्य विचार करें। इस विषयमें हम अपने कुछ विशेष विचार किसी अन्य अवसर पर प्रकट करना चाहते है।

हमारी कामना है कि कवि जानकी अन्य रचनाए भी इसी तरह सुसपादित हो कर प्रकाशमें आनी चाहियें।

सर्वोदय साधना आश्रम,
चंदेरीया
ता. १०-३-५३

–जिनविजय मुनि

क्यामखां रासाके कर्त्ता कविवर जान और उनके ग्रन्थ

हिन्दी साहित्यमें जान कविके क्यामखां रासो आदि ग्रन्थोंका सबसे पहला उल्लेख राजस्थान विद्वद्रत्न परम साहित्यनुरागी व संत साहित्यके अद्वितीय संग्राहक स्वर्गीय पुरोहित हरिनारायणजीने, १५ वर्ष हुए अपनी "सुन्दर ग्रन्थावली" में किया था। सन्तकवि सुन्दरदास सं० १६८२ में फतहपुर पधारे, और अधिकतर यहीं रहने लगे। अतः फतहपुरके विद्यानुरागी नवाबोंका आपके सम्पर्कमें आना स्वाभाविक था। इसी प्रसंगसे पुरोहितजीने अलफखाँ व उनके रचित चार ग्रंथ, फतहपुरके नवाबोंके नाम एवं क्यामरासोका उल्लेख किया था। यथा—

"सुन्दरदासजी फतहपुरमें नवाब अलफखाँके समयमें आगये थे। सम्भव है यहां उस वीर और कवि नवाबसे इनका मिलना हुआ हो, क्योंकि नवाब सम्वत् विक्रमी १६९३ (सन् हिजरी १०५३ रमजान की २८ ता. को) तलवाड़ेके युद्धमें बड़ी वीरतासे वीरगतिको प्राप्त हुआ था। यह महामहिम नवाब अलफखाँ प्रायः शाही खिदमतमें रहा करता था। यह बड़ी-बड़ी मुहिमों और युद्धोंमें भेजा जाता था और प्रायः सदा विजयी रहा करता था। परन्तु शूरवीर होकर भी कहते हैं कि यह एक अच्छा कवि भी था, और हिन्दी काव्यमें कई ग्रन्थ भी बनाये हैं[1] जो प्रायः शेखावटीके अन्दर प्रसिद्ध हैं।"

आपने टिप्पणीमें लिखा है कि अलफखाँ - काव्योपनाम जान कविके बनाये हुए चार ग्रन्थ १. रतनावली, २. सतवंतीसत, ३. मदनविनोद, ४. कविवल्लभ हैं, जो हमारे संग्रहमें हैं। (पृष्ठ ३६-३७) पृष्ठ चालीसकी टिप्पणीमें उपर्युक्त टिप्पणीकी बातको पुनः दुहराते हुए क्यामरासा के रचियताका नाम [2]नेह्मतखाँ बतलाया था। यथा—

"अलफखाँ फतहपुरके नवाबोंमें नामी वीर और कवि हुआ। यही जान कवि था, जिसने कई ग्रन्थ रचे थे। उनमेंसे चार ग्रन्थ हमारे संग्रहमें भी विद्यमान हैं। इसके छोटे बेटे "नेहृतमतखाँ" ने कायमरासा बनाया। इसहीके अनुसार नजमुद्दीन पीरजादे झुंझणूं फ़तहपुरने "शजतुल मुसलमीन" फारसीमें तवारीख लिखी, जिसकी नकल झूझणूंमें हमने करवायी थी परन्तु वह मांगकर कोई ले गया था सो अबतक लौटाई नहीं। इसीके आधारपर "तारीख खाँजहानी" हैदराबाद-दखिणमें बनी है। नवाब नं. १२ कामयाबखाँके समयमें शेखावत वीर शिवसिंहजीने सं. वि. १७८८ में फतहपुरको तलवारके जोरसे छीन लिया। तबसे शेखावतोंके अधिकारमें है। (वाकियात कौम काइम खानी" "फरूरू त्तवारीख" तथा "शिखर वंशोत्पति पीढ़ी वार्तिक" एवं सीकरका इतिहास।)

पुरोहितजीके पश्चात् धूमकेतुके सम्पादक पं. शिवशेखर द्विवेदीने धूमकेतुके तीसरे अंक (अगस्त सन् १९३८) में तीन ग्रन्थोंका परिचय प्रकाशित करते हुए जानका नाम अलफखाँ

---

१. फतहपुर परिचयके पृष्ट १३६ में भी इसी भ्रान्त परम्परा को अपनाया गया है।

२. फतहपुर परिचय ग्रन्थमें नियामतखाँ लिखा है।

लिखनेके साथ-साथ उसे मुगल सम्राट् शाहजहाँका साला बतलाया। इसका आधार अज्ञात है।

इसके पश्चात् पं. झाबरमलजी शर्माने सन् १६४० में हमारे द्वारा सम्पादित "राजस्थानी" त्रैमासिक (वर्ष ३ अंक ४)में "कायमखानी नवाब अलफखाँ और उसकी हिन्दी कविता" नामक लेख छपवाया जिसमें कायमखानी वंशकी पूर्व-परम्पराके साथ सतवंतीसत, मदनविनोद एवं कविवल्लभका रचयिता अलफखाँको बतलाया। इस लेखमें पण्डितजीने पुरोहित हरिनारायणजीके अलफखाँकी मृत्यु[1] सं. १६६३ (तलवाड़े युद्ध) में होनेके कथनपर सन्देह प्रकट किया क्योंकि कविवल्लभका रचनाकाल स्वयं ग्रन्थमें ही सं. १७०४ दिया गया है। पुरोहितजीके कथनानुसार इन्होंने कायमरासाके रचयिता अलफखाँके छोटे बेटे नेढमतखाँको ही बतलाया है एवं हिन्दी साहित्यमें प्रसिद्ध ताजको कायमखानी नवाब फदनखाँकी पुत्री एवं अलफखाँ के पिता ताजखाँ (द्वितीय) की बहिन होना बतलाया है। जब मैंने इस लेखको पढ़ा, मनमें विचार हुआ कि सभी व्यक्ति जान कविको अलफखाँ बतला[2] रहे हैं। पर ग्रन्थकारने कहीं भी इसका सूचन नहीं किया। अतः वास्तविकताकी शोध करनी चाहिए।

इसी समय बीकानेर राज्यकी अनूप संस्कृत लाइब्रेरीका पुनरुद्धार-कार्य आरंभ हुआ और उसमें जान कविके कई ग्रन्थोंकी हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त हुईं। फलतः ब्रजभारतीमें प्रकाशित (सं. १६४२ में) अपने लेखमें मैंने जान कविके ६-१० ग्रन्थोंका उल्लेख किया था। अनूप संस्कृत लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन श्री रावत सरस्वत बी. ए. से जान कविके सम्बन्धमें बातचीत होने पर इन्होंने शेखावाटीके किसी स्थानमें जान कवि के ७० ग्रन्थोंकी संग्रह प्रतिकी जानकारी दी। उनकी दी हुई ७० ग्रन्थोंकी सूची देते हुए मैंने एक लेख भी तैयार करके रखा, और उपर्युक्त संग्रह प्रतिके खरीदनेकी बात चल रही थी। इसी बीच वह प्रति मेरी[3] सहायतासे जुलाई सन् १६४४में हिन्दुस्तानी अकेडेमीने खरीद ली। सन् १६४५ मे रावत सारस्वतने सरस्वती (जनवरी) एवं विश्ववाणी (मई) में जान कविके ग्रन्थोंके परिचायक दो लेख प्रकाशित किये, पर जान कविका वास्तविक नाम व परिचय वे भी प्राप्त नहीं कर सके उन्होंने नाम मुहम्मद जान होनेकी संभावना प्रगट की। अकेडेमीकी प्रतिके आधारसे श्रीकमल कुलश्रेष्ठने हिन्दुस्तानीके जनवरी-मार्च सन् १६४५ के अंकमें उक्त प्रतिके ६८ ग्रन्थोंका ज्ञातव्य परिचय प्रकाशित किया।

जान कविके ग्रन्थोंमें बुद्धिसागर नामक ग्रन्थ भी था। उसकी एक प्रति दिल्लीके कूचे दिगम्बर जैन मन्दिरमें ज्ञात हुई। वहांके सरस्वती भण्डारकी सूची अनेकान्त व० ४ अं० ७ ८ में प्रकाशित हुई। उसमें बुद्धिसागरके ग्रन्थ रचियताका नाम "न्यामतखाँ" बतलाया था। अतः दिल्ली जानेपर मैंने इस प्रतिको देखनेका प्रयत्न किया पर सफलता नहीं मिली। उसी बीच जैनाचार्य श्रीजिन

---

१. वास्तवमें यह सम्वत् भी सही नही है। यहाँ सम्वत् १६८३ चाहिए।

२. श्रीयुत मोतीलाल मेनारिया और कमलकुलश्रेष्ठने भी इसीका अनुकरण किया है, क्योंकि कविनें क्याम रासोके अतिरिक्त किसी ग्रन्थमें अपना वास्तविक नाम नहीं दिया है।

३. हिन्दुस्तानी, भाग १५ अंक १.

ऋद्धिसूरिजी महाराजके दर्शनार्थ चुरूमें मेरा और भंवरलालका जाना हुआ, और वहाँसे विदुषी साध्वी श्री विचक्षणश्रीजीके वन्दनार्थ भूंभणू भी गये। वहांके जैन उपाश्रयमें स्थित यतिजीके संग्रह के खंडमें हमें जान कविके तीन ग्रन्थों (कायम रासो, अलफखांकी पैड़ी, बुद्धिसागर) की उपलब्धि हुई, जिनमेंसे कायमरासो एवं अलफखाँकी पैंडी दोनों ऐतहासिक काव्य थे, एवं अलफखांके सम्बन्ध-में रचे गये थे। उसकी प्रारंभिक पंक्तियोंको पढ़ते ही यह तो निश्चय हो गया कि जान कवि अलफखां नहीं, पर उसका पुत्र था। फिर सूक्ष्मतासे विचार करनेपर उसका नाम उपयुक्त बुद्धिसागर ग्रन्थकी लेखन प्रशस्तिमें उल्लिखित न्यामतखां ही, जो कि अलफखांके पांच पुत्रोंमें द्वितीय थे, सिद्ध हुआ। इसकी सूचना सर्वप्रथम हमने हिन्दुस्तानीके अप्रेल, जून १९४५ के अंकमें कायमरासोका परिचय प्रकाशित करते हुए दी। वैसे "कविवर जान और उनके ग्रन्थ" नामक लेख इस सम्बन्धमें पहले लिखा जा चुका था, पर कागजकी दुष्प्राप्यतादिके कारण वह बादमें १९४९ की 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित हुआ। इस लेखमें मैंने जान कविके ६ ग्रन्थ अपने संग्रहमें एवं अन्य ग्रन्थोंको प्रतियां अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, राजस्थान रिसर्च सोसाइटी, सरस्वती भंडार (उदयपुर) एवं एशियाटिक सोसाइटीमें प्राप्त होनेका उल्लेख करते हुए रावत सारस्वतसे प्राप्त ७० ग्रन्थोंकी सूची दी। उप-र्युक्त १७ ग्रन्थोंमेंसे बारह ग्रन्थोंके नाम तो इन ७० ग्रन्थोंमें मिल जाते हैं, पर ५ ग्रन्थ उनसे अतिरिक्त मिले। अतः जान कविकी कुल ७५ रचनाओंका परिचय इस लेखमें मैंने दिया था। पीछेसे हमारे संग्रहके बुद्धिसागर ग्रन्थके सम्बन्धमें अनुसन्धान करनेपर वह ७० ग्रन्थोंकी सूचीमें उल्लिखित बुद्धिसागरसे भिन्न ही सिद्ध हुआ, अतः रचनाओंकी संख्या ७६ हो जाती है।

इन ग्रन्थोंके रचना-कालपर विचार करनेसे कविकी संवतोल्लेख वाली सर्व प्रथम रचना शतकत्रय प्रतीत होती है, जिसकी रचना १६७१ में हुई है, और अन्तिम संवतोल्लेख वाली रचना जाफरनामा पदनामा है जो सं० १७२१ में रचित है। अतः कविने ५० वर्षतक निरन्तर साहित्यकी सेवा की और इस तरह ७० वर्षकी आयु अवश्य पाई सिद्ध होता है। उपलब्ध ग्रन्थों में सबसे बड़ा ग्रन्थ बुद्धिसागर है जो कि ३५०० श्लोक परिमाण का है। उसके बाद परिमाणमें कविवल्लभ एवं कायमरासोका स्थान आता है। कविकी भाषा और शैली सुन्दर है। वह आशु कवि था। उसने कई ग्रन्थोंके २, ३, ८ प्रहरमें व १-२-३ दिनोंमें रचे जानेका उल्लेख स्वयं किया है। रस-तरंगिणी, बुद्धिसागर आदि ग्रन्थोंसे स्पष्ट है कि कवि संस्कृत एवं फारसीका भी अच्छा ज्ञाता था। प्रथम ग्रन्थका आधार संस्कृत ग्रन्थ है, दूसरेका फारसी ग्रन्थ। कविका अध्ययन भी बहुत विशाल था। हिन्दी भाषापर तो इसका विशेष अधिकार था ही। अलंकार-रस, काव्य-शास्त्र, वैद्यक एवं इतिहास संबन्धी ग्रन्थोंकी रचना करनेके अतिरिक्त आख्यानक प्रेम काव्य लिखना उसका प्रिय विषय रहा प्रतीत होता है।

[टिप्पणी—सूफी काव्य संग्रहमें श्रीयुत परशुरामजी चतुर्वेदीभी लिखते हैं कि इस कविकी विशेषता इसकी रचनाओंकी पंक्तियोंकी द्रुतगामितामें देखी जा सकती है। जान पड़ता है कि इसकी प्रत्येक पंक्ति

लक्षण अपने आप बनती चली जाती है, न तो इसे उसके लिए कुछ सोचना पड़ा है और न कोई परिश्रम ही करना पड़ा है। कथानककी रूप रेखा इस कविके केवल संकेत मात्रसे ही भरती चली जाती है और कुछ कालमें एक प्रेमगाथा प्रस्तुत हो जाती है। फिर भी इसकी रचनाएँ केवल तुक बन्दियां नहीं कही जा सकतीं। उनके बीच २ में कुछ ऐसी सरस पंक्तियाँ आ जाती हैं जो किसी भी प्रौढ़ एवं सुन्दर काव्यका अङ्ग बन सकती हैं, और उनकी संख्या किसी प्रकार भी कम नहीं कही जासकती।

इस कविने पात्रोंके चरित्र-चित्रण तथा घटना-विधानमें भी कभी-कभी अपना काव्य कौशल दिखलाया है और कोई न कोई नवीनता ला दी है।]

रावत सारस्वत द्वारा प्राप्त सूचीमें 'रस कोष' का रचनाकाल सं० १६६७ लिखा हुआ था, उसी आधारसे राजस्थान भारतीमें प्रकाशित अपने लेखमें, मैंने उसे सर्वप्रथम रचना बतलाई थी। श्रीयुत परशुराम चतुर्वेदीने सूफी काव्य संग्रहके पृष्ठ १३९-४०में उसीका अनुकरण किया है। पर मेरे लेख छपनेके पश्चात् सं० १६८४ जेष्ठ वदीमें कवि भीखजनके फतहपुरमें लिखित प्रति अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें अवलोकनमें आई। जिससे इस ग्रन्थका वास्तविक रचनाकाल १६७६ सिद्ध होता है। यथा —

"जहाँगीरके राज्यमें हिरन चित्त को दोष।
सोलहसै षट हुतरै, कियो जान रस कोष॥" १४१। चौ. ५०

प्रस्तुत ग्रन्थ, रसमंजरीकी भाँति नायक नायिकाके वर्णन वाला है।

"अबहि बखानौ नाइका नाइक कहि कवि जान।
मथूं कथूं रसमंजरी सुनो सबे धर कान॥३॥

ग्रन्थका परिमाण ३०० श्लोकोंका है।

कविका गुरु

कविने हाँसीके शेखमोहम्मद चिस्तीको अपना गुरु बताया है।

शेखमुहम्मद मेरो पीर, हाँसी ठाम गुनीन गंभीर।
शेखमुहम्मद पीर हमारो, जाकौ नाम जगत उजियारो।
रहन गाँव जानहु तिहँ हाँसी, देखत कटे चित्तकी फाँसी।

कविवल्लभ एवं बुद्धिसागर ग्रन्थमें पीर मुहम्मदके ४ पूर्वज कुतबाँ १. जमाल २. बुरहान ३. अनवर एवं ४. नूरदीके भी नाम दिए हैं। यथा—

"कुतब भयै न इनके कुलचार, तिनको जानत सब संसार।
पहले जानहुँ कुतब जमाल, जिहि तन तक्यो सु भयौ निहाल॥३॥
दूजै भयौ कुतुब बुरहान, प्रगट्यो जाकौ नाम जहान।
कुतब अनवर दादौं भयौ, जिनकौं छत्रपति नयौं।
कुतब नूरदी नूरजहाँन, प्रगट भयौ जग जैसे भाँन।
हाँसीमें इनको बिसराम, जियारत करै सरै मन काँम।

हाँसी ऐसी ठौर है, उत जो रावत आई।
इच्छा पूजै सुखित है, हँसत खेलत घर आई।
सेखमोहम्मद पीर हमारौ, जाकौ नाम जगत उजियारौ।
रोजो ऊपर बरसत नूर, करामात जग भई हजूर।
ज्यारत करत फिरसते आवत, मनुषनुको को बात सुनावत।
नई नाही कछु होति आई, इनके कुलमें आदि बढ़ाइ।

७० ग्रन्थोंकी संग्रह प्रति

श्री कमलकुल श्रेष्ठके लेखानुसार इस प्रतिके पृष्ठोंकी लम्बाई-चौड़ाई ६ × ४ है। प्रारंभिक कुछ अंश प्राप्त नहीं हैं। बीच-बीचमें भी एकाध पृष्ठ गायब है। प्रति सं० १७७७-७८ में फतह-चन्द ताराचन्द डीडवाणिया द्वारा लिखित है। लिखावट स्पष्ट है। कहीं-कहीं कीड़ोंके खाने आदि कारणोंसे पढ़नेमें कठिनाई होती है। पहले यह एक जिल्दमें होगी अब सब पन्ने अलग-अलग हैं।

कमल कुलश्रेष्ठकी वर्गीकृत ग्रन्थ सूची

१. छोटे-छोटे चरित्र काव्य

२. मुक्तक शृङ्गारवर्णन काव्य

३. उपदेशात्मक काव्य

४. कोष

५. मिश्रित

इनमें छोटे छोटे चरित्र काव्योंको दो भागोंमें विभक्त किया गया है—प्रेम कहानियाँ व स्वतन्त्र कहानियाँ। प्रेम कहानियाँ दो उपभागोंमें विभाजित की जा सकती हैं।

१. अविवाहिता नायिकासे प्रेम होने और प्रायः विवाहमें समाप्त होने वाली कहानियाँ।

२. परकीया-प्रेम-मूलक कहानियाँ।

पहले उपवर्गमें निम्न काव्य हैं—

१. रतनावली, रचना संवत १६९१, मि. व. ७ (हि. सं. १०४४) छंद दोहा-चौपाई, विस्तार १७५ दोहे।

(प्रायः ७ चौपाइयोंके बाद १ दोहा आता है। इस प्रकार दोहोंकी संख्या दी गई है, उसके साथ चौपाइयोंकी संख्या भी जान लेनी चाहिए)

यह ग्रन्थ ९ दिन में रचित है, प्रारंभिक ४४ दोहे इस प्रतिमें नहीं हैं।

२. लैला मजनूं, र. सं.१६९१, छन्द वही, पद्य ६५९ (बीकानेर अनूप सं. ला. प्रतिके अनुसार)

३. रतनमंजरी, र. सं. १६८६, छन्द वही, २६४ दोहे, प्रारंभके पचास (५०) दोहे अनुपलब्ध है।

४. नल-दमयंती, र. सं. १७१६, छन्द वही, विस्तार, १४६ दोहे।

५. पुहुप बरिषा, र. सं. १६७८, छन्द वही, पृष्ठ २७ (१७२ चौ.) राजकुमार पुरुषोत्तम व सुकेसीके प्रेम और विवाह से सम्बन्धित है।

६. कलावती, र. सं. १६९६, छन्द वही, दोहे २०४ (१२ दिनमें रचित) (रावत सारस्वतके लेखानुसार चौ. २०७)

७. छवि-सागर, रचना सम्वत् १७०६, छन्द वही, दोहा १६ (राजा जैत एवं राजकुमारी छविसागरकी प्रेमकहानी)

८. कामलता, र. सं. १६७८, छन्द वही, दोहा ३२ (हंसपुरीके राजा तथा कामलताकी प्रेम कथा है) हिन्दुस्तानीमें पूर्ण और कुछ अंश सूफी काव्य संग्रहमें प्रकाशित।

९. कलावती, र. अस्पष्टता, छन्द वही, दोहा ३६ (पुरन्दर और कलावती प्रेमकथा) (रावत सारस्वतानुसार दोहा ३६, चौपाई ३६, छन्द १२, सोरठा २, र. सं. १६७६, दो प्रहर-में रचित)

१०. छीता, र. सं. १६९३, कार्तिक सुदी ६, छन्द वही, दोहा ३७। कुछ अंश सूफी काव्य संग्रहमें प्रकाशित।

११. रूपमंजरी, र. सं. १६९४ छन्द वही, दोहा १२२, ज्ञान एवं रूपमंजरीकी प्रेमकथा।

१२. मोहिनी, र. सं. १६९४, मि. सु. ४, छन्द वही, पद्य १२२, ३ प्रहर में रचित।

१३. चन्द्रसेन शीलनिधान, र. सं. १६९१, छन्द चौपाई, दो. १८, ८ प्रहर में (रावत सारस्वतानुसार ढाई प्रहर में) रचित।

१४. कामरानी पीतमदास, र. सं. १४९१, छन्द वही, दोहा १२, सवा दो प्रहर में रचित।

१५. कलन्दर, र. सं. १७०२, छन्द वही,पृ. २.

१६. देवलदेवी खिजखां, र. सं. १६९४, छन्द वही, दोहा ८५, प्रसिद्ध उपाख्यान।

१७. कनकावती, र. सं. १६७५, छन्द वही, दोहा ८१, राजा भरतके पुत्र परमरूप और कनकावतीकी प्रेमकहानी, ३ दिन में रचित।

१८. कौतूहली, र. सं. १६७५, छन्द विविध, पृष्ठ ३३ (चन्द्रसेन एवं कौतूहलीकी प्रेमकथा)

१९. सुभटराई, र. सं. १७२०, छन्द दोहा चौपाई, दोहा ६० (सूरजमलके पुत्र सुभटराई एवं राजकुमारीकी प्रेमकहानी)

२०. मधुकरमालती, र. सं. १६९१, फा. व. १. छन्द वही, पृष्ठ २६, कुछ अंश सूफी-काव्य संग्रहमें प्रकाशित।

२१. बांदी नामा, रचनाकाल अज्ञात, छन्द वही, पृष्ठ ४, (किसी मियांका क्रीतदासीसे अनुचित प्रेम, प्रेमकथाके ढांचेसे भिन्न।

दूसरे उपवर्गकी रचनाएं—

१. निर्मल, र. सं. १७०४ माघ, छन्द वही, दोहा १३, निर्मलकी सतीत्व रक्षाकी कहानी।

२. सतवंती, र. सं. १६७८, छन्द वही, दोहा ५२, सतवंतीकी रक्षाकी कहानी।

३. तमीमअनसारी, र. सं. १७०२, चौपाई १५०, तमीम अनसारीके पत्नीकी सतीत्व रक्षाकी कहानी।

४. शीलवती, र. सं. १६८४, छन्द वही, दोहा २५, शीलवतीको सतीत्व रक्षाकी कहानी १ दिनमें रचित।

५. कुलवंती, सं. १६९३ पौष, छन्द वही, दोहा ४७ कुलवंतीकी सतीत्व रक्षाकी कहानी।

स्वतन्त्र कहानियां—

१. बलूकिया विरही, र. सं. १६८६, चौपाई १२८, एक दिन में रचित, ईश्वर-प्रेममें पागल बलूकिया विरहीके एक लोभीके उद्धारकी कहानी।

२. अरदेसरकी कहानी, र. सं. १६९०, दोहा-चौपाई, दोहा २३, दो प्रहरमें रचित।

मुक्तक श्रृंगार वर्णन, १. वर्णनात्मक, २. रीति काव्य वर्णनात्मक—

१. बारहमासा, र. सं. अज्ञात, सवैया १५, वियोग श्रृंगारका बारहमासा।

२. ग्रन्थ बरवा, र. सं. अज्ञात, बरवा ७०, संयोग-वियोग षट् ऋतु वर्णन।

३. षट् ऋतु बरवा, र. सं. अज्ञात, बरवा २२, षट् ऋतु वर्णन।

४. षट् ऋतु पवंगम, र. सं. अज्ञात, पवंगम पृ. २. षट् ऋतु वर्णन।

(विशेषता—अंत पदोंको अेकवरण जौ मारिअे।
तौं बरवा सब ह्वै हैं मठै विचारिअे॥)

५ घूंघटनामा, र. सं. अज्ञात, दोहा चौपाई ४, पृष्ठ, यौवन व घूंघटका वर्णन।

६. सिंगार-सत, र. स. १६७१, दोहा १०१, स्त्रियोंके श्रृंगारका वर्णन, ३ दिनमें रचित।

७. भावसत, र. सं. १६७१, पृष्ठ ६, श्रृंगार रस, २ दिनमें रचित।

८. विरहसत, र. सं. १६७१ दोहा, १००, वियोग श्रृंगार, ५ दिनमें रचित।

९. दरसनामा, र. सं. अज्ञात, चौपाई २१ "घूंघट खोल दरस परसाव"।

१० अलोक नामा, र. सं. अज्ञात, चौपाई २३, अलकोंके सौंदर्यका वर्णन।

११. दरसन नामा, र. सं. अज्ञात, चौपाई ३३।

१२. बारहमासा, र. सं. अज्ञात, पृष्ठ २, कुन्निग छन्द।

१३. प्रेमसागर, र. सं. १६६४, दोहा २१४, प्रेममहिमा।

१४. वियोगसार, र. सं. १७१४, दोहा, सवैया, पृष्ठ १६, विरह-वर्णन।

१५. कन्द्रफकलोल, र. सं. अज्ञात, कवित्त सवैया, पृ० ३२, श्रृंगाररस मुक्तक छन्द। प्रतिमें

अन्त नहीं है।

१६. नायकलोज, र. सं. १७१३, छन्द विविध, पृ. २० मुक्तक छन्द।

१७. विरहीको मनोरथ, र. सं. १६९४, दोहा ४४।

१८. मानविनोद, र. सं. अज्ञात, छन्द विविध, पृष्ठ ४, मान वर्णन।

१९. प्रेमनामा, र. सं. १६७५, दोहा-चौपाई, दोहा २१।

शृंगार रस-रीति ग्रन्थ

१. रसकोष, र. सं. १६७६, दोहा चौपाई, दोहा १४१, नायक-नायिका, दूत-दूती भेद वर्णन।

२. शृंगार तिलक, र. सं. १७१०, चौपाई पृ. ३५, नायक-नायिका वर्णन।

३. रसतरंगिणी, र. सं. १७११ माघ, विविध छन्द ३२७, (संस्कृत रसतरंगिणीकी भाषा, सं. १७२४ लिखित प्रति आचार्य शाखाभण्डार बीकानेरमें।)

उपदेशात्मक काव्य

१. चेतननामा, र. सं. अज्ञात, चौपाई ३५।

२. सीख ग्रन्थ, र. सं. अज्ञात, चौपाई २२ (छन्द पारसी मति)।

३. सुधा सिख, र. सं. अज्ञात, छन्द अस्पष्ट, पृष्ठ ४।

४. सत्तनामा, र. सं. १६६३, दोहा चौपाई, दोहा १९।

५. वर्णनामा, र. सं. अज्ञात, दोहा ३२, अक्षरोंपर दोहे।

६. बुद्धिदायक, र. सं. अज्ञात, छन्द अस्पष्ट, पृष्ठ ४, मोदक छन्द।

७. बुद्धिदीप, र. सं. अज्ञात, छन्द अस्पष्ट, पृष्ठ ४।

८. उत्तम शब्द, र. सं. अज्ञात, दोहा ३५, अली, उसमान एवं बीबी फातिमाका संवाद।

९. सिखसागर, र. सं. १६९५, दोहा २४६।

१०. पदनामा, र. सं. १७३१, दोहा ८० (लुकमान)

११. जफरनामा, र. सं. १७२१, चौपाई १३५।

कोष ग्रन्थ

१. नाम-माला अनेकार्थी, र. सं. अज्ञात, पृष्ठ २४, दोहा।

मिश्रित काव्य

१. बाजनामा, र. सं. अज्ञात, दोहा, पृष्ठ ३, बाजकी चिकित्सा।

२. कबूतरनामा, र. सं. अज्ञात, दोहा, पृष्ठ ४, कबूतरकी चिकित्सा।

३. गूढ़ग्रन्थ, र. सं. अज्ञात, दोहा ९०।

४. देसावली, र. सं. अज्ञात, दोहा-चौपाई, दोहा, ४७, पृथ्वीके विस्तारका वर्णन।

५. वैद्यक सिखनामा. र. सं. १६९५ दोहा, १०१ वैद्यक ग्रन्थ।

६. पाहन परीक्षा, र. सं. अज्ञात, दोहा, चौपाई, पद्य ४७।१२ रत्न पत्थरोंका वर्णन।

कुल ग्रन्थ २१, ४, २, १९, ३, ११, १, ६, = ६८।

श्री रावत सारस्वतसे प्राप्त सूचीके अनुसार १ - सुधासागर और २ - स्वास संग्रह, दो और होने चाहिए, अतः कुल मिलाकर ७० होते हैं।

अन्य ग्रन्थ

१. कवि वल्लभ, र. सं. १७०४, शाहजहाँके समय। काव्य शास्त्रका महत्वपूर्ण ग्रन्थ।

२. मदनविनोद, र. सं. १६९० का. सु. २, कोक, पंचसायक, अनंगरंग, शृङ्गारतिलकके आधारसे रचित।

३. बुद्धिसागर, र. सं. १६९५ मि. सु. १३, पंचतंत्रका अनुवाद, शाहजहाँको भेंट किया। इस ग्रन्थके संबंधमें विशेष जाननेके लिए 'कविजानका सबसे बड़ा ग्रन्थ' शीर्षक लेख देखना चाहिए, जो कि हिन्दुस्तानी, भाग १६, अङ्क ४ में प्रकाशित है।

४. ज्ञानदीप, पद्य ८६०।८ कथाएँ, सं. १६८६ बै. व. १२, १० दिनमें रचित। (जयचन्दजी संग्रह, श्री पूज्यजी संग्रह, बीकानेर) देखें ब्रजभारती, वर्ष १, अङ्क ११।

५. रसमंजरी, र. सं. १७०३ का, पत्र ४३, सरस्वती भण्डार, उदयपुर।

६. अलफखाँकी पैड़ी, - प्रस्तुत ग्रन्थके परिशिष्टमें प्रकाशित हो रही है।

७. कायम रासा - प्रस्तुत क्यामखां रासा।

उपर्युक्त ग्रन्थोंमेंसे बीकानेरके संग्रहालयोंमें जान कविके निम्नांक ग्रन्थोंकी प्रतियाँ प्राप्त हैं। सम्पादनादिमें उपयोगी समझ सूचना दी जा रही है –

अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें

१. सतवंतीसत, र. सं. १६७८, सम्वत् १७२६ व १७२९ की लिखित दो प्रतियाँ प्राप्त हैं।

२. लैला मजनू, सं. १६९१, (सम्वत् १७५४ की लिखित संग्रह प्रतिमें)।

३. कथामोहनी, र. सं. १६९४ मि. सु. ४ (सं. १७२९।३० लि. संग्रह-प्रतिमें)।

४. कविवल्लभ, र. सं. १७०४ पत्र, ८६। महत्वपूर्ण काव्य ग्रन्थ, चित्र काव्य भी है।

५. रसकोष, र. सं. १६७६, पत्र ३७ (सं. १६८४ फतहपुरमें लिखित प्रति)

६. मदनविनोद, र. सं. १६९० का. सु. २ पत्र २७ (सं. १७४३ में लि. प्रति)

हमारे अभयजैन ग्रन्थालयमें

१. बुद्धिसागर, सं. १६९५ पत्र १८६ (सं. १७१६ लिखित)।

२. क्यामरासो, सं० १६९१ (प्रति सं. १७११में की गई)।

३. अलफखांकी पैड़ी, पद्य १००, सं. १६८४ लगभग (सं. १७१६ लि.)।

४. बैदक मति, सं. १६९५।

५. शिखासागर, सं. १६६५। (एक साथ सं. १७०१में मरोटमें लिखित)।

६. पदनामा।

७–८. सतवंतीसत व मदन विनोदकी अपूर्ण प्रतियाँ हैं।

आचार्य शाखा भण्डार

१. रसतरंगिणी, सं. १७११ माघ (सं. १७२४ लि. परिमाण ग्रन्थ १०५४ पत्र ३२७)।

श्रीपूज्य संग्रह

१. ज्ञानदीप, र. सं. १६८६।

जयचन्दजी संग्रह

१. ज्ञानदीप ,, ,,

२. रसमंजरी (अपूर्ण प्रति)।

बड़ा भण्डार

१. पाहन परीक्षा।

प्रकाशित ग्रन्थ व ग्रन्थोंके विवरण

जान कविके प्रेमाख्यानोंमेंसे कामलता 'हिन्दुस्तानी' भाग १५, अङ्क ३ में प्रकाशित हो चुका है। हिन्दी साहित्य सम्मेलनसे प्रकाशित सूफी काव्य संग्रहमें १. कनकावती, २. कामलता ३. मधुकर मालती, ४. रतनावली ५. छीता इन पाँचोंकी कथा एवं कथाओंके कुछ अंश प्रकाशित हुए हैं। अतः उनके संबन्धमें विशेष जाननेकी इच्छा वालोंको उक्त ग्रन्थ देख लेना चाहिए।

कविके अन्य ग्रन्थोंमेंसे १. सतवन्तीसत, २. मदनविनोद और ३. कविवल्लभके आदि अन्त, राजस्थानी, भाग ३, अंक ४ में प्रकाशित हैं। एवं १. कविवल्लभ, २. रसतरंगिनी, ३. रस-कोष, ४. वैदकमति, ५, पाहनपरीक्षा, ६. कथामोहिनी, ७. बुद्धिसागर, ८. लैलामजनू, ९. ज्ञानदीप, १० कायमरासा, और ११. अलफखांकी पैड़ीका आदि अन्त, मेरे सम्पादित "राजस्थानमें हिन्दीके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी खोज" के द्वितीय भागमें प्रकाशित है। रसमन्जरीका आदि अन्त सह विवरण मोतीलालजी मेनारिया द्वारा सम्पादित इसी ग्रन्थ के प्रथम भागमें है।

क्यामखानी दीवानोंके समयमें रचित ग्रन्थ

दीवान अलिफखाँ व दौलतखांके समयमें रचित कई हिन्दी ग्रन्थ उपलब्ध हुए हैं, जिनमें इन दीवानोंके सम्बन्धमें निम्नोक्त उल्लेख प्राप्त हैं–

१. बीकानेरकी राजकीय अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें(सं. १७५४ लि. गुटकेमें)प्राप्त सं. १६५७ फतहपुरमें रचित रूपावती नामक अख्यानकके प्रारंभमें निम्नोक्त महत्त्वपूर्ण उल्लेख है –

जंबुद्वीप देश तहाँ बागर, नगर फतेपुर नगरां नागर।
आसि पासि तहाँ सोरठ-मारू, भाषा भक्ती भाव पुनि सारू।
राजा तहाँ अलफखाँ जानहु, चहवान हठीका पहिचानहु।
ताकर कटक न आवै पारा, समद हिलोरनि स्यों अधिकारा।
तुरक तमंकि चढ़े केकाना, नगर नगर भू परे भगाना।
राजपूत असि चढ़ि करि कौपह, रविरथ थकै गिमनिकौं लोपह।

दोहा

ता घरि पूत सुलछनां, मनमोहन सुर ज्ञान।
चिरंजीव दिनपति उदो, दूलह दौलतिखांन।

चौपाई

अलफखांन चहुवानकी सरभरी, कौं करि सकै न देख्यो कर भरी।
इह विधि कीयो आप बखार, करम जोति स्यौं दिपै लिलार।
इन्द्रकी सभा सुनी हम कांनि, परतकि देखी इन्ह पहचांनि।
जास्यों रस सो नो निधि पावै, जाहिस्यों रिशि सो मूल गंवावै।
दीनदार दया असि कीनु, हजरति कह्यो सु शिर धरि लीनु।
ता ढिगि सेरखांन नित्य सोहे, दीनदार अर सभात विमोहै।
सारदुल अर संघ विराजै, गुजै साल शिवाली भाजै।

दोहा

ताहि वजीर साहिबखां, औदखांन उकील।
एक ही एक समलंग, बैठे करह सवील॥

(राजस्थानमें हिन्दीके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी खोज, पृ० ८३ से)

२. बीकानेर के स्व. श्री पूज्य जिन चारित्र सूरिके संग्रहमें कवि भिखजन रचित भारती नाममालाकी प्रति है। यह ग्रन्थ सं. १६८५ में फतहपुरमें रचा गया है। कविने दौलतखाँ व उनके पुत्र ताहरखाँनका उल्लेख इन पद्योंमें किया है –

बागर मधि गुन आगरो, सुबस फतेहपुर गांव।
चक्रवर्ती चहुवाँन निरप, राज करत तिहाँ ठांव ॥१०॥

राज करत रससों भयौं, ज्यो जगतिपति इन्द्र ।
अलिफखांन नन्दन नवल, दौलतिखान नरिंद ॥११॥
दान क्रिपांन सुजान पन, सकल कला सम्पूर ।
रवि बिरंचि ऐसौ रच्यौ, बचन रचन सति सूर ॥१२॥
ता नन्दन बन्दन जगत, गुन छंदनह निधान ।
कवि पंछी छाया रहे, तरवर ताहरखान ॥१३॥
प्रजा सिंच नित एकठां, धर्म रीति आनन्द ।
सकल लोक छाया रहे, बिनैराज हरिचन्द ॥१४॥
तहाँ सुभग शोभा सरस, बसै बरन छत्तीस ।
वहाँ भीखजनु जानिकै, इह मनि भई जगीस ॥१५॥

(उपर्युक्त ग्रन्थ के पृ० ६, पद्य १० से १५)

३. उपर्युक्त भीखजनकी लिखित कवि जान रचित रसकोष व आनन्द रचित कोकसारकी सं. १६४८-८५ में लिखित प्रति, अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें है। भीखजन रचित बावनी छप चुकी है।

४. सुन्दर ग्रन्थावलीमें राघवदासजीके भक्तमालसे संत कवि सुन्दरदासजीके नवाबके चमत्कार दिखानेका उल्लेख वाला पद्य उद्धृत है। पद्यमें यद्यपि नवाबका नाम नहीं है पर सुन्दरदासजीके समय पर विचार करने पर दौलतखां होना सम्भव है। पद्य इस प्रकार है –

"आयो है नवाब फतहपुरमें लग्यौ है पाईं, अजमति देहु तुम गुसइयाँ रिझायौ है ।
पलौ जो दुलीचाको उठाइ करि देख्यौ तब, फतहपुर बसै नीचै प्रगट दिखायौ है ॥
येक नीचै सर येक नीचे लसकर बड, येक नीचे गैर बन देखि भय आयौ है ।
राघा चारे राखि लीये दबते नवाब केर, सुन्दर ग्यानीकौ कोई पार नहीं पायौ है ॥

इस घटना और चमत्कारोंके लिए कहते हैं कि नवाब स्वयं सुन्दरदासजीसे मिलनेको उनके स्थल पर कभी कभी आ जाते थे और कभी कभी सुन्दरदासजो नवाबके यहाँ चले जाते थे। नवाब उनके उपदेशोंसे लाभ उठाते थे। एक समय करामात दिखानेकी प्रार्थना की तो सुन्दरदासजीने नवाबसे कहा कि ईश्वर समर्थ है संसार सारा ही करामात है। नवाबने बहुत नम्रतासे आग्रह और हठ किया तो सुन्दरदासजीने उस गलीचेके किनारोंको, जिस पर दोनों बैठे थे, उठा कर देखनेको नवाबसे कहा। देखा तो एक कूंटके नीचे फतहपुर नगर बसता हुआ दिखाई दिया। दूसरेके नीचे फतहपुरका सर (जोहड़ा, तालाब) दिखाई दिया। तीसरेके नीचे नवाबकी फौज और रिसाले, तोपखाने आदि सारी सेना दिखाई दी और चौथेके नीचे फतहपुरका बड़ा भारी बीड़ (बीहड़, घासका मैदान) दिखाई दिया। यह अजमत (करामात) देख कर नवाबको मनमें यह भय हुआ कि कहीं यह फकीर मेरे आग्रहसे रुष्ट तो नहीं हो गये हैं और यह भी कि ये बड़े करामाती

साधु हैं इनसे डरते ही रहना चाहिए और इनकी सेवा और भक्ति करके इनको रिझाना और प्रसन्न रखना चाहिए।

पुरोहित हरनारायणजीने उपरोक्त घटनाके अतिरिक्त एक अन्य चमत्कारी घटनाका भी उल्लेख किया है। यथा –

"एक और समयकी बात है कि स्वामी सुन्दरदासजी फतहपुरके गढ़में नवाबके पास बैठे थे। बातों ही बातोंमें स्वामीजीने तुरन्त फुर्तीसे नवाबको सावधान किया कि तबेलेमेंसे सब घोड़े बाहर निकलवाओ और असबाबको फौरन तबेलेमेंसे बाहर निकाल कर गढ़से बाहर ले जाओ। हुक्म होते ही वहां देर क्या थी। सैकड़ों सईस और सवार और सिपाही लग गये। घोड़ों और सामानका बाहर निकालना था कि तबेला 'धरर' धर्राट करके गिर पड़ा। यों स्वामीजीने नवाबके घोड़ोंकी रक्षा की। नवाबने स्वामीजीके कदम पकड़ लिए और बहुत भक्ति की। इस प्रकार कई चमत्कार अनेक समयोंमें दिखाये थे।"

सुन्दरदासजीसे नवाबोंका अच्छा सम्बन्ध तो था ही, इन्होंने फतहपुरमें रह कर बहुतसे ग्रन्थ इन नवाबोंके समयमें रचे।

क्यामखां रासाका ऐतिहासिक कथा - सार

रासाका प्रारंभ करते हुए कवि जान सर्व प्रथम सृष्टिकर्त्ता व मुहम्मदको स्मरण कर अपने पिता दीवान अलफखां और उसके वंशका सत्य इतिहास लिखता है। पहले पौराणिक ढंगसे सृष्टिकी उत्पत्ति और चौहान वंशका विवरण इस प्रकार लिखा है –

सृष्टिकर्त्ताने पहले मुहम्मदके नूरको रचा, और उससे स्वर्ग, फरिश्ते, चंद्र, तारे, देव, दानव, गिरि, समुद्रादि निर्माण किए। मनुष्योंकी उत्पत्तिमें प्रथम आदम हुए जिनसे आदमी हुए। हिंदु और मुसलमान दोनों एक ही पिंडसे उत्पन्न हैं, रक्त चर्मादिका कोई भेद नहीं, करनीसे अलग-अलग नाम हुए। पैगंबर आदम एक हजार वर्ष जीवित रहे, उनका पुत्र सीस ९१२ वर्ष, सीसका पुत्र उनूस ९६५ वर्ष, उसके पुत्र कीनानने ९६२ वर्षके जीवनकालमें सुन्दर आवास, कोट, गढ़ आदि बनवाए। कीनानका पुत्र महलाइल, उसका पुत्र यजद हुआ। यजदका पुत्र इदरीस पैगंबर हुआ जो ३६५ वर्ष पृथ्वी पर रहा। उसका पुत्र मसतूस हुआ जिसने धर्म छोड़ दिया। उसका नंदन नामक हुआ। फिर नूह नबी हुआ जो १५० वर्ष जीवित रहा और जिसने संसारमें धर्मका पथ प्रकट किया। नूहके तीन पुत्र थे साम, हाम और यासफ। सामके अरबी, रूमी, ईराक, खुरासान इत्यादि हुए। चौहान, पठान आदि सामके वंशज हैं। हामके उजबक, हिंदी, बर्बरी, हबसी, कुबती हुए। और यासफके फिरंगी, रूसी, यूनानी, तुर्क और चीनी हुए।

सामका पुत्र इमन, उसका पुत्र उज और उसका पुत्र समूद हुआ। समूदका पुत्र राजा आद हुआ, उसका अनाद, फिर कुनाद, मुनाद, मेर, मंदिर, कैलास, समुद्र, फैम, बासिग, राह, रावन,

धुंधुमार, मारीच, जमदग्नि, परशुराम, सूर, वच्छ, चाह और चाहुवान क्रमशः हुए। चक्रवर्ती चाहुवानकी आन चारों दिशाओंमें है, उनके साँभरका नमक सब लोग खाते हैं। उसी चौहानके कल्पवृक्ष रूपी वंशमेंकी निम्नोक्त शाखाएं हैं—क्यामखानी, देवड़े, सोसोदिये, भदौरिये, चित्तोरिये, बाघौर, मलखीची, निरबान, चाहिल, मोहिल, माहौ, बूगट, बलिसे, जौर, सोनगरे, गिलखौर, मांदलेचे, गुहिलौत, उमट, साचोरे, गोधे, राकसिये, हाले, काले, दाहिमे, गूंदल, बालौत, हाडे, छोकर, घंघेरे, खैल, बारौरिये, धुकारने, चीबे, गोवलवाल, हुलतावर, डलोहोर आदि। पंडसूर, आसोप, पीपारे, गौतम, दागी, मरिल आदि सबका मूल चौहान है।

अब चौहान वंशके छत्रपति राजाओंका विवरण लिखते हैं—

दिल्लीमें मानिकदे चौहानने २ वर्ष ६ मास १७ दिन राज्य किया, रावलदेने ९ वर्ष ७ दिन, देवसिंहने ६ वर्ष ३ मास; स्योंदेवने १० वर्ष, १ मास २२ दिन; बलदेवने ५ वर्ष ११ दिन, पृथ्वीराजने २२ वर्ष ११ दिन तक दिल्लीका शासन किया। इसने बहुत युद्ध किए, काबुलसे दूब मँगा कर घोड़ोंको चराया। चौहान वंश सबमें सिरमौर है जिसमें बीसल, आना, हमीर जैसे वीर राजा हुए।

चहुवानके पुत्र मुनि, अरिमुनि, मनिक और जैपाल थे जिनमें एक योगी हुआ बाकी राजा हुए। मानिकके कुलमें सोमेश्वरका पुत्र पृथ्वीराज हुआ, आठ चौहान अरि मुनिके वंशज हैं। चहुवानके बाद मुनि हुआ उसने कूचौरेमें राज्य किया। फिर भोपालराय, कहकलंग, घंघराय हुआ, जिसने घांघू गाँव बसाया।

एक बार घंघराय शिकार खेलने गया। उसके हरिनका पीछा करते हुए बहुत दूर चले जाने पर सेवक लोग व्याकुल हो कर उसे खोजने लगे। इधर राजा मृगके पीछे लोहगिरि तक पहुँचा। यहां आते ही मृग अदृश्य हो गया। राजाने चिंतातुर हो कर सजल नेत्रोंसे एक वृक्षकी छायामें विश्राम लिया। निकट ही एक जल-कुंड था जिसमें स्नान करनेके लिए चार महान सुंदरी अप्सराएं आईं। वस्त्र उतार कर उन्होंने कुंडमें प्रवेश किया। राजाने कौतूहलसे उनके वस्त्रोंको उठाकर अपने कब्जेमें कर लिया। अप्सराओंके माँगने पर राजाने कहा चारोंमेंसे यदि एक मेरे साथ शादी करे तो वस्त्र दे सकता हूँ। अप्सराओंने बहुत कुछ समझाया, पर न मानने पर आखिर एक जो सबसे छोटी थी, उसे राजाको देनेका वचन दिया। तब राजाने वस्त्र दिये और वे सुसज्जित हो कर बाहर आईं। राजाने एक अप्सराके साथ विवाह किया अर्थात् हरिणका पीछा करते हुए हरियाणीकी प्राप्ति की।

अप्सराके गर्भसे तीन पुत्र हुए—कन्ह, चंद और इंद। चंदने चंदवार, इंदने इंदौर बसाया। कन्हरदेव पिताका राज्याधिकारी हुआ। उसके चार पुत्र थे अमरा, अजरा, सिधरा और बजरा। अजरासे चाहिल, बजरासे मोहिल, अमराके वंशज चौहान हुए। अमराका पुत्र जेवर राज्याधिकारी हुआ। उसके गूगा, बैरसी, सेस और बरह, यह चार पुत्र थे। गूगाके नागिन, बरहके भोयर और

भरह और बैरसीके उदैराज, उसके जसराज फिर कैसोराइ और उसके पुत्र विजयराज और हरराज हुए। हरराजके केसो और नंद हुए, उसके पृथ्वीराज, फिर लालचंद, अजयचंद, गोपाल, जैतसी, पुनपाल क्रमशः हुए। जैतसीके मूलराज, असरथ, दौंका, साँगा, रातू, पातू, महिपाल पुत्र थे। पुण्यपालके रूप, फिर रावन और उसका पुत्र तिहुँपाल हुआ। उसका पुत्र मोटेराय हुआ, जो ददरेवेंमें राज्य करता था। मोटेरायके पुत्र करमचंदको बादशाहने तुर्क बना कर "क्यामखां" नाम रक्खा। मोटेरायके चार पुत्रोंके नाम – क्यामखां, जैनदी, सदरदी और जगमाल थे। इनमें चौथा, जगमाल[1] हिंदू रहा। दीवान क्यामखांके पाँच पुत्र ताजखां, महमदखां, कुतुबखां, इख्तियारखां और मोमनखां थे।

अब क्यामखां (करमचन्द) तुर्क कैसे हुआ इसका विवरण लिखते हैं —

एक बार कुंवर करमचंद शिकार खेलता हुआ थक कर एक वृक्षके नीचे विश्राम करने लगा और उसे नींद आ गई। दिल्लीपति बादशाह पेरोसाह (फिरोजशाह) हिसारसे शिकार खेलता हुआ इधर आ पहुँचा, कुँवरको सोते देख कर बड़ा हर्ष और कौतूहल हुआ, क्योंकि सब वृक्षोंकी छाया ढल जाने पर भी जिस वृक्षके नीचे करमचंद सोया था, छाया नहीं ढली थी। बादशाहने सैयद नासिरसे पूछा। उसने कहा कि कोई महापुरुष होगा, जगावें। हिंदू देख कर विस्मय हुआ और उसे तुर्क बनानेकी ठानी। बादशाहने उसे जगा कर परिचय पूछा और प्यारसे गले लगा कर बहुत सम्मानित किया। बादशाहने उसका नाम क्यामखां रक्खा और अपने साथ हिसार ले गया। उसे पढ़ानेके लिए सैयद नासिरको सौंप दिया।

इधर करमचन्दके लौटने पर ददरेमें हाहाकार मच गया। सैयदके द्वारा खबर पा कर मोटेराय हिसार गया। बादशाहने बड़ा सम्मान किया और कहा कि इसके तुर्क होनेकी चिन्ता न करो। मैं इसे अपने पुत्रकी तरह रक्खूंगा; इसे पाँच हजारी पदवी मिलेगी। इस प्रकार समझा-बुझा कर सिरोपाव दे कर मोटेरायको बिदा कर बादशाह दिल्ली गया।

क्यामखां सैयदके पास पढ़ने लगा। मीरांके १२ पुत्रोंके साथ खेल-कूदमें उसके दिन बीतते थे, भोलेपनसे आपसमें लड़ते-झगड़ते भी थे। एक बार हाँसीसे कुतब नूरदी, नूरजहान आए। क्यामखांको उदास देख कर उसे राजी किया और नींबू व गिंदोड़े दिए। उसने पहले नींबू और फिर गिंदोड़े लिए तो पीरने कहा कि इनके गोत्रमें पहले खट्टे हो कर फिर मीठे होनेकी रीति होगी। जब क्यामखांकी पढ़ाई हो चुकी, तो सैयदने कहा अब नमाज पढ़ो, सुन्नत करो, और दीनमें आओ। क्यामखांने कहा और तो ठीक है, शादी कैसे होगी, सैयदने कहा – बड़े-बड़े राजा महाराजाओंके डोले आवेंगे, दिल्लीपति बहलोल अपनी पुत्री देगा। क्यामखां मुसलमान हो गया, मीर उसे

---

[1] फतहपुर परिचयमें जेउद्दीन व जबरुद्दीन नाम लिखा है। इनके वंशज भी क्यामखांनी कहलाते हैं। क्यामखांके मुसलमान होनेका समय इस ग्रन्थमें सं. १४४० लिखा है।

दिल्ली ले गया। मीरको बादशाहने सम्मान दे कर मनसब बढ़ाया। मीरांके साथ बादशाहका बहुत प्रेम था, जब वह बीमार हुआ तो बादशाह मिलने आया। मीरांने कहा कि मेरे पुत्रोंमें कोई सपूत नहीं है, इस क्यामखांको मनसब देना, यह तुम्हारी सेवा करेगा। बादशाह जब चला गया तो मीरांने अपने पुत्रोंको बुला कर क्यामखांकी आज्ञामें रहनेकी व क्यामखांको इन्हें प्यारसे रखनेकी शिक्षा दे कर परलोक गमन किया।

बादशाहने क्यामखांको मनसब, सरपाव, और बावनी दे कर उमराव किया। एक बार बादशाह क्यामखांको दिल्लीका फौजदार बना कर स्वयं ठटा विजय करनेके लिए गया। मुगलोंने बादशाहकी अनुपस्थितिका लाभ उठा कर दिल्ली पर चढ़ाई कर दी। चौहान क्यामखांने मुगलोंसे इस प्रकार युद्ध किया कि लड़े सो मरे और बचे सो भाग गए। लूटमें जो बहुत-सा माल-खजाना हाथ लगा, क्यामखांने उसे बादशाहके सुपुर्द कर दिया। बादशाहने उसे सरपाव दे कर सम्मानित किया और मनसब बढ़ा कर खानजहां नाम रक्खा। पेरोसाह (फिरोजशाह) बादशाहने और उसके पीछे उसके पुत्र महमूदने फिर नसीरखांने बादशाह हो कर क्यामखांका बहुत सम्मान किया। जब बादशाह नसीरखां बीमार हुआ तो उसके पास मलूखां नामक गुलाम (जिसे बादशाह पेरोसाहने पाल-पोस कर बड़ा किया था) प्रधान पद पा कर बादशाहके पास रहता था। लोगोंने यही निश्चय किया कि इसीने तख्तके लोभसे बादशाहको मारा है।

बादशाह नसीरखांके कोई पुत्र नहीं था, खुशामदी कामदारोंने मलूखांको बादशाह बन बैठनेकी राय दी। जब क्यामखांने सुना तो कहा कि जो नौकर है वह बादशाह कैसे होगा? गुलामको बादशाह बनानेमें शोभा नहीं है। प्रधानने गढ़की चाबियां ला कर दीवान क्यामखांके सम्मुख रक्खीं, और दिल्लीके तख्त पर बैठनेका आग्रह करते हुए कहा कि "आप ही दिल्लीका तख्त लीजिए, आपके पूर्वज दिल्लीपति थे, आपके लिए यह कुछ नई बात नहीं है!" क्यामखांने कहा–"मुझे दिल्लीपति बननेकी बिल्कुल इच्छा नहीं है, कौन भावी संततिके लिए आफत मोल ले?"

प्रधानने तब कहा –"यदि आप बादशाह नहीं होते तो फिर हम मलूखांको तख्त पर बिठाते हैं।" ऐसा कह कर मलूखांको बादशाह बना दिया। क्यामखांने वहांसे निकल कर अपने घरकी राह ली। जब मलूखांको यह ज्ञात हुआ तो वह ससैन्य क्यामखांको मारनेके लिए चल पड़ा। २० कोसके फासलेमें जब क्यामखांको मालूम हुआ तो वह मलूखांसे युद्ध करनेके लिए पीछे लौट आया और दोनोंमें परस्पर घमासान युद्ध हुआ। मलूखांके पैर उखड़ गए, वह दिल्लीमें आ कर छिप गया। क्यामखांने भागते हुएका पीछा किया परन्तु हाथी, घोड़े, द्रव्य आदि जो लूटमें हाथ लगे ले कर हिसारमें आ बिराजा। देश-देशसे पेशकश आने लगी। कमधज, कछवाहे, बैरिया, भट्टी, तँवर, गोरी, आहू, तावनी, सरोवे, नारू, खोखर, चंदेले, हुसैन अकलीम सा, साह महमद, ममरेजखां, इदरिस, मौजदी, मुगल, आदि सब सेवा करने आए। बूनपुर, रिणी, भटनेर, भादरा, गराभौ, कोठी,

बजवारा, कालपी, इटावा, उज्जैन, धार आदि सब क्यामखांके अधीन हो गए। मलूखां और क्यामखांका फिर कभी मिलाप न हुआ।

उस समय काबुलमें बादशाह तैमूर राज्य करता था जिसने आठों दिशाओंमें अपनी धाक जमा ली थी और जिसने रूम, ईराक और खुरासान आदि जीत लिए थे। हिन्दुस्तान लेनेके लिए वह चढ़ आया। मलूखां तैमूरसे जा भिड़ा, परन्तु तैमूर लंग जैसे जबरदस्त शक्तिशालीके सामने वह क्षण भर भी न ठहर सका। दिल्लीको तैमूरने खूब लूटा और तख्त पर आ बैठा। कुछ दिन रह कर खिदरखांको पचास हजार पठानोंके साथ दिल्ली छोड़ कर वह स्वयं काबुल लौट गया। जब मलूखांने तैमूरलंगके जानेकी बात सुनी तो उसने दलबल-सहित आ कर दिल्लीको घेर लिया। खिदरखांके साथ युद्धमें मलूखां मारा गया और तैमूरके दलकी जीत हुई।

मलूखांकी ओरसे निश्चिन्त होकर खिदरखांने सब भोमियों, जमींनदारोंको वशमें कर लिया और क्यामखां चौहान पर फरमान दे कर मौजदीनको भेजा। मौजदीन लाहौरका शक्तिशाली फौजदार था। उसने क्यामखांको फरमान दे कर बादशाह खिदरखांकी सेवा करनेके लिए बहुत समझाया, किन्तु वह अपने निश्चय पर अटल रहा और युद्ध करनेके लिए तैयार हो गया। दोनों ओरसे घमासान युद्ध हुआ। अगवान मौजदीन और क्यामखां चौहान भिड़ पड़े। मौजदीनकी फेंकी हुई बरछीसे बच कर क्यामखांने बाणके द्वारा उसका काम तमाम कर दिया। मौजदीनके मर जाने पर खिदरखांकी सेना तितर-बितर हो गई।

अपनी हारसे खिदरखां बहुत रुष्ट हुआ। क्यामखांने भी दिल्लीका शासक बदल डालनेका निश्चय किया और अपने पूर्व-परिचित बोखरीवाल लकब बोल अन्य खिदरखांको पत्र लिखा कि—"मैं तुम्हें दिल्लीका राज्य देता हूं, यदि इच्छा हो तो आओ।" उसने पत्र पाते ही तुरन्त दलबल-सहित तैयार हो कर क्यामखांको पत्रोत्तरमें अपनी तैयारीका समाचार दे कर उसे भी तैयार होनेको लिखा। क्यामखां सेना सहित मुलतानमें खिदरखांसे जा मिला और पहले नागौरमें राठौड़ोंसे युद्ध कर फिर दिल्ली लेनेकी ठानी। नागौरमें उस समय राव चूंडा था; उसकी मृत्यु हुई और राठौर सेनाकी पराजय हुई।

क्यामखां और खिदरखां दोनों नागौरको वशमें कर पठान खिदरखांको जीतनेके लिए दिल्ली चले। पठान भी अपनी सेना ले कर लड़ने आया परन्तु क्यामखांके साथ युद्ध करता हुआ हार कर भाग गया। क्यामखांने अपने मित्र खिदरखांको दिल्लीका सुलतान बनाया और दोनों सुख-पूर्वक रहने लगे। खिदरखांने सोचा कि क्यामखां सबल है; इसको इच्छानुकूल शासन होगा; अतः इसे मार डालना ही श्रेष्ठ है। इन कुत्सित विचारोंसे उसके उपकारको भूल कर एक दिन बादशाह खिदरखांने क्यामखांको धक्का दे कर नदीमें गिरा दिया। क्यामखां नदीमेंसे निकल आया और खिदरखांकी बदनीतीको जानते हुए भी बादशाहसे लड़ना धर्म-विरुद्ध समझ कर संतोष किया। अपने जीवनमें क्यामखांने बड़े-बड़े युद्ध किए थे। ९९ वर्षकी उम्रमें उसके शरीरका अन्त हुआ।

क्यामखांके पाँच पुत्र थे ताजखां, अहमदखां, कुतबखां, इख्तयारखां, और मौनखां, ये पाँचों बड़े वीर और मनस्वी थे। खिदरखांके बार-बार बुलाने पर भी ये सलाम करने नहीं गए। हिसार में सुखसे बैठे रहे। दीवान ताजखांके छः पुत्र थे – फतहखां, रुका, फखरदी, मोजन, इकलीमखां, और पहाड़ा। कृतघ्नी बादशाह खिदरखांके निःसंतान मरने पर मुबारक, महमदफरीद, अलावदी और मुबारक बादशाहका पुत्र अमानतखां क्रमशः बादशाह हुए। फिर बहलोल लोदीने अपने भुजबलसे दिल्लीका तख्त प्राप्त किया। उस समय ढोसी पर अखनका राज्य था।

एक बार बादशाह बहलोलने ईराकसे बहुतसे घोड़े मँगाए। मार्गमें अखनने उसमेंसे नौ चुन कर रख लिए। बादशाहने कुपित हो कर घोड़े वापिस न देने पर चढ़ाई करनेकी धमकी दी। उसने उत्तरमें लिखा कि मेरे लाख घोड़े हैं, परन्तु तुमसे युद्ध करनेकी इच्छासे ही मैंने घोड़े रक्खे हैं। तुम निस्संकोच आ जाओ मैं ढोसीमें पर्वतकी तरह स्थिर बैठा हूँ। बादशाह इस उत्तरसे रुष्ट तो अवश्य हुआ परन्तु वह उसका कुछ भी न बिगाड़ सका। अखनने मेवातियोंको बहुत तंग किया, पहाड़के पास उसने अखन-कोट बसाया। आस-पासके सब भोमिया*उसे दंड देते थे। आंबेर वाले वार्षिक १२ लाख और अमरसर वाले ८ लाख भरते थे। कुतबखां जो क्यामखांका चौथा पुत्र था, बारुवै जा बसा और पाँचवां[1] पुत्र मौनखां बगरमें बसने लगा। आस-पासके भोमियोंसे वह कर उगाहता था, और कछवाहोंमें उस चौहानकी धाक जमी हुई थी।

क्यामखांके दोनों बड़े पुत्र हिसारमें प्रीति-पूर्वक रहते थे। नागौरके फिरोजखांके बुलाने पर दोनों भ्राता वहां गए। खांने बड़े आदरके साथ इन्हें रखा और कहा कि मैं भी दिल्लीपतिको सलाम नहीं करता। अच्छा हुआ जो एकसे तीन हुए। एक बार चित्तोड़के स्वामी राणा मोकल पर आक्रमण करनेका विचार कर वे दलबल-सहित चले; राणा भी लड़नेके लिए मोरचे पर आ पहुँचा। राणा मोकलसी और फिरोजखांमें परस्पर युद्ध होने लगा। ताजखां और महमदखां खड़े-खड़े देखते रहे। राणा मोकलने खांके पैर उखाड़ दिए। वह नागौरकी ओर मुंह करके भागा। राणाने चार कोस तक उसका पीछा किया और नेजा-निसान छीन कर चित्तोड़की राह ली। दोनों चौहान भ्राता ताजखां, मुहम्मदखां अवसर देख कर राणासे जा भिड़े, और युद्धमें राणाको परास्त कर नागौरके नेजे निसान वापिस ले लिए। उन्होंने भागते हुए राणाके हाथी-घोड़े द्रव्यादि लूट लिए और नागौर ले आए।

जिन नेजे-निसानोंको हार कर फिरोजखां दे आया था, उन्हें चौहान-बंधुओंके वापस लाने पर खां उन्हें लज्जाके मारे मुँह न दिखा सका। स्वामीके भागने पर भी सेवक लड़े अर्थात् जब

* जमीनदार।

१. फतहपुर परिचयमें ७ स्त्रियोंसे ६ पुत्र होनेका बतलाते हुए मुहम्मदखां नाम अधिक दिया है। क्यामखांके स्वर्गवासका समय इस ग्रन्थमें सं० १४७५ लिखा है। मुहम्मदखांका नाम आगे रासामें भी आता है।

उखड़ जाने पर भी वृक्ष स्थिर रहा, यह एक विचित्र बात हुई। फिरोजखांने लज्जासे ऐसा रुख बदला कि वह इनसे हँस-बोल कर बात भी न करता था। ताजखां और मुहम्मदखांने अपने घर जानेका इरादा किया और दमामे बजाए। खांने रुष्ट हो कर सेवकोंको आज्ञा दी कि क्यामखानी चौहान बंधुओंको मत जाने दो। स्वयं दलबल-सहित युद्धके लिए तैयार हुआ। दोनों भ्राता बड़ी वीरता-पूर्वक लड़े। ताजखां युद्ध करता हुआ घायल हो कर गिर पड़ा। महमदखांको युद्धसे ही कब फुरसत थी कि भाईकी खबर लेते। राठौड़ लोग घायलोंको उठाते हुए आए। उन्होंने ताजखांको उठा कर देख-भाल की और घाव अच्छा होने पर उसे हिसार भेज दिया। ताजखांने युद्ध भी किया और जीवित भी रह गया। इससे इसका बड़ा सुयश हुआ। फिरोजखां तो इससे बड़ा भय खाता था। इसने खेतड़ी, खरकश, चबौहाना, पाटनको जीता। पाटन और रेवासे मिल कर उसने आंबेरको वशमें किया। कछवाहे, निरबान, तंवर और पंवार आदिसे पेशकश ली। ताजखां हिसारमें और महमदखां हाँसीमें रहा। ताजखांकी[1] मृत्युके बाद बड़ा पुत्र फतहखां हिसारमें पिताका उत्तराधिकारी हुआ।

फतहखांके दस पुत्र थे —जलालखां; हैबतसाह, महमद साह, असदखां, दरिया साह, साह मनसूर, सेख सलह; बला, बंखामसूर और हेसम।

फतहखां बड़ा प्रबल और वीर था। उसने एक ही मुहूर्त्तमें छः कोटकी नींव डाली। सं० १५०८ चैत्र शुक्ला ५ के दिन अपने नामसे उसने फतहपुर शहर बसाया[2]। उस दिन हिजरी सन् ८५७ सफ़र महीनेकी २० तारीख थी। आस-पासके भोमिये पल्हू, सहेवा भादरा, भारंग, बाहले आदिके स्वामी जुहार करने आए। जब कोट तैयार हो रहा था वह रनाउमें रहा और कोट तैयार होने पर फतहपुर आ गया। एक बार बादशाह बहलोल लोदी रणथंभोर लेनेके लिए चढ़ कर आ रहा था। जब फतहखांने सुना तो वह भी सदल-बल बादशाहसे जा मिला। बादशाहने उसका बड़ा सम्मान किया और फतहखांके आगमनको अपनी फतहका चिन्ह समझा। उधर रणथंभौरकी सहायताके लिए मांडूका सुलतान हिसामदी आ पहुँचा। परन्तु बादशाहसे लड़नेमें असमर्थ हो कर फाटक बंद कर बैठा रहा। फतहखांने मांडूके सुलतानके साथ घमासान युद्ध किया और उसका सर काट कर बादशाहके पास भेजा। फतहखांका बड़ा नाम हुआ और बादशाहने उसे मनसब दे कर सम्मानित किया। बादशाहसे जय-पत्र ले कर फतहखां स्वदेश लौटा और सुख-पूर्वक रहने लगा।

नारनौलसे अखनने कहलाया कि मेवाती लोग मिल कर बग़ावत करने पर उद्यत हैं। तुम स्वयं आओ, या सेना भेजो। फतहख़ांने अपनी सेना भेजी जिसने मेवातियोंको डोसीकी

---

१. फतहपुर परिचयानुसार सं०१४७७ से १५०३ तक २६ वर्ष राज्य किया।

२. फतहपुर परिचयमें मुहम्मदखांके झूम्पा जाटकी सलाहसे बसानेका उल्लेख है पर मूलतः यह शहर १४वीं सदीके पहलेका बसा है।

तरफ भगा दिया। इधर इख्तारख़ांने सामनेसे आक्रमण किया। दोनों ओरसे मार पड़नेसे मेवाती लोग निर्बल हो कर हार गए। विजयी फतहखान लौट कर फतहेपुर आया।

फतहखांने अपनी वीरतासे बड़ी प्रसिद्धि पाई। कांधल और रिणमल, राणा सांगा, अजा सांखला आदिके साथ रणक्षेत्रमें उसकी सेनाने शत्रु-दलका संहार कर विजय प्राप्तकी थी। फतहखांके यहां वीर बहुगुन तो ऐसा था कि सिर कट जाने पर भी युद्ध करता रहा। (इसकी कब्र व कुआ अब तक मौजूद है)।

मुसकीखां नामक किर्रानी पठान फतहखां चौहानसे युद्ध करनेके लिए आया और सरसेके पास दोनोंकी मुठभेड़ हुई। फतहखांने मुसकीखां किर्रानीको मार कर विजय प्राप्त की। फिर आंबेर पर चढ़ाई करके वहांके भोमियोंको भगा कर आंबेरको लूट लिया। भिवानीको घेर कर आढ़ू आवलोंसे युद्ध किया और उन्हें हराया। भिवानीको लूट कर बहुतोंको बंदी बना कर लाया।

राव जोधाने सोचा कि यदि फतहखांसे संबन्ध हो जाय तो उधरका खटका मिट जाय, इस लिए उसने नारियल भेजा। कांधलने बहुगुनको मारा था, इस वैरसे फतहखांने नारियल लेना अस्वीकार कर दिया। महमदखांका बेटा समसखां उस समय झूंझणूमें था 'उसके पास भी नारियल भेजा गया' उसने कहा, वहां ब्याहने कौन जाय? यहीं डोला भेज दो। जोधाने डोला भेजा। मीरांजीने जो भविष्यवाणी की थी वह सफल हुई।

बादशाह बहलोलखां लोदीने फतहखांको बुला कर अपने पास रक्खा। परस्पर बड़ी प्रीति थी। एक दिन बादशाहने कहा कि अपने-आपसमें अदल-बदलका विवाह संबंध करो जिससे पारस्परिक प्रीति बढ़े। फतहखांने कहा अब मेरे तो कोई पुत्री अविवाहित नहीं है। बादशाहने इसे बुरा माना। तब फतहखां रुष्ट हो कर फतहपुर आ गया और फिर दिल्ली नहीं गया। बादशाहने समसखां चौहानके पास अदल-बदल संबंधके लिए कहलाया। उसने प्रसन्न हो कर शाहजादी अपने पुत्रको ब्याही और अपनी बहिन बादशाहको दी। फतहखां आजीवन दिल्लीपतिको सलाम करने न गया। फतहखांकी[1] मृत्युके बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र जलालखां फतहपुरका स्वामी हुआ।

दीवान जलालखांके दस पुत्र थे — दौलतखां, अहमदखां, नूरखां, फरीदखां, निजामखने पहाड़खां, दाऊदखां, लाडखां, अखन, और महमदशाह।

जलालखांने[2] पिताके बनाए हुए कोटको बढ़ाया और जबरदस्त पोल (दरवाजा) बनाई। जलालखां बड़ा शूर-वीर था। वह भी पिताकी तरह दिल्लीपतिके कदमोंमें सलाम करने नहीं जाता था। नागौरके खानका माल लूट-लूटकर जलालखां उसे तंग करने लगा। उसने रुष्ट हो कर जलालखांके

---

१. फतहपुर परिचयमें इनका राज्य सं० १५०५ से १३५१ लिखा है। मृत्यु १५३१में हुई थी।
२. फतहपुर परिचयमें इनका राज्य सं० १५३१ से १५४६ तक लिखा है।

ऊपर आक्रमण करनेके लिये अगणित सैन्य एकत्र किया और बीड़ा फेरा। मुगल चौपानखांने बीड़ा उठाया और जगोर कटरावलके पास दलबल-साहित आ पहुँचा। जलालखां भी तैयार हो कर युद्धमें उतरा। उसने शत्रुके छक्के छुड़ा दिए। चौपानखांको पकड़ कर उसके नितंब पर दाग लगाया और उसके हाथी, घोड़े, इत्यादि लूट कर छोड़ दिया। फिर जलालखांने छोपौरी पर चढ़ाई की और विजय प्राप्त कर आंबेरको जा घेरा। वहांके भौमिए बड़ी वीरतासे लड़े। मिल कर उन्होंने जलालखांके हाथीको आ घेरा। साथी लोग सब लूटमें लगे थे, तो भी अकेले दीवान जलालखांने बाणोंसे शत्रुदलको भगा दिया।

चौहान समसखांके मर जाने पर उसका पुत्र और बादशाह बहलोल लोदीका जमाई, फतहखां उत्तराधिकारी हुआ। अपने अभिमानमें मस्त हो कर अपने भाई मुबारकशाह और बिमाताको बँटवारा न दे कर झूंझणूकी समस्त आय वह स्वयं खाने लगा। मुबारकसाहने अपने नाना राव जोधाके पास जा कर शिकायत की। राव जोधाने कहा कि तुम्हारे मामा बीका और बीदा तुम्हारे निकट हैं, उनसे कहो। मुबारकशाह मामाके पास आया, किंतु वहांसे निराश हो कर लौटा, और फतहपुरमें जलालखांके पास आया। मुबारकशाहको उसने आश्वासन देते हुए कहा कि मुझे बादशाहका कोई खौफ नहीं, मेरे पिता भी उससे नहीं डरे तो डर कर क्यों कलंक लूं? जलालखांने ससैन्य झूंझणू पर चढ़ाई की। फतहखांकी सेना भाग गई, तब उसने मुबारकशाहको झूंझणूका राज्य दिया। फतहखां मर गया। महमदखांको राज्य न मिला। मुबारकशाह ही राज्यका मालिक रहा।

जलालखां लोहागर जा कर रहने लगा। वहां पहाड़की ओट ग्रहण कर नागौरी खानको तंग किया करता था। इधर फतहपुरको सूना सुन कर उसके लिए बीदाका मन ललचाया और वह सदलबल नरहरमें दिलावरखांसे जा मिला। दस हजार रुपया और एक बेटी देनेकी बात कर पठानको भी ससैन्य फतहपुर ले आया। लोहागरमें जलालखांको खबर मिली तो उसने तुरंत अपने पुत्र दौलतखांको भेजा। उसने फतहपुरके गढ़में प्रवेश कर अपनी जय-पताका फहराई। बीदा और दिलावरखां व्याकुल हो कर लौट गए।

जलालखांके मरने पर उसका पुत्र दौलतखां उत्तराधिकारी हुआ। उसके तीन पुत्र थे — नाहरखां, होबनखां, और वाजिदखां। दीवान दौलतखां चौहान महान् तेजस्वी और जबरदस्त वीर था, उसकी ऐसी धाक जमी हुई थी कि शत्रु लोग भयसे मुँह छिपाते फिरते थे। वह अनीतिके लाख-करोड़को भी कौड़ीके समान गिनता था। किसीको अपनी अंगुल-मात्र भूमि भी नहीं देता और न किसीकी लेता था। सात सुलतान भी यदि उसके प्रतिस्पर्द्धी हों तो भी वह संग्राममें पीठ नहीं दिखाता था। उसमें वचनसिद्धिकी भी विशेषता थी।

राव बीका ढोसीसे अफसूल लौटा था, अतः लूणकरनने सदलबल तैयार हो कर पाटौधेमें डेरा किया, और पत्र दे कर प्रधानको दौलतखांके पास भेजा। पत्रमें लिखा था कि — दौलतखां, यदि

भला चाहते हो तो शीघ्र हमसे आ कर मिलो, या सहायता भेजो। दौलतखांने क्रुद्ध हो कर चिट्ठी पर पेशाब किया और दूतके अंचलमें रेती बाँध कर कहा कि तुम्हारा स्वामी यदि चढ़ कर न आया तो उसके सिर पर धूल है। प्रधानोंको धक्के दे कर उसने निकाल दिया। प्रधानोंके जाने पर लोगोंको चिंतातुर देख कर दौलतखांने भविष्यवाणी की कि लूणकरन जीवित नहीं बचेगा।

प्रधान अपमानित हो कर राव लूणकरनके पास गए। वृत्तांत सुन कर उसने क्रुद्ध हो कर कहा कि पहले ढोसी जीत कर फिर आते समय दौलतखांकी खबर लेंगे। राव अपार सैन्य शक्तिके साथ ढोसी गए परंतु वहां तुरकमानकी मददसे पठान लोग खूब लड़े, और लूणकरनको मार कर उसके साथियोंको लूट लिया। दौलतखांका वचन सत्य हुआ।

एक बार काबुलसे दिल्ली देखनेके लिए बाबर कलंदरके वेषमें बाघको साथ ले कर चला। मार्गमें फतहपुर ठहर कर दीवान दौलतखांसे मिल कर बाघके लिए एक गाय मँगा देनेको कहा। दीवानने तुरंत गाय मँगाई और कहा कि मैं देखता हूँ कि बाघ कैसे गायको मारता है? जब बाघ गायके समक्ष आया तो दौलतखांने सिंहनाद कर बाघको फटकारा। वह उस गायको खानेको असमर्थ हो कर स्तंभितकी भाँति खड़ा रहा। सत्य सुभट पुरुषोंके वचनका सिंह भी उल्लंघन नहीं कर सकते। गजेंद्रका मद भी उनके सामने सूख जाता है। फिर बाबरने अलवरमें मेवाती हसनखांके कटकको और दिल्लीपति बादशाह सिकंदरशाहको विस्मित हो कर देखा।

जब बाबर हिंदुस्तान देख कर काबुल लौटा तो लोगोंने इधरकी बातें पूछीं। उसने कहा— सारे हिंदमें तीन आदमी देखे — सिकंदरशाह, हसनखां और दौलतखां। इस प्रकार बाबरने दीवान दौलतखांकी बड़ी प्रशंसा की।

एक बार दौलतखांने सुना कि गौर निरवाण व नागौरके गावोंको लूट कर जा रहे हैं उसने ससैन्य जा कर उन्हें घेर लिया और उन्हें हरा कर लूटका सारा माल छीन लिया। एक दिन दौलतखां शिकार खेलने चला। बाज, कुही, बहरी आदि बहुतसे उसके साथ थे। उसने बहरीको कुंजके लिए छोड़ा। वह आकाशमें ऊँची उड़ गई, फिर अदृश्य हो गई। दीवानजी उसको छोड़ कर चले आए। बहरी उड़ती-उड़ती हिसार जा पहुँची, वहां मीरने पकड़ कर सिकंदरको सौंपा। दौलतखां यह ज्ञात कर ससैन्य हिसार पहुँचा। हिसारका सिकदार मुहब्बतखां साराखानी पठान सेना-सहित लड़नेको आया। नासौमें दोनों सेनाएं मिलीं। दूरसे दीवान दौलतखांका मुंह उतर गया। मुहब्बतखां भय-भीत हो भागा। दौलतखांने विजयके नगाड़े बजाए।

दौलतखां अपने सिद्धांतोंका पक्का था। स्वगोत्रीय पर घाव न करना, परमात्माको एक मानना, न्याय-मार्ग पर निश्चल रहना चाहे लाखों विरोधी हों, न्यायके समय निष्पक्ष रहना, आदि उसके विचार मँजे हुए थे। बादशाह बहलोल लोदीके मरने पर सिकंदर उत्तराधिकारी हुआ, पर दौलतखां उसके दरबारमें भी न गया।

मुबारक साहके बड़े पुत्र कमालखांको झूंझणूका राज्य मिला और दूसरे पुत्र साहबखांको नौहाका। वह जब तक जिया भाईके अधीन रहा। कमालखांका पुत्र भीखनखां झूंझणूका स्वामी

हुआ और लाहबखांका पुत्र मुहब्बतखां उसे प्रतिदिन सलाम करता था। एक बार परस्पर चित्त-कालुष्य हो जानेसे मुहब्बतखां नौहा छोड़ कर दौलतखांके पास फतहपुर चला गया। उसने दौलत-खांके पौत्र फदनखांको पुत्री दी और उसकी सेवा करने लगा। मुहब्बतखांके निवेदन करने पर दौलत-खांने कहा--नौहा तुम्हारा है, तुम वहां जाकर रहो। तुम्हें कौन निकालने वाला है? यदि भीखनखां कुछ गड़बड़ करे तो मुझे खबर देना।

मुहब्बतखां नौहा जा कर रहने लगा। भीखनखां तत्काल सेना ले कर चढ़ आया। मुहब्बतखांके फतहपुर कहलाने पर दौलतखांका बड़ा पुत्र नाहरखां भी सहायतार्थ आ पहुँचा। आभूसरके ताल पर घमासान युद्ध होने लगा! नाहरखांको देखते ही भीखनखां युद्ध क्षेत्र छोड़ कर भाग गया। नाहरखां जीत कर घर आया। पिताने प्यारसे गले लगा लिया। दौलतखांके मरने पर उसका पुत्र नाहरखां फ़तहपुरकी राजगद्दी पर बैठा।

दीवान नाहरखांके[1] तीन पुत्र थे — फदनखां,[2] बहादुरखां, और दिलावरखां। नाहरखां बड़ा वीर और विलास प्रिय भी था। घरमें धन बहुत था, उसने बहुत-सी पातरियां रख ली और नाच-गानका अखाड़ा रात-दिन जमा रहता था। आस-पासके भोमिए जमींदार भय खाते थे। बीकानेरके राव लूणकरनके मरने पर पूर्व निश्चयानुसार वजीरोंने प्रेम-संबंध स्थापित करनेके लिए राज-कन्या दी। दिल्लीपति सिकंदरके मरने पर इब्राहीम बादशाह हुआ। उसे मार कर बाबर और फिर उसका पुत्र हुमायूं बादशाह हुआ। नाहरखांके समय शेरशाह दिल्लीका बादशाह था। वह नाहर-खांको बहुत मानता था और उसे मामा कह कर पुकारता था। उसने हुक्म दिया कि फ़तहपुरकी पेशकश घर बैठे मज़ेसे खाओ।

नाहरखांने सं० १५९३ भाद्र सुदी ८ सोमवारके दिन फ़तहपुरमें एक सुंदर अद्वितीय महल बनवाया।

एक बार चित्तोड़के राणाने नागौरके खान पर चढ़ाईकी। पूर्वकी प्रीतिके कारण नागौरीके आमंत्रणसे नाहरखां सहायतार्थ चला। राठौड़ व कछवाहे उसे दिल्लीपतिसे भी अधिक मानते थे राव गांगा, जैतसी, सूजा और पृथ्वीराज आदि सब ससैन्य आ मिले। जब नाहरखांने सुना कि नागौरसे १२ कोस पर राणा ठहरा हुआ है और खान नागौरसे निकल कर लड़नेको नहीं जाता है, तो वह नागौरमें न जा कर तीन कोस और आगे गया। नागौरीखांके बुलाने पर नाहरखांने कहा, "राणा निकट ठहरा हुआ है। तुम कोटकी ओटमें क्यों छिपे हो? मैं अब आगे निकल आया, लौट नहीं सकता। तुम्हीं आ कर मिलो।" नागौरीखां भी नाहरखांकी धाक सुन कर राणा उलटे पैर चला। नाहरखां भी उसी मार्गसे सबके साथ पीछे-पीछे गया। राणाके पहाड़ोंमें प्रवेश करने पर

---

१. राज्यकाल सं० १५४६ से १५७०

२. राज्यकाल सं० १५७० से १६१२

सेना लौट चली और उसने सारे गाँवोंको लूट लिया। जगमाल पँवारने कहलाया कि राणाने मुझे अजमेर दिया था; उसके सब गाँव तुम लोगोंने लूट लिए। यदि सच्चे राजपूत हो तो प्रहर दो प्रहरके लिए ठहर जाओ। मैं आता हूं। यह सुन कर बीकानेर, सूजा अमरसर, और आंबेर वाले आंबेर चले गए। किन्तु नाहरखांने कहा—तुम बेधड़क आओ। यह कह कर नाहरखां मकरायोके तालमें प्रतीक्षा करने लगा। अजमेरका फ़ौजदार जगमाल पंवार राणाकी सेना ले कर आया। दोनोंमें परस्पर घमासान युद्ध होने लगा। अन्तमें पँवार भागा और चौहान नाहरखांकी जीत हुई।

नाहरखांके मरने पर उसका पुत्र फदनखां फ़तहपुरका स्वामी हुआ उसके तीन पुत्र थे–ताजखां, पिरोजखां, दरियाखां। दिल्लीमें जब पठान सलेमसाह बादशाह हुआ तो उसने फदनखांका बड़ा सत्कार किया। मुहब्बतखांका पुत्र खिदरखां फदनखांके पास खड़ा था। बादशाहने फदनखांकी बड़ी प्रशंसा की और कहा कि सब (क्यामखानी) भाइयोंमें सिरमौर है। हुमायूंने भी बादशाह हो कर फदनखांको अच्छा आदर-मान दिया।

दिल्लीपति अकबर भी फदनखांसे प्रेम रखता था। बीरबलके पूछने पर बादशाहने कहा कि और तो सब मेरी कृपासे बने हैं, इन्हें करतारने बड़ा बनाया है। राजपूतोंकी जातिमें ३॥ कुल हैं–प्रथम चौहान, द्वितीय तँवर और तीसरे पँवार, आधेमें शेष सब हैं। वाजित्रोंमें जैसे निसान बड़ा है वैसे ही गोत्रोंमें चौहान बड़ा है। फदनखांने बादशाह अकबरको अपनी बेटी दी; इससे पारस्परिक प्रेममें विशेष वृद्धि हुई। बादशाहको भोमियोंका (हिन्दू जमींदारोंका) विश्वास नहीं था। उसने कहा हिन्दू बदलते देर नहीं लगाते, अतः तुम इनकी जमानत दो तो मैं मनसब दूँ। फदनखांने सबकी जमानत दी और बादशाहने उन्हें मनसबदार कर दिया। फदनखांने राय सालको दरबारी बना कर मनसब दिलाया।

बीदावत लोग इधरके गाँवोंमें आ कर चोरी लूट कर जाते थे। यह दीवान फदनखांको बुरा लगा और उसने सेनाके साथ बीदावतोंके प्रदेशमें प्रवेश किया और छापर द्रोणपुरमें बीदावतोंको हराकर चोरीको शपथ दिला दी। इसके बाद फदनखांने छापौरो और पूंलपर हमला किया; निरबानोंको हरा कर उनके गांवोंको जला दिया। उसने बहादुरखांकी सहायता करके झुंझणू दिलाया।

फदनखांके पश्चात् उसका बड़ा पुत्र ताजखां[1] फ़तहपुरका स्वामी हुआ। उसके ८ पुत्र थे–महमदखां,[2] महमूदखां, शेरखां जमालखां जलालखां, मुजफ़्फरखां, हैबतखां और हबीबखां। ताजखां रूपमें अत्यंत सुंदर था, देश-विदेशमें उसका सौंदर्य प्रसिद्ध था। उजियारें (?) के दौलतखां पठानने प्रशंसा सुन कर दीवान ताजखांका चित्र बनवा कर मंगाया और उसे देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

---

१. राज्यकाल सं० १६०२ से १६०६।

२. राज्यकाल सं० १६०९ से १६२७।

ताजखां अलवरसे सदलबल चढ़ा। उसने सारां और खरकरीको नष्ट किया। ललान-गढ़को लूटा। मलिक ताजके यहां लूटमार कर रेवाड़ीका थाना नष्ट कर दिया। दीवान ताजखांके बड़े पुत्र मुहम्मदखांके तीन पुत्र थे – अलफखां, इब्राहीमखां और सरमस्तखां। मुहम्मदखांने क्योर और वैराटको विजय किया। मांडनके पुत्र कूंपावत राठौर कुँभकरनको उसने रणक्षेत्रसे भगाया।

ताजखांकी विद्यमानतामें ही मुहम्मदखांकी मृत्यु हो गई। पुत्र वियोगसे पिताको अत्यंत दुःख हुआ परंतु रुदन करनेसे आंसूके सिवा क्या हाथ आ सकता था, अतः अपने पौत्र अलफखांके मस्तक पर हाथ रक्खा और उसे शाही दरबारमें ले गया। बादशाह जलालुद्दीनसे (अकबरसे) ताजखांने निवेदन किया कि मेरे घरमें यह बड़ा है, इसे आप सम्मान दें। बादशाहने अलफखांको बड़ा प्यार किया। जब तक ताजखां जीवित रहे, अलफखांको क्षण भरके लिए भी अपनेसे अलग नहीं किया। उसके मरने पर अलफखां उत्तराधिकारी हुआ। बादशाहने उसे टीका दे कर फ़तहपुरका स्वामी बनाया और उसे हाथी, घोड़ा सिरोपाव दिए। अलफखांने शाही फरमान ले कर फ़तहपुर भेजा; कछवाहे गोपालके पुत्र स्यामदासके न मानने पर सिकदार शेरखांने उसे निकाल दिया। दीवान अलफखांको फ़तहपुर मिला और वह नवाब कहलाने लगा। नवाब अलफखांके पांच पुत्र थे – दौलतखां,[1] न्यामतखां, सरीफखां, जरीफ और फकीरखां।

झूंझणूके स्वामी बहादुरखांके मरने पर उसका बड़ा पुत्र समसखां उत्तराधिकारी हुआ, किंतु दूसरे भाई उसे नहीं मानते थे और उसे सतत दुःख दिया करते थे। अलफखां उसे बादशाहके पास ले गया और बादशाहके द्वारा मनसबका सम्मान दिलाया। यही रीति चलती है कि फतेहपुर वाले जिसे बड़ा करें वही झूंझणूमें बड़ा होता है।

बादशाह अकबरने पहाड़में युद्ध करनेके लिए जगतसिंह और दीवान अलफखांको सेना सहित भेजा। धमेहरीमें जा कर यवन लोगोंको पराजित कर उनके गाँवोंको नष्ट किया। राजा तिलोकचन्द भयभीत हो कर शरणमें आ गया। दीवानजीने उसे बादशाहके कदमोंमें हाजिर किया।

सलीमने जब राणा पर चढ़ाई की तो उसने बादशाह अकबरसे कह कर अलफखांको भी साथमें ले लिया। मेवाड़में आ कर शाहजादेने विशाल सेनाको विभाजित कर सादड़ीका थाना अलफखांके जिम्मे लगाया। उसने राणा अमरसिंहके थाने पर आक्रमण कर दलको मार भगाया और लूटका बहुत-सा माल हाथमें किया। राणा बहुत रुष्ट हुआ, परन्तु वह भी सादड़ी आनेमें असमर्थ रहा। ऊंटालेमें समसखां था। उसने भी राणाको खूब छकाया। जब शाहजादेने सुना तो उसने अलफखां और समसखां दोनों चौहान वीरोंकी बड़ी प्रशंसा की।

---

१. राज्यकाल सं० १६२७ पर यह चिंतनीय है। पेढ़ीके अनुसार इनका जन्म १६२१ में हुआ था।

बादशाह अकबरके मरने पर शाहजादा सलीम जहाँगीरको उपाधि धारण कर राजगद्दीपर बैठा। उसने दीवान अलफखांका बड़ा सम्मान किया और उसके नाम फतहपुरका लाल मुहरका पट्टा कर दिया। राय मनोहरने अलफखांको मेवात देशमें भेजा। वहां मेव लोग इनकी बड़ी सेवा करते और भेटों द्वारा द्रव्यकी भी उन्हें अच्छी प्राप्ति हुई।

बीकानेरके राजा दलपतसिंहने अगणित सेना एकत्र कर बादशाहके विरुद्ध हो कर लूट-मार शुरू कर दी। वह सरसामें गया और ज्याबदीनको हटा कर उसने शाही खजाना लूट लिया। बादशाहको ज्ञात हुआ तो वह बड़ा क्रुद्ध हुआ और शेख कबीर व अलफखांको बीस उमरावोंके साथ विशाल सेना दे कर सरसा भेजा। दलपतसिंह वहांसे अन्यत्र चला गया। एक दिन पानीके लिए परस्पर युद्ध छिड़ गया। एक ओर २१ उमराव थे और दूसरी ओर अकेला अलफखां। घमासान युद्ध हुआ, बहुतसे सुभटोंके मारे जाने पर स्वयं शेख कबीरने बीच-बिचाव किया। उसने दीवान अलफखांकी बड़ी प्रशंसा की और उन्हें सम्मानित किया। युद्ध बन्द कर दोनों दल परस्पर मिल गए और दलपतिसिंहको जीतनेके लिए भाटू पर चढ़ाई की। वह बीकानेरके बहुतसे सरदारोंके साथ था। शाही सेनाके सामने दलपतिसिंहने लड़नेमें असमर्थ हो कर जलालखां द्वारा दीवान अलफखांसे कहलाया कि तुम मेरे बड़े भाई हो। शाही सेनाको रोको। हमारे पूर्वज लूणकरन, प्रतापसी, जोधा, मालदेव आदिकी प्रीतिका प्रतिपालन करो। अलफखांने तत्काल युद्ध बंद कर प्रेमपूर्वक बादशाहके पास भेज कर दलपतिसिंहको बचा लिया। दिल्लीपतिने शेख कबीरको बुला लिया, उसके स्थान पर मुबारक आया।

दीवान अलफखां और पठानने मिल कर भिवानी पर चढ़ाई की। वहां जाटू जावलोंने पैर थाम कर युद्ध किया। फिर गढ़ईमें जा कर गोली चलाने लगे। दीवानके दलने तुरन्त गढ़ईको तोड़ कर जाटुओंको हरा दिया और गाँवोंको लूट कर ख्याति प्राप्त की।

बादशाहने अलफखांको मेवात देश पर चढ़ाई करनेकी आज्ञा दी और हाथी, घोड़ा, सिरोपाव दे कर मनसब बढ़ाया। दीवानजी ससैन्य मेवात देशकी ओर चले। सर्व-प्रथम सारा विजय कर अलफखांने कारहंडेमें डेरे किये। वहां भी मेवातियोंको मार कर घनहटा गए। मेव लोगोंने खूब वीरतासे लड़ कर प्राण दिए। इस विजयसे सारे पहाड़में अलफखांकी धाक जम गई।

बादशाहने शाहज़ादे परवेज़के साथ दीवान अलफखांको भी दक्षिण विजय करनेके निमित्त भेजा। बुरहानपुर पहुँचने पर युद्धके लिए सब थाने बाँटे गये। अलफखांको मलकापुर मिला। शाहज़ादा एदलाबाद ठहरा और सेनाको उसने आगे भेजा। खानखांना, लोदी खानजहान, अब्दुल्ला जख्मी, कछवाहा मानसिंह, राठोर रायसिंह आदिका अगणित दल इस सेनामें था। अब्दुल्लाने खूब वीरतासे लड़ाई की पर आख़िरमें उसके पैर उखड़ गए। वह बुरहानपुर लौट चला, लिखी अलफखांके मलकापुरके सिवाय सब थाने उखड़ गए। सब सरदारोंने दीवानको चिट्ठी लिखी कि सब थाने उखड़ गए, तुम क्यों बैठे हो? जैसा पंच करे वैसा करो, इसमें कौन-सी लाज है?

अलफखांने उत्तर लिखा कि अपने पूर्वज चौहान हमीर आदिको इस तरह लजा कर मैं कैसे आ सकता हूं ? दक्षिणके प्रबल दलने उमड़ कर मलकापुर पर चढ़ाई कर दी, दीवानने घमासान युद्ध करके दक्षिणी दलको भगा दिया। जब शाहजादेने यह सुना तो अलफखांकी बड़ी प्रशंसा की और भीलोंके थानेको विजय करनेके लिए मलकापुरसे भेजा। उसने अविलंब जालवापुर आदि सारे मेवासको विजय कर भीलोंको परास्त कर दिया। फिर फतहपुर आ कर वह वापस मेवास चला गया। वहांके लोग अलफखांकी निरन्तर सेवा करने लगे। दीवान स्वयं दक्षिणमें रहते थे, उनका बड़ा पुत्र दौलतखां फतहपुरमें रहता था। बादशाहने दीवानका मनसब बढ़ा कर उसे बड़ा उमराव बनाया।

बीदावत सरदार चोरी करता था। उसके न मानने पर फतहपुरसे दौलतखांने चढ़ाई करके उसे परास्त किया और उसके गांवको जला दिया। पटौधी और रसूलपुरके कछवाहे भी चोरी और लूटका धंधा करते थे, व राहगीरोंको मार देते थे। जब बादशाहके दरबारमें इसकी पुकार की गई तो बादशाहने महावतखांसे सलाह ली। उसने कहा – कछवाहोंको दौलतखां धूलमें मिला देगा। बादशाहने तत्काल फरमान भेज कर दौलतखांको बुलाया। दौलतखां अजमेरमें आ कर बादशाह जहाँगीरसे मिला। बादशाहने हुक्म दिया – "सूजावत चोर है, उसने सगरसे पटी छीन ली है, यदि तुममें शक्ति हो तो उसे निकाल कर पटी अपनी जागीरमें मिला लो।" दौलतखांने तुरन्त शाही आज्ञा स्वीकार की। बादशाहने उसे सिरोपाव दे कर सम्मानित किया और दोनों पटी दीवानके मनसबमें लिख दी।"

दौलतखांने बादशाहसे रुखसत पा कर कछवाहोंसे कहलाया कि हमारी पटी अविलंब छोड़ दो, अन्यथा युद्धके लिए तैयार हो जाओ। कछवाहोंने कहा – "रायसिंह और राणा सगर भी हमें नहीं निकाल सके। उन्होंने भी जागीर छोड़ दी। तुम कौन उनसे बढ़ कर आ गए। खुदारो, तरतीबखां और अंबिया शेख भी हमारे सामने नहीं रुके, तुम किस फेरमें हो।" यह सुन कर दौलतखांने तुरन्त धावा बोल दिया। कछवाहे भाग गए। माधव, नरहर और नरहरखांने दौलतखांके आगे गीदड़की गति पकड़ी। गिरधरके पुत्र गोकुलने आ कर जुहार किया।

दौलतखांने नरहरदासको पटीसे निकाल दिया, वह सकुटुम्ब लोहारू जा कर रहने लगा। माधव भादौवासीमें रह कर चोरी करने लगा। माधवके विरुद्ध लोगोंकी पुकार होने पर दौलतखांने उसे भादौवासी छोड़ देनेको कहलाया। उसके न मानने पर दौलतखांने माधव पर जो सेखावतोंके दलसे गर्विष्ठ था, आक्रमण किया। वह लड़नेमें असमर्थ हो भाग गया। दौलतखांने उसका लूटा हुआ द्रव्य और सामान उसके पास उदारता-पूर्वक भेज दिया।

दिल्लीपतिने अलफखांको नरहरकी जागीर दी। उस पर अधिकार करनेके लिए दौलतखांने सदलबल चढ़ाई की। नाहरखांने खूब सेना तैयार की पर आखिर चौहानोंसे न लड़ सका और शरण स्वीकार करके दौलतखांके बड़े पुत्र नाहरखांको अपनी बेटी दी। बादशाहके दरबारमें अलफखांका बहुत सम्मान था। बादशाहने उदयपुर बारुवाकी जागीर भी इसे इनायत की। गिर-

धरने अलफखांको जागीर न छोड़नेके लिये संदेश भेजा और दौलतखांने लिखा कि यदि सीधे तौरसे नहीं निकलोगे, तो मैं लड़ कर भगा दूँगा। तब उसने लिखा कि मेरे पैर पातालमें हैं; ऐसा कौन योद्धा है जो मुझे निकाल सके। दौलतखांने तुरन्त ससैन्य चढ़ाई कर दी अलफखां भाग गया और खीरौरमें न रह सकने पर खोहमें मारा-मारा फिरने लगा। दौलतखांने विजय-दुन्दभी बजाते हुए उदयपुरमें प्रवेश किया। उसकी धाक चारों ओर जम गई; खंडेला और रैवासेमें भी खलबली मच गई।

अलफखांको बादशाहने दक्षिणसे बुला कर तीसरी बार मेवातकी फौजदारी दे कर भेजा। दीवानने दौलतखांको साथ ले कर बांकी, खेरी, चोरटी, मैवास आदिको तहस-नहस कर डाला। बहुतसे भोमिए लड़ मरे। कितनोंने युद्ध बन्द करके अपनी पुत्रियां दीं। मेवात फतह करनेके बाद अलफखांको बादशाहने तुरन्त दक्षिण भेज दिया।

कांगड़ा पर चढ़ाई करनेके लिए बादशाहने दीवान अलफखांको दक्षिणसे बुलाया और राजा विक्रमाजीतको साथ दे कर विदा किया। राजा सूरजमल नूरपुरमें था, शाही सेनाके साथ युद्धमें भाग गया। राजा विक्रमाजीत और दीवान अलफखांने नूरपुर पर कब्जा कर लिया और वहीं डेरा जमा दिया। दीवान अलफखां नूरपुरमें रहा और राजा विक्रमाजीतने नगरकोट पर चढ़ाई करनेके लिए कूच किया। जब सूरजमलने सुना कि राजा नगरकोट पर गया तो उसने नूरपुर पर सदलबल चढ़ाई कर उसे वापिस लेनेकी ठानी, परन्तु दीवानजीसे लड़नेमें असमर्थ हो कर कुछ भी घात न कर सका।

राजा विक्रमाजीत कांगड़े गया। वहां वैरीसे बात कर असफल-सा होकर लौटा और दीवानजीको काहलूर पर चढ़ाई करनेको कहा। तत्काल अलफखांने कूच कर ग्वालियरमें डेरा किया तो कहलूरिया दीवानजीके आनेकी बात सुनते ही पेशकश सहित हाजिर हुआ। अलफखांने उसे विक्रमाजीत राजाके पास भेज दिया। राजा जब बढ़-बढ़ कर बात करने लगा तो बादशाहने लिखा कि कांगड़ा जैसे हो अधिकारमें लाओ।

शाही सेनाने नगरकोटके चारों तरफ घेरा डाल दिया और गढ़ तोड़ कर अधिकार कर लिया। दूसरोंके वहां रहना अस्वीकार करने पर राजा विक्रमाजीत और दीवान अलफखांने सलाह करके दीवानजीको ही वहां रक्खा। बादशाहने अलफखांका मनसब बढ़ा कर सत्कृत किया।

बादशाह जहांगीर स्वयं कांगड़ा देखनेके लिए आया। दीवान अलफखांसे मिल कर वह अति प्रसन्न हुआ और उसे सम्मानित कर काश्मीरकी ओर चला गया। जब ठटा वालोंने सिर उठाया तो बादशाहने अलफखांको बुला कर ठटा भेजा। उसने तुरंत वहां जा कर ठटा सर कर लिया। इधर दीवानजीके चले जानेसे कांगड़ेके सब पहाड़ी एक हो कर मुगल सल्तनतके विरुद्ध हो गए। बादशाहने सादिकखांको ससैन्य भेजा, परन्तु उसके असफल होने पर शाही फ़रमान द्वारा दीवान अलफखां कांगड़े आया। अलफखांके आते ही सब पहाड़ी उसे जुहार करने आए। सादिकखां दीवानके प्रभावसे बड़ा चमत्कृत हुआ।

काबुलके भोमियोंके बगावत करने पर शाह जहाँगीर स्वयं लाहौर आया और उसने काबुल भेजनेके लिए काँगड़ासे अलफखांको बुलाया। इसी समय लखी जंगलकी पुकार आई कि डुढी और बट्ट लोगोंने मुल्क ऊजड़ कर दिया है। बादशाह सोच रहा था कि लखी जातके भोमियोंको गिरफ़्तार कर लाहौर लानेके लिए किसे भेजा जाय; तब आसफखांने दीवान अलफखांको भेजनेकी राय दी। बादशाहने दीवानजीको सिरोपाव दे कर ससैन्य लखी जंगलकी ओर बिदा किया।

दीवान अलफख़ां लाहौरसे चल कर कसूर आया। भटी मनसूर डरसे भाग कर बादशाहके पास चला गया। दीवानजीने अखीरकी गढ़ी पर आक्रमण किया। परस्पर घमासान युद्ध हुआ। ३०० मनुष्योंको मार कर शेष सबको बन्दी बना लिया। आखिरको जीत कर दीवानजी डोगरोंकी तरफ मुड़े। इनका आगमन सुन कर डोगरे पहलेहीसे भाग गए। दीवानजी बट्ट गए, वहाँ वाले भी दीवानजीका सामना करनेमें असमर्थ रहे। फिर दीवानजीने खाई डेरा किया, आसपासके भोमिए सब आधीन हो गए। वहांसे चिहुनी, देपालपुर गए। डुढी बहादुरखांने आ कर भेंट दी और अधीन हो गया। जो भोमिए (जागीरदार) भेंट ले कर आए थे, सबको अलफख़ांने बादशाह जहाँगीरके पास भेज दिया। बादशाह अत्यंत प्रसन्न हुआ। चिहुनी, देपालपुर, महमदौट, भटिंडा, पटन, आलमपुर, पिरोजपुर, भटनेर, जमालाबाद, धिग, कबूला, रहमताबाद, रहीमाबाद, आदि लखी जंगलके सरदारोंको सर कर लिया। भटी, समेज, जोहिए, डुढी, बट्ट, नेपाल, विराटे, डोगर, खरल, अरब और घौला, खेड़ा आदि सब पर दीवानने विजय-दुन्दभी बजाई।

कांगड़ाके पहाड़ पर सरदारख़ां शासक था। उसकी मृत्युके बाद पहाड़ी फिर बग़ावत करने लगे। बादशाहने अलफख़ांको बुला कर उसे चौथी बार पहाड़ फ़तह करनेके लिए भेजा। दीवानजीके सदलबल पहुंचने पर पहाड़ी लोग सम्मुख न आ कर पहाड़ोंकी ओटमें छिपे रहे। दीवानजीने काहलूर, मंडई, सिकंदराको अपने अधीन कर लिया। उधर सिकंदर शाहके सिवा कोई भी तुर्क नहीं गया था। चौहान अलफखांके जाने पर पहाड़ी घर-बार छोड़ कर भागे फिरते थे। उन सबने विचार किया कि दीवानसे हम सब एक हो कर लड़ेंगे। जगतसिंह पैठनिया, विसंभर चंब्याल, भौनका चंद्रभान, जसवाल फतू, भोपत, असूल, बूला, सूरजचन्द, ठकर कल्याण, श्यामचंद, जगत-माल, अजिया, राय कपूर आदिके सारे कटकने एकत्र हो कर नगरौटेमें डेरा किया। क्यामख़ानी और पहाड़ियोंमें परस्पर खूब घमासान युद्ध हुआ। पहले दिन जगतसिंह रणक्षेत्रसे भाग गया। दीवान अलफख़ांकी विजय हुई। दूसरे दिन फिर पहाड़ी सेना एकत्र हो रणक्षेत्रमें आई। दीवान-जीने उसे हरा दिया, इसी प्रकार तीसरे दिन भी पहाड़ी हारे। चौथे दिन और भी बहुतसे भोमिए पहाड़ी दलमें शामिल हो कर लड़े, परन्तु उनकी हार हुई। पांचवें दिन और छठे दिन भी अलफ-खांकी जीत और पहाड़ियोंकी हार हुई। पैठानसे सादकख़ांने अलफखांको पत्र लिखा कि या तो तुम आ कर मिलो या सेना भेजो। अलफखांने देखा कि शत्रुदल उमड़ा हुआ है। युद्धसे मैं क्यों लौट कर अपने कुलमें कलंक लगाऊँ? मरना एक दिन है ही। उसने अपने थोड़े दलको रख कर समस्त शाही सेना रोष-पूर्वक सादकखांके पास भेज दी।

जब जगतसिंहने सुना कि अलफखांके पास थोड़ी-सी सेना है तो वह निशान बजाता हुआ

सदल रणक्षेत्रमें आ पहुँचा। दीवानजीने भी अपने दलकी तीन अनी बनाई। एक ओर रूपचन्द दूसरी ओर बासो बडवाल और मध्यमें दीवान स्वयं रहा। पहाड़ियोंने इन्हें चारों तरफसे घेर लिया। घमासान युद्ध हुआ। रूपचंद और बासी हार कर भाग खड़े हुए अलफखां सत्य और साहसके बल पर पैर रोप कर युद्ध करने लगा।* दीवानजीके बड़े-बड़े वीर योद्धा इस लड़ाईमें काम आए। एदल और कमाल क्यामखानी और जमाल, मुजाहद, भीखन, बहलोल, लाडू, पिरोजखां, दोला, अबू इस कंदर, मारूफ, सरीफ, ऊदा, परता, चतुरभुज, जगा, मनोहरदास, कौजू, हरदास, दोदराज, मोहत आदिने हजारों पहाड़ी वीरोंको धराशायी करके अंतमें वीरगति प्राप्त की। स्वयं दीवानजी और उनके चतुर नामक हाथीने अपने चौहान वंशका पानी बड़ी सफलतासे दिखाया। पहाड़ी लोग तंग आ कर भागने लगे। दीवानने उन्हें खदेड़ते हुए पीछा करके १३०० मनुष्योंको मार डाला। जब पहाड़ियोंने देखा कि भागनेसे छुटकारा नहीं होगा, तो सब एकत्र हो कर युद्ध करने लगे। घमासान युद्ध करते हुए दीवान अलफखां शहीद हो गए।

वि० सं. १६८६, हि० सन् १०३५ रोजा तारीखके दिन दीवान अलफखां वीरगतिको प्राप्त हुए। दीवानजीकी दरगाह बड़ी चमत्कारी है, बहुतसी करामातें प्रकट हैं। निर्धनको धन और निर्बुद्धिको बुद्धि व मार्गभ्रष्टको मार्ग देनेवाले हैं। इस प्रकार अलफखां महा पीर प्रगटे।

कवि जानने वि० सं. १६९१में पुराने कवित्तके अनुसार इस ग्रन्थकी रचना की। अब दीवान दौलतखांका विवरण लिखते हैं—

दीवान अलफखांके पीर हो जाने पर उसका पुत्र दौलतखां उत्तराधिकारी हुआ। बादशाह जहाँगीरने उसे मनसब दे कर काँगडेका गढ़ सुपुर्द किया। वह भी काँगड़ेमें रह कर पहाड़ी सरदारों द्वारा सेवा कराता हुआ शासन करने लगा। जहाँगीरकी मृत्यु हो जाने पर सब थाने उठ गये और अराजकता छा गई, किंतु दीवान दौलतखां अपने स्थान पर अविचल रहा। पहाड़ियोंने मिल कर गढ़के चौतरफ घेरा डाल दिया, तब दीवानके दलने पहाड़ियोंको मार भगाया और नगरकोटकी रक्षा की।

शाहज़हाँने दिल्लीके तख्त पर बैठते ही दौलतखांको मनसब बढ़ा कर सम्मानित किया। दीवानने १४ वर्ष काँगड़ेमें रह कर शासन किया; फिर काबुल और पेशावरमें जा कर रहा। सीमाके सब शासक दीवानसे मिल कर चलते थे। दौलतखांके तीन पुत्र थे—ताहरखां, मीरखां, और असदखां।

दौलतखांका पुत्र ताहरखां बादशाहसे मिलनेके लिए अकबराबाद गया। बादशाहने प्रसन्नतासे उसे मनसब दे कर बड़ा प्यार किया। जब शाही दरबारमें गजसिंहके पुत्र राठौर अमरसिंहने सुलावतखांको मारा तो बड़ा घमासान मच गया। बादशाहने हुक्म किया कि राठौड़ोंको मारो,

---

*कवि जानने इस युद्धका वर्णन बड़े विस्तारके साथ किया है, और दीवान अलफखांकी वीरताकी बड़ी प्रशंसा की है।

जिससे भविष्यमें कोई दरबारमें बेअदबी न करे। अमरसिंहके जो सेवक आगरेमें थे वे सबके सब लड़ मरे, कोई भी न भागा। रावजीका कुटुंब नागौरमें था। बहुतसे ओघावत पासमें थे अतः उनके त्रासके कारण नागौर लेनेकी किसीने भी स्वीकृति नहीं दी। आखिर वीर ताहरखांने नागौरके लिए बीड़ा उठाया। बादशाहने नागौरका पट्टा लिख कर दौलतखांको काबुलसे बुलानेके लिए फरमान भेजा और मनसब भी ड्योढ़ा कर दिया।

एक दिन बादशाहने ताहरखांसे[1] पूछा – काबुलसे अपने पिताके आने पर नागौर जाओगे या पहले ही जा कर राठौड़ोंको निकालोगे? ताहरखांने कहा "आपका फरमान मस्तक पर है। मैं अभी जाकर नागौर दखल करता हूँ।" बादशाहने नागौर दे कर उसे बड़ा उमराव बनाया और सिरोपाव दे विदा किया। ताहरखांके पुत्र सरदारखांको बादशाहने मनसब दे कर अपने पास रक्खा। ताहरखांने स्वदेश लौट कर बड़ी भारी सेनाके साथ नागौरकी ओर प्रयाण किया।

ताहरखांके नागौर आने पर ओधोंने गढ़ खाली कर दिया। ताहरखांने उस पर कब्जा कर लिया और अमरसिंहके स्थान पर जैगढ़में रहने लगा। चार मासके बाद दीवान दौलतखां भी काबुलसे आ पहुंचा और पिता-पुत्र दोनों आनंदपूर्वक नागौरमें रहने लगे। ७-८ महीनेके अनन्तर बादशाहने फरमान भेजा कि फरमान पाते ही तुम शीघ्रतासे पेशावर जाओ। शाहजादा वहांसे बलख लेनेके लिए जायेगा, तुम भी उसके साथ जा कर फतह करो। शाही फरमान पाते ही दीवानजीने प्रयाण किया और ताहरखां नागौरमें ही रहा। ८ मास नागौरमें सुख-पूर्वक उसने बिताए। जब ताहरखांने फौजके बलख जानेकी बात सुनी तो उसने बादशाहके पास लाहौर अरज भेजी कि हुक्म हो तो मैं हाजिर होऊं। बादशाहने उसे बलख भेज दिया। छोटे शाहज़ादेने कटकके साथ बलखको फतह कर लिया। दोनों शाहजादोंने दक्खिणी रुस्तमखां और दीवान दौलतखांको हुंदग्रह स्थानमें भेज दिया। शाहजादेके पास बलखमें ताहरखां था। आयु पूर्ण हो जानेसे युवावस्थामें हो अचानक उसकी मृत्यु हो गई। नगरमें ताबूत आने पर हाहाकार मच गया[2]। पिता दौलतखांको बड़ा दुःख हुआ। बादशाहने सुन कर दुःख प्रकट किया और सलावतखांको बुला कर दिलासा दिया।

बलखसे शाही सेना लौट कर काबुल आई तो बादशाहने कंधार विजय करनेकी आज्ञा दी, और कुमुक भेजी। इधर शाहजहांकी सेना और उधर शाह अब्बासकी सेना परस्पर लड़ने लगी। जब शाही सेनाके पैर उखड़ते देखे तो रुस्तमखां दक्खिणी और दीवान दौलतखां रणक्षेत्रमें उतर पड़े और उन्होंने शत्रुसेनाको परास्त कर दिया।

जब शीतकालमें बरफ़ जमने लगी तो शाही सेना कंधार छोड़ कर काबुल आ गई। जब

---

१ राज्यकाल सं० १६८३ से १७१० इनके नामसे रचित 'दउलितविनोदसारसंग्रह' नामक विशाल वैद्यक-ग्रन्थकी अपूर्ण प्रति अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेरमें उपलब्ध है। इसकी पूरी प्रति अन्वेषणीय है। आपका चित्र फतहपुर परिचयमें प्रकाशित है।

२ कवि जानने बड़े ही करुण शब्दोंमें विलाप किया है।

मौसम ठीक हुआ तो फिर सेना कंधार लेने गई पर उसके हाथ न आने पर वापिस सेनाको काबुल लौटना पड़ा। तीसरी बार बादशाहने फिर सेनाको भेजा। कंधारमें घमासान युद्ध होने लगा। दौलतखां दीवान भी चढ़ाईके दौरे करता था। इसी बीच उसे ज्वर हो गया और कुछ दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई। वि० सं० १७१०, हिजरीमें दीवानकी मृत्यु हुई। बादशाहने दिलासा दे कर ताहरखांको सिरोपाव दे कर स्वदेश विदा किया। सरदारखां अपने वतन लौट कर सुखपूर्वक राज्य करने लगा। सरदारखां और पूरनखां चिरायु हों।

प्रस्तुत रासा यहीं समाप्त होता है। पं. झाबरमलजी शर्माके लेखानुसार, 'शजतुल मुसलमीन' और 'तारीख़ ख़ानजहानी' ग्रन्थ इसी रासाके अनुसार बने हैं और उपर्युक्त सरदारखांके(१७१०-३७) बाद दीनदारखां (सं. १७३७ से ६०),सरदारखां द्वि. (१७६०-८६) कामयाबखां[1] (१७८६-८८) फतहपुरके नवाब हुए। अंतिम सरदारखांने अपना विरुद 'सवाई क्यामखां' रखा और यही अंतिम नवाब हुआ। सीकरके सामन्त राव शिवसिंह सेखावतने उसे पराजित किया और सं. १७८८ में स्वयं फतहपुरका स्वामी बना। फतहपुर परिचयसे सरदारखांके परवर्तीय नबाबोंका वृतांत परिशिष्टमें दिया गया है।

——※——
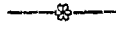
क्यामखां रासाकी प्रतिका परिचय।

हमें प्राप्त प्रतिके अनुसार ग्रन्थका नाम "रासा श्री दीवान अलिफखाँका" है। पुरोहित हरिनारायणजी, पं. झाबरमलजी व फतहपुर परिचय आदिके लेखकोंने इसका नाम "कायमरासा" लिखा है। इसका प्रधान कारण यही प्रतीत होता है कि इसमें क्यामखानी नवाबोंका इतिहास है केवल अलिफखाँका ही नहीं। हमें यह प्रति झुंझणूंके जैन उपासरेसे मिली थी। इसकी अन्य प्रति स्व. पुरोहितजीके पास होनेका जाननेमें आया तब पुरोहितजीसे पूछा गया तो आपने उत्तर दिया कि कोई सज्जन मेरे यहाँसे ले गये थे, उन्होंने वापिस लौटानेकी कृपा नहीं की। अतः इसका सम्पादन हमारे संग्रहकी एक मात्र प्रतिसे ही किया गया है। प्रति बहुत शुद्ध एवं रचना-समयके आसपासकी ही लिखित है। अतः हमें कोई दिक्कत नहीं हुई।

प्राप्त प्रति पुस्तकाकारके ७० पत्रोंमें है। साइज ४॥। × ८॥। है। प्रत्येक पृष्ठमें १६ से १८ पँक्तियां व प्रति पंक्ति अक्षर १८के लगभग हैं। गणनासे ग्रन्थ परिमाण १३५० श्लोकका होता है।

यद्यपि इस प्रतिमें लेखन-सम्वत् नहीं दिया गया है, पर हमारे संग्रहकी दीवान अलफखाँकी पैड़ी और उसके लेखक एक ही हैं। अतः उसकी पुष्पिका नीचे दे दी जाती है—

---

१ फतहपुर—परिचयमें सरदारखांकी विद्यमानतामें कामयाबखांके २ वर्ष राज्य करनेका लिखा है पर यह कुचामण चला गया था। वहीं मरा। अब भी वहां इसके वंशज विद्यमान हैं। झाबरमलजीने बीचमें एक काम और दिया है पर ठीक नहीं है।

"संवत् १७१६ मिति कार्तिक बदी २१ शनिवार ता. २३ मा. मुहर्रम सन् १०७० लिखाइतं पठनार्थे फतैहचंद लिखतं मीखा"

झुंझणूंसे हमें तीन ग्रन्थोंकी प्रतियां मिली थी उनमेंसे बुद्धिसागर ग्रन्थ भी इसीका लिखित है–

"सम्वत १७१६ मिती आसोज सुदी १४ बार सोमवार ता. ११ मास मुहर्रम सं. १०७० पौथी लिखाइतं पठनार्थ फतहचन्द लिखतं मीश्रदेवै। श्रीमालशकगोत्र संभवत। श्री

हिन्दुस्तानी एकेडेमी संग्रह वाली प्रति भी फतेहचन्दकी है। संभवतः दोनों फतेहचन्द एक हों। फतेहचन्दको जान कविकी रचनाओंसे छोटी उम्रसे ही प्रेम रहा प्रतीत होता है। एकेडेमीकी प्रतिसे कामलता ग्रन्थका पुष्पिकालेख नीचे दिया जाता है –

"सम्वत् १७७८ मिती कातका सुदी ६ विसपतिवार हसतखत फतेहचन्द ताराचन्दका झोड-वानिया पोथी फतेहचन्दकै घरकी। श्री। श्री।

क्यामखां रासाका महत्त्व

क्यामखां रासा अनेक दृष्टियोंसे महत्त्वपूर्ण है। साहित्यकी दृष्टिसे यद्यपि उसकी तुलना पृथ्वी-राज रासा, संदेश रासा आदिसे नहीं की जा सकती, तथापि यह तो मानना ही पड़ता है कि उसकी शैलीमें एक विशेष प्रवाह है। प्रेमपूर्ण आख्यायिकाओं और प्राकृतिक वर्णनोंसे जान भी इसे सुस-ज्जित कर सकता था, वह वीर रसका ही नहीं शृंगार रसका भी कवि था, किन्तु उसने सरल ओजस्विनी भाषामें ही अपने वंशके इतिहासको प्रस्तुत करना उचित समझा, उसने यथाशक्ति मितभाषिता और सत्यका आश्रय लिया।[1] जानने जहां तहां सुन्दर पद्य भी लिखे हैं। जिनमें कुछ यहां प्रस्तुत किये जाते हैं–

बांकै बांकैही बने, देखहुं जियहि विचार।
जो बांकी करवार है, तो बांको परवार॥
बांकैसौं सूधो मिले, तो नांहिन ठहराइ।
ज्यों कमांन कवि जान कहि, बानहिं देत चलाइ॥

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

कहा भयो कवि जान कहि, बैरी बकीय कुबात।
कबके गिर गिर कहात हैं, पै गिर ना गिर जात॥

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

---

१ कहत जान अब बरनिहौं, अलिफखांनकी बात।
पिता जान बढ़ि न कहौं, भाखौं साचीं बात॥

सूर वीर अरु मीन जल, इनको येक सुभाइ ।
रपि रपि दोऊ मरै, जो पानी प्यादे जाइ ॥
रहे न केहूँ हीन जल, सहे न दोऊ गार ।
सूर वीर सुनि मीनकौ, पानी हीसौं प्यार ॥
येक बात कवि जान कहि, बढ्यौ मीनतें सूर ।
मीन मरे पानी घटे, सूर मरे जल पूर ॥

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

ताहरखां कीनौ गवन, स्रवन सुने ये बैन ।
वस्त्र मगौहे ह्वै गये, रत रोये जुग नैन ॥
पूनोको पहुंच्यौ नहीं, भग कमोदनि मंद ।
यह बपरीत लागे बुरी, गह्यो सप्ली चंद ॥
थारीके मुक्ता भये, ठरे ठरे ही जाहि ।
सुरतर ताहरखांन बिनु, केहूं न टग ठहराइ ॥
हिय कमल नांहिन खुलत, मुकित पल पल मांहि ।
छवि रवि ताहरखांन जू, दिष्ट परत है नांहि ॥
कहु कैसे कै ऊपजे, नैन चकोर अनंद ।
कहूं दिष्ट परै नहीं, ताहरखां मुखचन्द ॥
मीर करि ताहरखांन जू, हितवन हिय हित दीन ।
नैन बहन हिरदै दहन, मनहि गहन तन छीन ॥
धर्मराज कैसे कहूँ, कौन धर्म यहु आहि ।
काटत ऐसो कलपतर, कृपा न उपजी काहि ॥

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

सूरज नाव कहाहि है, उलटौ सबै सुभाइ ।
छुप्यौ रहत है स्योसकूं, निसको निकसत आई ॥

दिल्लीका यह वर्णन भी पठनीय है —

अनंत भताहरि भखि गइ, नैकु न आई लाज ।
येक मरै दूजै धरै, यहै दिल्लीको काज ॥
जात गोत पूछत नहीं, जोई पकरत पान ।
ताहिसौं हिल मिल चलें, पै भखि जार निदान ॥

एक साहित्यिक व्यक्ति द्वारा लिखे जानेके कारण रासामें सहृदयजनके लिए आनन्दकी इस भांति पर्याप्त सामग्री है। किन्तु वास्तवमें उसका महत्व साहित्यिक नहीं, ऐतिहासिक है। साहित्यकी दृष्टिसे अनेक अन्य कृतियाँ कायमरासासे बढ़ी चढ़ी हैं, किन्तु अपने निजी क्षेत्रमें यही प्रमुख वस्तु है। कायमखानियोंका इतना अच्छा और इतना विश्वसनीय वर्णन हमें अन्यत्र नहीं मिलता; और वह भी इतने रोचक ढंगसे कि पाठकका मन कभी नहीं ऊबता, यही इच्छा बनी रहती है कि वह और पढ़े। वंशके गर्वसे यत्र-तत्र कुछ बातें शायद बिना जाने ही कुछ बढ़ा कर लिखी हों। किन्तु जान कर तो शायद उसने ऐसा न किया होगा। सच्चे भारतीयकी तरह वह कभी यह भूल नहीं पाता कि यह संसार क्षणभंगुर है। ओजस्वीसे ओजस्वी वर्णनके पश्चात् जब वह लिख बैठता है —

जो लौं दौलतखां जिये, ताके किये अपार।
अंत न कोउ थिर रहै, या झूठे संसार॥

तो हमें प्रतीत होता है कि यह कोई दरबारी इतिहास लेखक नहीं है, न अबुलफजल है और न बाबर। सत्य इसे प्रिय है, यह व्यर्थकी अतिशयोक्तिमें विश्वास नहीं रखता।

पुस्तकका ऐतिहासिक सार पूर्व दिया जा चुका है। पुस्तकके अन्तमें दी हुई टिप्पणियों द्वारा हमने रासाके ऐतिहासिक मूल्याङ्कनका भी प्रयत्न किया है। अतः सामान्यरूपसे ही रासाके ऐतिहासिक महत्वका हम यहां निर्देश कर रहे हैं।

किवामरासा या क्यामरासा

यह पुस्तक आजकल 'कायमरासा' के नामसे अधिकतर विद्वानोंको ज्ञात है। किन्तु इसके मूल नायकका वास्तविक नाम 'किवामखां' होनेके कारण 'किवामरासा' कायमरासासे कहीं अधिक शुद्ध शब्द है। यह शब्द बिगड़ कर 'क्यामरासा' बन गया है। इसे शुद्ध कर कायमरासाका रूप देना ठीक नहीं है। 'किवामखां' के वंशजोंको भी कायमखानी न कह कर 'किवामखानी' या 'क्यामखानी' कहना अधिक ठीक होगा। हमने कायमरासाके स्थान 'क्यामखांरासा' लिखना उचित समझा है।

पुस्तकका रचनाकाल संवत् १६९१ अर्थात् सन् १६२४ है। उस समय बादशाह शाहजहां दिल्लीके सिंहासन पर उपस्थित था। मुगल साम्राज्य अपने वैभवके शिखिर पर पहुँच कर अस्तोन्मुख होनेकी तय्यारी कर रहा था। बलख और कन्धारकी पराजय, जिनका वर्णन रासामें वर्तमान है, उसके प्रथम लक्षण थे। दक्षिणमें मलिक अम्बरके विरुद्ध युद्ध करते हुए जिन कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा था, उनका भी इसमें अच्छा दिग्दर्शन है। रचयिताके पिता अलिफखां, भाई दौलतखां, और भतीजे ताहरखांने इनमें भाग लिया था। अतः इनका वर्णन ठीक होना स्वाभाविक ही था।

रचयिताके पिता अलिफखांने बड़ी आयु प्राप्त की थी, उसने अकबरसे ले कर अन्त तकके अनेक युद्धोंमें भी भाग लिया था। इसलिये उसके जीवनसे मुगल कालीन भारतका हम अच्छी तरह ज्ञान प्राप्त करते हैं। बादशाह अकबरने उसके नाम फतहपुरका पट्टा लिख दिया; किन्तु उसका अधिकार दिलानेके लिये शिकदार शेरखांको श्यामदास कछवाहेके विरुद्ध बलका प्रयोग करना पड़ा।

अकबरके अन्तिम और जहांगीरके समग्र समयमें जितने उपद्रव हुए उनकी अलिफखांके जीवनसे हम खासी सूची तय्यार कर सकते हैं। सलीमकी मेवाड़ पर चढ़ाईके समय अलिफखां सादड़ीका थानेदार नियुक्त हुआ। जब दलपतने जहांगीरके विरुद्ध विद्रोह किया तो शेख कबीरके साथ अलिफखां भी दलपतके विरुद्ध भेजा गया। तुजुके जहांगीरीमें इस विद्रोहका अत्यन्त संक्षिप्त वर्णन है। उसके विशेष वर्णनके लिये हम आपके आभारी रहेंगे। स्वयं दिल्लीके पासके प्रदेश भी अनेक बार उपद्रव करते रहते थे। अलिफखांने जाटुओंको हरा कर भिवानी फतह की। मेवातमें तो उपद्रवोंको शान्त करनेके लिये उसे अनेक बार नियुक्त होना पड़ा। पाटौधि और रसूलपुरको उसके पुत्र दौलतखांने सर किया। दक्षिणमें अनेक सेनापतियोंकी अधीनतामें अलिफखांको मलिक अम्बरकी सेनाओंका सामना करना पड़ा। चार बार अलिफखांको कांगड़े भेजा गया, और वहीं सन् १४२६में वह विद्रोही पहाड़ियोंके विरुद्ध लड़ता हुआ मारा गया।

अलिफखांसे पूर्वका वर्णन किसी पुराने कवित्त पर आश्रित है। उसका अंतिम भाग जानके समयके निकट होनेके कारण स्वभावतः प्रायः ठीक है। किन्तु प्रारम्भिक भागमें अनेक भूलें हैं, और संभवतः इसका भी यही कारण है कि यह पुराना कवित्त भी कायमखांके मरणके अनेक वर्षों बाद लिखा गया था। नामसाम्यके कारण जो भूलें हुई हैं उनका विशेष विवरण टिप्पणियोंमें दिया गया है, पाठक वहीं देखें। चौहानोंकी उत्पत्तिकी कथा रोचक है। उसकी पृथ्वीराजरासा आदिकी कथासे तुलना ऐतिहासिक दृष्टिसे लाभप्रद सिद्ध हो सकती है। वीर चौहान जाति वत्सगोत्रीय थी। जान वत्स ऋषिसे ही चौहानोंकी उत्पत्ति मानते हैं, चांद, सूरज आदिसे उन्हें मिलानेका जानने प्रयत्न नहीं किया।

तुगलक, सय्यद, लोदी, सूर और मुगल वंशों पर रासामें पर्याप्त सामग्री प्राप्त होती है, जिसका ऐतिहासिक सावधानी पूर्वक प्रयोग कर सकते हैं। जोधपुर, बीकानेर आदि राज्योंके इतिहास पर भी जानकी लेखनी कुछ नवीन प्रकाश डालती है। अतः इस ऐतिहासिक रासाको प्रकाशित कर राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर प्रशस्य कार्य कर रहा है। हम व्यक्तिगत रूपसे उसके आभारी हैं; उसने हिन्दी भाषाकी एक कविकी रचना पाठकोंके संमुख प्रस्तुत करनेका हमें सुअवसर प्रदान किया है।

दशरथ शर्मा

—०—

परिशिष्ट नं० १

दीवान दौलतखाँ रचित हिन्दी वैद्यक ग्रन्थ

दीवान दौलतखाँ[1] द्वारा रचित हिन्दी वैद्यक ग्रन्थका नाम है 'दउलति विनोद्सार'। इसकी एक अपूर्ण गुटकाकार प्रति बीकानेरकी अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें विद्यमान है। प्रस्तुत प्रतिमें अन्य कई वैद्यक ग्रन्थोंका भी संग्रह है, केवल बीचके पृ० ३६७ से पृ० ३९७ तकमें यह ग्रन्थ लिखा हुआ है। पूर्ण प्रतिकी अनुपलब्धिके कारण इसमें ग्रन्थका कितना अंश कम रह गया है व अन्तमें ग्रन्थके रचनाकाल आदिका उल्लेख था या नहीं, यह कहा नहीं जा सकता। उपलब्ध पत्रोंमें करीब १५०० पद्य हैं, जिनमें हिन्दीके अतिरिक्त संस्कृतके भी सैकड़ों श्लोक हैं। संभवतः ये किसी अन्य ग्रन्थसे उद्धृत किये गये होंगे। आश्चर्य नहीं कि वे ग्रन्थकारके बनाये हुए भी हों, क्योंकि उनमें किसी ग्रन्थसे उद्धृत किये जानेका उल्लेख देखनेमें नहीं आया।

जैसा कि राजा-महाराजाओंके नामसे रचित बहुतसे ग्रन्थोंके सम्बन्धमें देखनेमें आता है, संभव है कि यह ग्रन्थ भी स्वयं दौलतखाँका रचा न हो कर उसके आश्रित किसी वैद्यविद्याविशारद कविका रचा हुआ हो। पर प्राप्त अंशमें कहीं ऐसा नाम-निर्देश न मिलनेसे दौलतखाँ द्वारा रचित मान लेना ही ठीक जान पड़ता है। ग्रन्थका प्रारंभिक अंश व अधिकारोंके नामादि नीचे दिये जा रहे हैं, जिससे ग्रन्थका महत्त्व भली भाँति विदित हो जायगा—

दउलतिविनोदसारसंग्रह

श्रीमंतं सच्चिदानंदं, चिद्रूपं परमेश्वरम्।
निरंजनं निराकारं, तं किंचित्प्रणमाम्यहम् ॥१॥
दोधकादि सद्वृत्तै पाठैः पाठानुगे वरे।
शास्त्रं विरुच्यते रुच्यं, दृ (ह?) ष्ट्वा शास्त्राण्यनेकशः॥२॥
"दउलतिविनोदसारसंग्रह" नाम प्रकृष्ट परमार्थम्।
यत्रा से परोपकृत्यै, सम्मते सुमतं कवीन्द्राणां ॥३॥
श्रीमद्बागड मंडलाखिलसिरः प्रोद्यत्प्रभा मंडनः।
श्रीमंतोऽलिफखानभूपतिवरः नम्यासुरानन्ददाः ॥
तत्पट्टोदय स्यनुम दिवाकरैः भास्वित्प्रभा भास्करैः।
श्रीमद्उलति खान नाम वसुधाधीशैः सुधीशाश्रितैः ॥४॥

---

१ इनका चित्र फतहपुर ग्रन्थमें प्रकाशित है।

धनंतरि मुख वैद्य बहु, सिद्ध चिकित्साकार ।
तन सुद्धिहं सुधि योग पथ, लहइ संसारह पार ॥१॥
ताथइं चिकित्सक योगविद्, पढ़ई चिकित्सा सत्थ ।
मुक्ति होइं परमवि निपुण, रहौ चाहइ तउ अत्थ ॥६॥
धर्म अर्थ अरु काम कउ, साधन एह शरीर ।
तसु निरोगता कारणई, उद्यम करइ सुधीर ॥७॥
धुरि निदांन विग्यान तसु, ओषधके गुण दोष ।
तास सुद्ध वैद्यक हुवइ, जानु करइ जु अमोल ॥१२॥
देश काल वय वन्हि सम, ओषध प्रकृति विचार ।
देह सत्व बल व्याधि फुनि, घइ ओषध गुनकारि ॥१३॥

इति श्री दउलति विनोदसार संग्रहे श्री दउलतिखांन नृपति वर विनिर्मित वैद्यगुणाधिकारः ।
अधिकारोंके अंतमें –

ज्ञान परम इहु जोगी जानइ, कइ किछु परम वैद्य बखानइ ।
ग्रन्थ विसेषि जिहां कछु पाया, भूपति दउलतिखांन दिखाया ॥१॥

× × ×

जामाता मधुरइ सीतलेहिं, तिउं पित्तह सेवउ मन अनेहि ।
इहुं काल ज्ञान जानहुं सुजांन, भास्यउ नृप श्री दउलतिखांन ॥३॥

× × ×

षोडश ज्वर लक्षण सहित, ओषध कवाथ बखांन ।
कह्या वागड देशाधिपति नृप श्री दउलतिखांन ॥१७॥

इति श्री वागड देशाधिपति श्री आलिफखांन नंदन श्री दउलतिखांन विरचित श्री दउलति विनोद सार संग्रह षोडश ज्वराधिकारः ।

प्राप्त ४४ अधिकारोंके नाम–

वैद्यगुणाधिकार, परमज्ञानाधिकार, कालज्ञान, मूत्र परीक्षा, नाडी परीक्षा, ज्वर चिकित्सा, अतिसार, संग्रहणी, हर्ष, दुनामोनिरूपण, मन्दाग्नि, विसूति, अजीर्ण, कृमिनिदान, पांडु, राजयक्ष्मा, काश, छींकनिदान, स्वरभेद, आरोचक, छर्दि, तृष्णा, दाह, उन्माद, वातनिदान, आमवात, शूलनिदान, गुल्म, हृद्रोग, मूत्रकृच्छ, मूत्रघात, अश्मीरी, प्रमेह भेद, उदरामय प्लीहा, शोथ, अंड वृद्धि, गंडमाल, श्लीपद जयानां, विस्फोट, भगंदर, उपदंश, सूक कष्ट, शीत पित्त, आम्लपित्त, विसर्पि तथा भावौं लूता । (इसके बादका अंश प्राप्त नहीं है) ।

जैसा कि ऊपर लिखा गया है, प्रस्तुत ग्रन्थकी केवल एक ही अपूर्ण प्रति प्राप्त हुई है।

फतेहपुरादिमें खोजने पर संभव है इसकी अन्य पूर्ण प्रति भी उपलब्ध हो जाय। आशा है, आयुर्वेद एवं हिन्दी साहित्यके प्रेमी सज्जन अन्वेषण कर इस ग्रन्थके सम्बन्धमें विशेष प्रकाश डालनेकी कृपा करेंगे।

हिन्दी भाषा व आयुर्वेद चिकित्सा पद्धतिका प्रचार दिनों दिन बढ़ रहा है, पर खेद है कि अभी हिन्दी भाषामें इस विषयके ग्रन्थ बहुत ही कम प्रकाशित हुए हैं। यह हिन्दी साहित्यके लिए उचित नहीं है। इन ग्रन्थोंकी बिक्री भी अच्छी हो सकती है, अतः साहित्य सम्मेलन, नागरी प्रचारणी सभा आदि संस्थाओं व ग्रन्थ प्रकाशकोंको वैद्यक सम्बन्धी ग्रन्थोंके प्रकाशनकी ओर शीघ्र ध्यान देना चाहिए।

क्यामखानी दीवानोंके समयके शिलालेख

संतकवि सुन्दरदासके स्थान पर सं. १६८८ फा. ब. ६ बुधवारका लेख लगा हुआ है जिसका फोटू सुन्दर ग्रन्थावलीके जीवन चरित्र पृ. १२८ में छपा है। दौलतखाँ व ताहिरखाँका उल्लेख इस प्रकार है –

> ढीली पति जहाँ सुत, राजत शाही जहान।
> दौलतखाँ नृप फतेहपुर, ता नन्दन ताहिरखान।

ताहरखाँको, राठौर अमरसिंहके शाही दरबारमें सलाबतखांको मार कर स्वयं मर जाने पर सम्राटने नागौरका परगना दे दिया था। वहाँ पहुँच कर ताहरखाँनने राठौरोंसे नागौर छीन लिया। गढ़के पास मसजिद बनाई गई थी। जिसके हिजरी सन् १०७६ के लेखमें शाहजहाँ एवं ताहरखाँ नाम खुदा है। (सुन्दर ग्रन्थावली, जीवन चरित्र पृष्ठ ३७)

फतहपुर किलेका जीर्णोद्धार व आश्चर्यजनक बावड़ीका निर्माण दौलतखांने सं. १६६२-१६७१ में किया ऐसा उल्लेख फतहपुर परिचयमें किया है। संभवतः इसके सूचित शिलालेख वहाँ हों।

परिशिष्ट नं० २

"मुहणोत नेणसीरी ख्यात" मूलसे क्यामखानीकी उत्पत्ति यहां उद्धृतकी जाती है –

"अथ क्यामखांन्यारी उत्पति अर फतैपुर झूंझणूं वसायौ।

दरेरैरा वासी चहुवांण, तिकां ऊपर हंसाररो फोजदार सैद नासर दोड़ियौ। तद दरेरो मारियो अर लोक सरब भागो। पछै बालक २ फोजदाररै नजर गुदराया। ताहरां फोजदार दीठा। हुकम कियौ "जु हाथीरै महावतनूं सांपो अर दूध पावो - मोटा करो।" ताहरां फौजदार सैद नासर दोनूं बालकांनूं आपरी बीबीनूं सांपिया अर कह्यो —"जु हम दो लाये हैं सो इनको तुम पालो" ताहरां दोनूं बालकांनूं बीबी पालिया। जबका बरस १० तथा १२ रा हुवा ताहरां

हांसीरै सेखनूं सांपिया। तद कितरेक दिन सैद नासर फौत हुवौ। तद सैद नासररा बेटा अर औ दोनूं पुतरेखा पातसाह कोदी पटांख नाम बहलोल तैरी नजर गुदराया। ताहरां सैद नासररा बेटा पातसाहरी नजर उसका न आया अर औ चहुवांण नजर आयो। तैरी नाम क्यामखांन हुतो सु इयेनूं सैद नासररो मुनसब हुतो सु दियौ अर जाटरो नांम जैनूं हुतो तैरा जैननदोत कहाया। सो जूंझणूं फतैपुर मांहे केहीक रहै छै। अर पातसाह थोडो बीजानूं पण दियो। अर क्यामखांनीनूं हंसाररी फोजदारी दीवी। तद इयै दीठो "जु कोइक रहणनूं ठिकांणो कीजै तो भलो" ताहरां जूंझणूं आछी दीठी। ताहरां चोधरीनूं तेडियो। ताहरां कह्यो—"चोधरी ! तूं कहै तो म्हे ठिकांणो रहणनूं करां" ताहरां चोधरी बोलियो—"जु भलो ठोड़ वणावो। छ पण म्हारो नांम रहै त्यूं करीज्यौ" ताहरां कह्यो 'भलो'। ताहरां चोधरीरो नाम जूंझो हुतो सु तिकेरै नांम जूंझणूं वसायौ। अनै जूंझणूं मांहिली ही ज धरती काढ नै फतैपुर वसायौ। नै औ भोमिया थका रहै। पछै कितरैहेके दिन अकबर पातसाह मांडण कूंपावतनूं जूंझणूं जागीरमें दी हुती। अर फतैपुर इण जूंझणूं मांहिली ही ज हुती सु फतैपुर गोपालदास सूजावत कछवाहैनूं दी हुती। सु भोमिया थका रैहता। मुकातो देता। सु पछै जहांगीर पातसाहरा चाकर हुवा। सु पैहला तो समसखां जूंझणूं चाकर रह्यौ। पछै अलमफखां रह्यौ।

दूहो—

पैहली तो हिंदु हुता, पाछै हुआ तुरक।
ता पाछै गोले हुवै, तातैं वडपण तुक ॥१॥
धाये कांम न आवही, क्यांमखांनि गंदेह।
बंदी आद-जुगादके, सैद नासर हंदेह ॥२॥

इति क्यांमखान्यांरी वात संपूर्ण॥"

परिशिष्ट नं० ३

क्यामखांरासामें सरदारखांके राज्याधिकार प्राप्ति तकका उल्लेख है, अतः परवर्ती इतिवृत्तकी पूर्ति फतहपुर परिचयसे की जाती है—

१ – नवाब सरदारखां (१)

(संवत १७१० से १७३७ तक तदनुसार सन् १६५३ से १६८० तक)

नवाब दौलतखां और ताहिरखांके संवत् १७१०में प्राणान्त हो जानेके बाद, ताहिरखांके पुत्र सरदारखांको शासनाधिकार मिला। अपने नामसे उसने "सरदारपुरा" गांव आबाद किया। वह शासनस्थ प्रजाकी और अपने राज्यकी रक्षा करनेमें हर समय लगा रहता था।

नवाब दौलतखां (द्वितीय)
शासनकाल सं० १६८३-१७२०

फतहपुर का किला
(निर्माण संवत् १५०८)
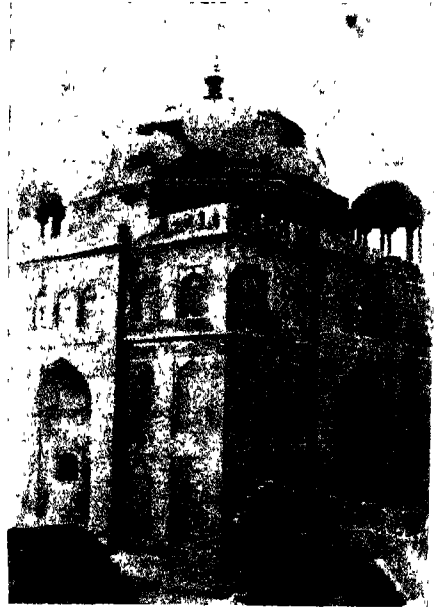
नवाब अलिफखां का मकबरा

नवाबी बावडी
निर्माण संवत १६७१-नवाब अलिफखां के राज्य में

फदनखां नामक एक लड़का नवाब सरदारखांके था, जो असमयमें नवाबकी जिन्दगीमें ही मर गया था, इससे नवाब दुःखी रहने लगा। रात - दिन दुःखमें डूबे रहनेसे उसे राज्य - कार्य अरुचिकर हो गया था, जिससे उसने संवत् १७३७ तक २७ वर्ष ही राज्य करनेके बाद गद्दी छोड़ दी और राज्यका अधिकार अपने छोटे भाई दीनदारखांके सुपुर्द कर दिया।

१० — नवाब दीनदारखां

(संवत १७३७से १७६० तक तदनुसार सन् १६८०से १७०३ तक)

संवत १७३७में नवाब सरदारखांने, अपने पुत्रकी मृत्युसे दुःखित होनेके कारण राज्यासन छोड़ कर अपने भाई दीनदारखांको गद्दी पर बैठाया। वह पहलेके नवाबोंकी तरह बहादुर और बुद्धिमान न था; बल्कि शक्तिहीन और मूर्ख था।

अपने नामसे "दीनदारपुरा" नाम रख कर नवाब दीनदारखांने एक गांव झुंझुणूके रास्तेमें बसाया। नवाबके २ लड़के पैदा हुए जिनका नाम — रसीदखां* और मुजफ्फरखां रक्खे गये।

कम अकल होनेसे नवाब दीनदारखां अधिक दिन तक राज - काज न निभा सका, इससे उसके पोते सरदारखांने संवत् १७६०में उससे राज्यभार ग्रहण करके नवाबी अपने हाथमें ले ली।

११—नवाब सरदारखां (२)

(संवत् १७६०से १७८६ तक, तदनुसार सन् १७०३से १७२९ तक)

नवाब दीनदारखांके राज-काज न संभाल सकनेके कारण उसके पोते सरदारखांको उसके जीते जी ही १७६०में गद्दी सौंप दी गयी। वह भी नवाब दीनदारखांके समान मूर्ख और बलहीन था। ऐयाश भी अव्वल दर्जेका था। उसने एक तेलिनको उसके रूप पर आसक्त हो कर रख लिया था, जिसका महल आज तक फतहपुरके किलेमें विद्यमान है, जो "तेलिनका महल" ऐसा कहा जाता है। तेलिनसे एक लड़का भी नवाबके हुआ, जिसका नाम महबूब था।

संवत् १७९२में नवाब सरदारखांने किसी कारण वश क्रोधावेशमें आ कर भोजराजजीके वंशज बरवाके केशरीसिंह और सुखसिंहको जानसे मरवा दिया। यह बात जब भोजराजजी वंशज वीरवर शार्दूलसिंहजीने सुनी, तो वे इतने क्रोधित हुए कि सिरसे पैर तक क्रोधाग्निसे तिलमिलाने लगे। उन्होंने तुरन्त ही राव शिवसिंहजीको साथमें ले कर १५० सवारों सहित फतहपुर पर चढ़ाई की।

---

*रसीदखाँ- नवाब दीनदारखांका बड़ा बेटा था। उसने अपने नामसे "रसीदपुरा" बसाया। उसके २ लड़के थे। सरदारखां और मीरखां। सरदारखां उसका बड़ा बेटा था, इससे उसे ही नवाब दीनदारखांने अपनी गद्दी पर बैठाया।

फतहपुरकी बीहड़में पहुँच कर शार्दूलसिंहजी और राव शिवसिंहजीने नवाबके ऊंटोंके समूहको वहां चरता हुआ पाया। उन्होंने उस समूहको घेरा। नवाबने अपने सर्वेसर्वा काजीको वहां भेजा। काजी और शार्दूलसिंहजी वगैरहमें लड़ाई छिड़ गयी। अन्तमें काजी और ग्यारह कायमखानी उस स्थान पर मारे गये और बाकी सब भाग गये।

उसी समयसे शार्दूलसिंहजी और राव शिवसिंहजी कायमखानियोंको नीचा दिखाने और उनकी भूमि उनसे छीन लेनेके लिए प्रयत्नशील हुए। अपने प्रयत्नमें लगे हुए उन्होंने झुंझुणुको संवत् १७८६में कायमखानियों से छीन कर, उस पर अपना अधिकार कर लिया। बादमें फतहपुर पर अपना अधिकार स्थापित करना चाहा, इसके लिए वे उचित अवसरकी बाट जोहने लगे।

महबूबको अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहनेके कारण नवाब सरदारखांसे अन्य कायमखानी सरदार मनमुटाव रखने लगे थे। कायमखानी चाहते थे कि अधिकार महबूबको न मिल कर कामयाबखांको मिले; पर नवाब यह न चाहता था। उसने तो महबूबको ही उत्तराधिकार देना चाहा; यद्यपि वह कायमखानियोंके कहनेसे कामयाबखांको दत्तक-पुत्र बना चुका था।

कायमखानी नवाबसे बिलकुल असंतुष्ट हो गये। चूड़ी और बेसवाके कायमखानियोंने राव शिवसिंहजीके पास जा कर करबद्ध प्रार्थना की कि "आप फतेहपुरका अधिकार कामयाबखांको दिला दें, आपकी सेवामें हम २५ गांव भेंट स्वरूप दे देंगे और फतेहपुरकी राज्य-व्यवस्था भी आपकी सलाहसे की जावेगी।"

कायमखानियोंकी प्रार्थना सुन कर राव शिवसिंहजीने काशलीके कुंवर रामसिंहको बुलवाया रामसिंह और प्रार्थी कायमखानियोंको साथ ले कर संवत् १७८६में राव शिवसिंहजीने फतेहपुर पर चढ़ाई की। भयंकर लड़ाई हुई, दोनों तरफके अनेक वीर आहत हुए और अनेक मारे गये। बादमें नवाबने यह जान कर कि कायमखानियोंने ही शेखावतोंको साथ ले कर चढ़ाई की है वहराव शिवसिंहजीके चरणोंमें आ पड़ा। राव शिवसिंहजीने नवाबके लिए नौ हजार रुपया वार्षिक निश्चित किया और कामयाबखांको गद्दी पर बैठा दिया।

१२—नवाब कामयाबखां

(संवत् १७८६से १७८७ तक तदनुसार सन् १७२९से १७३० तक)

नवाब सरदारखां, जो महबूबको राज्याधिकार देना चाहता था, उससे राव शिवसिंहजीने राज्यका अधिकार संवत् १७८६में कामयाबखांको दिलवा दिया, जो नवाबके छोटे भाई मीरखांका लड़का था और नवाबके द्वारा दत्तक भी स्वीकृत किया जा चुका था।

नवाब कामयाबखां अपनेसे पूर्वके दो नवाबोंकी भांति ही बलबुद्धिसे रहित था। वह राज्यकी व्यवस्था पर ध्यान न दे कर अपने आरामकी तरफ ही विशेष ध्यान देता था। हिताहितकी बातोंकी उसे पहचान न थी।

राव शिवसिंहजीने नवाब कामयाबखांको जब गद्दी दिलवाई थी, तब अपने श्वसुर भावसिंहजी बीदावतको उन्होंने नवाबका कामदार नियत किया था। नवाब कामयाबखांने गद्दी पानेमें कामयाब हो कर भावसिंहजी और चूड़ी, बेसवाके कायमखानियोंको थोड़े दिनों बाद ही अपने राज्य फतहपुरसे निकाल बाहर किया। राव शिवसिंहजीने यह बात सुनी। उन्होंने इसे एक अच्छा मौका समझा। तुरन्त शार्दूलसिंहजीको बुलवाया और उनसे सलाह करके चैत्र-कृष्णा १३ संवत् १७८७को फतहपुर पर दो हजार घुड़सवारोंकी सेना ले कर चढ़ आये।

समस्त कायमखानी, झुंझुणूकी तरह फतहपुरको अपने हाथसे जाता देख कर एकत्रित हो नवाबके पक्षमें आ डटे। केवल बेसवाके कायमखानी नहीं आये।

शेखावतों और कायमखानियोंमें प्रबल युद्ध हुआ। दोनों तरफके योद्धा प्रबल विक्रमसे लड़े, जिनमें कई घायल हुए और कई मारे गये। चारों तरफ रुधिरसे लथ-पथ रुण्ड और मुण्ड ही नजर आते थे।

निदान नवाब सरदारखां घायल हो गया[1] और नवाब कामयाबखां मैदान छोड़ कर भाग गया।[2] जिसके फलस्वरूप कायमखानियोंकी पराजय हुई। उनसे राज्य छीन कर शेखावतोंने उस पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। संवत् १७८७की समाप्तिके रोजसे राव शिवसिंहजी फतहपुरके शासक पद पर आरूढ़ हुए।

उपसंहार

फतहपुर राज्यके हाथसे चले जानेके बाद कायमखानी हार मान कर चुप न बैठ सके। वे राज्यको फिर हस्तगत करनेके लिए कोशिशें कर रहे थे। उन्होंने दिल्ली जा कर तत्सामयिक मुगल बादशाह मुहम्मदशाहके दरबारमें शेखावतोंके विरुद्ध दावा पेश किया, लेकिन शेखावतोंने पहलेसे ही सवाई जयसिंहजी (द्वितीयको) जो कि दरबारके मान्य व्यक्ति थे फतहपुर पर अधिकार-स्थापनकी कथा कह सुनाई थी। जिससे उनकी इच्छित बात ही शाही रजिस्टरोंमें दर्ज हो गयी थी, इससे कायमखानियोंके दावे पर ध्यान न दिया गया। फतहपुर पर राव शिव-सिंहजीका ही अधिकार रहा।

संवत् १८०८में कायमखानियोंने समर्थसिंहजी और चांदसिंहजीकी अनुपस्थितिमें* सिन्धी

---

१ नवाब सरदारखां, आहत दशामें ही हिसार ले जाया गया, जहां पर उसका प्राणान्त हो गया।

२ नवाब कामयाबखां, भाग कर कुचामण (मारवाड़में) चला गया। वहीं अपनी जिन्दगीके दिन पूर्ण होने पर मृत्युको प्राप्त हुआ। उसकी सन्तान आज तक कुचामणमें विद्यमान है।

* समर्थसिंहजी और चांदसिंहजी, जोधपुरके महाराजा अभयसिंहजीके पुत्र रामसिंहकी सहायतार्थ गये हुए जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिंहजीके साथ जानेके कारण अनुपस्थित थे।

और बिलोचियोंकी सेना सहित फतहपुर पर चढ़ाई की और उसे हस्तगत कर लिया। चांदसिंहजीने यह समाचार सुन कर लाडखानियों और अपने मामोंसे सैनिक सहायता ले कर फतहपुरके लिए प्रस्थान किया। सीकरसे बुधसिंहजी ससैन्य आ पहुंचे। फतहपुर पर आक्रमण करके कायमखानियोंके हाथसे वह छीन लिया गया। तदनन्तर फिर संवत १८३१में कायमखानियोंने बादशाह शाहआलम (द्वितीयसे) मदद मांगी। उसने पीरूखां बिलोची और मित्रसेन अहीरको सेना दे कर शेखावाटी पर भेजा। राव देवीसिंहजी शेखावत सेना सहित जयपुरकी सैन्य सहायता प्राप्त कर मैदानमें आ गये। लड़ाई "मांडण" गांवमें हुई। लड़ाई होते-होते अन्तमें पीरूखां धराशायी हुआ और मित्रसेन भाग गया। अपने प्रमुखको भागा देख कर सेना भी पलायित हुई, इस तरह शेखावतोंने विजय पायी।

तत्पश्चात् संवत् १८३६में बादशाह शाह आलम द्वितीयने पुनः एक सेना कायमखानियोंकी सहायता - स्वरूप शेखावटी पर आक्रमण करनेके लिए भेजी। शेखावतोंके पक्षमें जयपुरपतिकी भेजी हुई एक सेना और ससैन्य अलवर नरेश प्रतापसिंहजी आये। दोनों पक्षोंमें घमासान युद्ध हुआ। अन्तमें शाही सेनाकी पराजय हुई और उसका सेनापति निराश हो कर दिल्ली चला गया।

एक सेना फिर कायमखानियोंको सहायतार्थ दे कर संवत् १८३७में बादशाह शाह आलम द्वितीयने शेखावाटी पर भेजी। राव देवीसिंहजी शेखावतोंको एकत्रित कर "खाटू"के मैदानमें आ डटे। युद्ध आरम्भ हो गया। सहस्त्रों मनुष्य दोनों तरफ मारे गये, परन्तु किसी पक्षकी विजय नहीं हुई। दोनों तरफके योद्धा लड़ते-लड़ते बहुत अधिक थक चुके थे, निदान बादशाही सेना दिल्ली लौट गयी और शेखावत अपने स्थानोंको चले गये।

(क) नवाबोंकी हैसियत।

तहपुर पर नवाबोंने संवत् १७८७ तक २७९ वर्ष राज्य किया। इतने कालमें १२ नवाब गद्दी पर बैठे, जिनमें प्रारम्भके ८ तो शक्तिशाली और सामर्थ्यशाली हुए और बादके ४ कमजोर। नवाब अलिफखां (फतहपुरका ७ वां नवाब) सर्वश्रेष्ठ नवाब हुआ।

इन नवाबोंकी हैसियत बहुत ऊंची थी। दिल्ली बादशाहोंके यहां भी ये नवाब ही कहलाए। दिल्ली दरबारमें नवाब ताजखां (२), नवाब अलिफखां और नवाब दौलतखां (२) बराबर जाते रहे। अपने समसामयिक सम्राटोंकी ओरसे इन्होंने अनेक लड़ाइयां वीरतापूर्वक लड़ीं और उनके लिए सम्मान पाया।

(ख) नवाबोंका राज्य-विस्तार।

आजकी शेखावाटी नवाबोंके शासन-कालमें फतहपुरवाटी और झुंझुणुवाटीके नामसे प्रसिद्ध रही है, बादमें परम प्रतापी राव शेखाजीके नामसे इसका नाम शेखावाटी पड़ गया।

इसका नवाबी शासन कालका भूमि-विस्तार कितना था, इस सम्बन्धमें यथेष्ठ जानकारी मुझे नहीं हुई; यद्यपि इस बारेमें मैंने काफी छानबीन भी की; पर जितना, इतिहासोंमें इस सम्बन्धका उल्लेख मिलता है, उससे यह तो भली भांति अनुमान लगाया जा सकता है कि फतहपुर वाटी और झुंझुणूवाटोकी भूमि दूर तक विस्तृत थी जोधपुरमें सम्मिलित झाटोदकी पट्टीके ५७ गांव और बीकानेरमें सम्मिलित फतहपुर पट्टीके १२० गांव * जिनमें रतनगढ़ और चूरू भी हैं, नवाबोंके शासनकालमें फतहपुरवाटीके ही अंतर्गत थे।

परिशिष्ट नं० ४

क्यामखानी नवाबोंके बसाये हुए गाँव

१. फतहखाँने फतहपुर बसाया (रासाके अनुसार सं० १५०८में)।

२. मुहम्मदखाँने झुमा जाटकी सलाहसे झुंझणू बसाया (विशेष आबाद किया)।

३. नवाब जलालखाँने जलालसर बसाया जो फतहपुरके दक्षिण ३ कोस पर है। इसने पशुपक्षीके लिए १२ कोस घेरेका बीहड़ रखा जो आज भी है।

४. नवाब दौलतखाँ (१) ने दौलताबाद गाँव बसाया जो फतहपुरका एक मोहल्ला है।

५. नाहरखाँने नाहरसर गाँव बसाये, ये फतहपुरके उत्तर दक्षिणमें ४-४ कोस पर हैं।

६. फदनखाँने फदनपुरा गाँव बसाया जो फतहपुरके ३ कोस उत्तरमें है।

७. ताजखाँ (२)ने ताजसर गाँव बसाया जो शहरसे ३ कोस पर है।

८. अलिफखाँने अलिफसर गाँव बसाया जो फतहपुरसे दक्षिण पूर्वमें ५ कोस पर बेषय ग्रामके पास है।

९. दौलतखाँने दौलतपुरा गाँव बसाया जो वर्तमानमें बीकानेर राज्यमें है।

१०. सरदारखाँने सरदारपुरा बसाया।

११. दीनदारखाँने दीनपुरा झूंझणूके रास्तेमें बसाया।

नवाबोंके लड़कोंके नामसे भी कई गाँव बसाये गये हैं।

---

* फतहपुर पट्टीके ये गांव राव लूणकरणने नवाब दौलतखां (१) से ले लिये थे। इस बारेमें अधिक जानकारीके लिए इसी पुस्तकके तीसरे खण्डमें "नवाब दौलतखां (१)" शीर्षकके अन्तर्गत देखिए।

१. ताहिरखाँके नामसे ताहिरपुरा।

२. रसीदके नामसे रसीदपुरा।

फतहपुर किला नवाबोंका स्मारक है ही। अन्य स्मारक इस प्रकार हैं –

१. नवाब फतेहखाँ (१) वीर सेनापति बहुगुनाको जालके पेड़के नीचे दफनाया। वहाँ उनकी कब्र आज भी है, पासमें कुआ है, जिसको बोहगुणका कुआ कहते हैं।

२. दौलतखाँ (१की) कब्र किलेके नीचे दक्षिणमें आज भी हिन्दू मुसलमान दोनोंसे पूजित है।

३. नवाब अलीफखाँके दफन स्थान पर दौलतखाँने[१] मकबरा बनाया जो उल्लेखनीय व दर्शनीय-स्मारक फतेपुरसे पूर्वकी ओर है।

४. सं० १६७१में अलिफखाँके समय दौलतखाँकी देखरेखमें नागौरके शेख महमूदने बड़ी उल्लेखनीय[२] बावड़ी बनाई जो आश्चर्यजनक व दर्शनीय है।

५. सरदारखाँ (द्वितीयकी) रखेलो तेलनका महल किलेमें आज भी तेलनके महलके नामसे प्रसिद्ध है।

६. जलालखांने बीहड़ १२ कोसकी रखी जिसमें पशु चरते हैं।

परिशिष्ट न० ५

क्यामखानी दीवानोंका वंश-वृक्ष

१. दीवान क्यामखाँ (सं० १४४१से ७५)

१. ताजखाँ, २ मुहम्मदखाँ, ३ कुतबखाँ, ४ इखतियारखाँ, ५ मोमनखाँ।

२. (सं० १४७५-१५०३)

१. फतिहखाँ, २ रूका, ३ फखरदी, ४ मोजन, ५ इकलीमखाँ, ६ पहाड़ा।

३. (१५०३-३१.)

१. जलालखाँ, २ हैबतसाह, ३ मुहमदसाह, ४ असदखाँ, ५ हरियासाह, ६ साह मनसूर ७ सेख सलह, ८ बलों, ९ संग्रामसूर, १० हेतम।

---

१ इसका परिचय व चित्र फतहपुर परिचयमें प्रकाशित है।

२ इसका परिचय व चित्र फतहपुर परिचयमें प्रकाशित है।

४. (१५२१-४६)

१. दौलतखाँ, २ अहमदखाँ, ३ नूरखाँ ४ फरीदखाँ, ५ निजामखाँ, ६ पहाड़खाँ, ७ बाड़खाँ
८ दाउदखाँ, ९ अबन, १० महमदसाह।

५. (१५४६-७०)

१. नौहरखाँ, २ होबनखाँ, ३ बाजिदखाँ।

६. (१५७०-१६०२)

१. फदनखाँ, २ बहादरखाँ, ३ दिलावरखाँ।

७. (१६०२-९)

१. ताजखा, २ पेराजखाँ, ३ दरियाखाँ।

८. (१६०९-२७)

१. महम्मदखाँ, २ महमूदखाँ, ३ सेरखाँ, ४ जमालखाँ, ५ अलाखाँ, ६ मुजफरखाँ, ७ हेबतखाँ,
८ हबीबखाँ।

९. (१६२७-८३)

१. दौलतखाँ, २ न्यामतखाँ, ३ सरीफखाँ, ४ जरीफखाँ, ५ फकीरखाँ।

१० (१६८३-१७१०)

१. ताहरखाँ, २ मीरखाँ, ३ असदखाँ।

१. सरदारखाँ।

११. (सं० १७१०-३७)

फदनखाँ (क्यामरासा इसकी विद्यमानतामें बना) यह असमयमें स्वर्गवासी हो गया। इससे सरदारखाँने अपने भाई दीनदारखाँको राज्याधिकार दे दिया।

फतहपुर परिचय ग्रन्थमें वंश वृक्ष दे दिया है; उसमें कुछ नामान्तर व अधिक नाम ये हैं–

१. क्यामखाँका अहमदखाँ नामक एक और पुत्र बतलाया है। मोमनखाँको मोहनखाँ लिखा है।

२. दौलतखाँ (१के) पुत्रोंके नामोंमें नं० ७-९-१० नामोंके बदले १ बहारखाँ, २ एमनखाँ, ३ दरियाखाँ है।

३. नाहरखाँके पुत्र होबनखाँका नाम जोबनखाँ लिखा है।

४. दौलतखाँके पुत्र फकीरखाँका नाम फकरुखाँ लिखा है।

५. ताहरखाँके पुत्र मीरखाँका नाम महरखाँ दिया है।

६. सरदारखाँके बाद उसका भाई दीनदारखाँ दीवान हुआ, राज्यकाल (सं० १७३७से-६०)।

———०———

क्यामखां रासा

अथवा

रासा श्री दीवान अलिफखांका

॥ दोहा ॥ सिरजनहार बखानिहौं, जिन सिरज्यौ संसार ।
खं भू गिर तर जल पवन, नर पस पंछी अपार ॥१॥
येक येक ते जात बहु, कीनी है जग मांहि ।
अनंत गोत कवि जांन कहि, गनती आवत नांहि ॥२॥
दोम महंमद उच्चरो, जाकैं हितकै काज ।
कहत जांन करतार यहु, साज्यौ है सब साज ॥३॥
कहत जांन अब बरनिहौ, अलिफखांनकी जात ।
पिता जान बढ़िनां कहौं, भाखौं साची बात ॥४॥
अलिफखांनु दीवानकौं, बहुत बड़ौ है गोत ।
चाहुवांनकी जोटकौ, और न जगमें होत ॥५॥
अलिफखांनकै बंसमें, भये बड़ै राजांन ।
कहत जांन कछु येक हौं, सबकौं करौं बखान ॥६॥
बात अलिफखांकी कहौं, सब पाछै कहिं जांन ।
किंहि बिधि जीये जगतमैं, कैसैं मरे निदान ॥७॥
बड़े बड़े साके कीये, अलिफखांन जग मांहि ।
पातसाहकै कामकौं, ज्यों पुनि राख्यौ नांहि ॥८॥
नूर महंमदको रच्यो, पहले सिरजनहार ।
ताहीते कवि जांन कहि, भयो सकल संसार ॥९॥
तौ नभ रबि तारे ससि, सुरग नूर तें कीन ।
रचे फिरसते नूरके, करे नबी आधीन ॥१०॥

धर गिरवर सागर रचे, पाछे दानव देव ।
अंत रचे मानस अलख, कहत न आवहि भेव ॥११॥
जबहि भयौ करतारको, मनुष रचनको चाइ ।
तब पहले [जिनकौ] कीयो, सुनहु कथा चित लाइ ॥१२॥
कहत जांन कवि जानियो, ग्रंथनिको मत गांव ।
माटीतें पैदा भयौ, तातें आदम नांव ॥१३॥
मांनस भये जहांनमें, ते सगरे कहि जांन ।
आदम पाछै आदमी, हेंदू मुसलमांन ॥१४॥
येक पिंड इन दुहुंनकौ, नां अन्तर रत चांम ।
पै करनी नाहिन मिलै, तातें न्यारे नांम ॥१५॥
बातें बहु संतत भई, गनती आवत नांहि ।
आदम बरस सहस लौं, जीयो जगती मांहि ॥१६॥
आदम पैगंबर भयो, प्यार कीयो करतार ।
पहले बैकुंठ राखकै, फिर पठयो सैंसार ॥१७॥
जिते पुत्र आदम भये, सबमै टीकौ सीस ।
हूर बरी हूवो नबी, दया करी जगदीस ॥१८॥
नौसै बारह बरस लौ, सीस रह्यौ जग मांहि ।
सेवा करताकी करी, चुख अरसायो नांहि ॥१९॥
भयो सीसकै जांन कहि, बडड़ो पुत्र उनूस ।
निस बासुर करतारकी, सेवा करी अदूस ॥२०॥
नौसै पैंसठ बरस लौं, भयो न जगतें दूर ।
याते उपज्यो जगतमें, तरवर तरल खजूर ॥२१॥
भयो जु पुत्र उनूसकैं, नांव ताहिकी नांन ।
नौसै बासठ बरस लौ, सुखरसु कीये जहांन ॥२२॥
नीके मंदिर कोट गढ़, उपजै जगती मांहि ।
सो याहीते जांन कहि, पहले जानत नांहि ॥२३॥

ताको महलाइल सुत, रूपवंत कहि जांन ।
वाकौ देखन आइ हैं, मिलि मिलि सकल जहांन ॥२४॥
यजद ताहि नंदन भयो, दयो न करता ग्यांन ।
अपने घरमंहि छांडकै, पंथ चलायो आंन ॥२५॥
भयो यजदकै जांन कहि, पैगांबर इदरीस ।
डंकरि कैफिरि यों करै, ये चरित्र जगदीस ॥२६॥
साठ पंच अरु तीन सौ, बरस रह्यौ जग मांहि ।
अजहूं जीवै सुरगमें, मरै प्रलै लौ नांहि ॥२७॥
ताकौ सुत मसतूस लख, धर्म छाडि जिन दीन ।
लमक भयो ताको नंदन, बहु पुनि सेवा हीन ॥२८॥
ताकै नूह नबी भयो, नौ सै बरस पचास ।
धरम पंथ सब जगतमें, नीकैं कर्यो प्रकास ॥२९॥
प्रगट बात है नूहकी, सब ग्रन्थनिकै मांहि ।
मैं ताते कबि जांन कहि, यामैं आंनी नांहि ॥३०॥
तीन भये सुत नूहकै, सुनि लै तिनकौ नांम ।
लघु याफस मधि हांम है, बडड़ौ जांनौ सांम ॥३१॥
अरबी रूमी सांमकै, पुनि ईराक खुरसांन ।
अरबी ताई अस अरी, अजदी अरु मसरांन ॥३२॥
अरां अरमंन पारसी, भये जु नबी जहांन ।
सकल सामकै बंसमैं, अरु चहुवांन पठांन ॥३३॥
और हांमकै बंसमैं, येती जात बखांनि ।
उजबक हिंदी बरबरी, हबसी कुवती जांनि ॥३४॥
याफस ते सकलाबके, परतासी यों मांन ।
फिरंग रूस चगता तुरक, चीमां चीन पिछांन ॥३५॥
साम बड़ो सुत नूहको, धरम पंथ गहि लींन ।
इमन भयो ताको नंदन, कोइ बात न हींन ॥३६॥

उज भयो घर इरमकैं, ताकैं भयौ समूद ।
वै पुनि ज्वाला कालकी, जरि निबरे ज्यो ऊद ।।३७।।
वाकैं राजा आद हुव, ताके पुत्र अनाद ।
तातें भयो जुगाद जग, तिहं नंदन ब्रह्माद ।।३८।।
मेर भयो ब्रह्मादकै, अरु मंदिर घर तास ।
मंदिरकै घर जांन कहि, उपज्यौ सुत कैलास ।।३९।।
वाकै भयौ समुद्र सुत, जाके उपज्यौ फेंन ।
ताकैं बसिग अतुलि बल, संम न करैं बलि बैंन ।।४०।।
बसिगको सुत राह है, है साहंसीक मल सूर ।
दुर्जनकौं ऐसैं गहत, राह गहत जिम सूर ।।४१।।
रावन है सुत राहकौ, धुँधमार सुत ताहि ।
भयो चक्रवै जगतमैं, उपमा दीजै काहि ।।४२।।
परगट सकल जहानमैं, करिहौं कहा बखांन ।
उदै अस्त लौं जांन कहि, धुँधमारकी आंन ।।४३।।
प्रगट्यो तिहि मारीच सुत, प्राची और प्रतीच ।
बदन किरन यों जगमगै, जैसे सूर मिरीच ।।४४।।
वाकैं राजा जमदगिन, बिधु सुमिर्‌यो करि चाइ ।
परसराम तिहं सुत भयो, चार चक्कको राइ ।।४५।।
परसरामके जुद्ध सब, बरने नाहिंन जाहि ।
जो बरनौं तौ जांन कहि, लिखनंहार अर नांहि ।।४६।।
परसराम सुत सूर है, ताकैं बछ बड़ जोत ।
चाहुवान है जगतमैं, ते सब बछ सगोत ।।४७।।
चाइ भयो सुत बछकौ, बिधु सुमिर्‌यो करि चाइ ।
चाहुवांन तिहि सुत भयो, करता आयो भाइ ।।४८।।
चाहुवांन यातें कह्यो, चहूं कूटमें आंन ।
सगरै जंबू दीपमैं, संम कौ गोत न आंन ।।४९।।

संभर लयो निकास जिहं, ताकी संम सर कौन ।
सब ही कोउ खातु है, चाहुवांनको लौंन ॥५०॥
संभरकी लौंनी धरा, तित उपजे कहि जांन ।
लौन हि लाज नं मारि है, हैं जित लौं चहुवांन ॥५१॥

॥ **सवैया** ॥ देवनमें देवराज, गजनिमैं गजराज,
पंछी पंछराज, ग्रहनिमैं तपु भांनकौ ।
सरितामें ज्यों समंद, बोहिथ नौका निब्रिद,
उडिनमें इंद, पत्रनिमें भोग पांनकौ ।
गिरिनमें सुमेर, दरगाहनिमैं अजमेर,
खाननमें मांन, जैसौ कंचनकी खांनकौ ।
फूलनि मधि गुलाल, चूनियनि जैसौ लाल,
राइनमें तैसो गोत, चक्रवै चौहांनकौं ॥५२॥

॥ **दोहा** ॥ कलप बिछ चहुवान है, जाकै अनगन साख ।
जो हौं जानौ जांन कहि, सु तो सुनाउ भाख ॥५३॥

॥ **सवैया** ॥ क्यामखांन देवरे, सीसोदीये भदोरिये,
चितोरीये बाघोर मल, खीची निरबान जू ।
चाहिल मोहिल माहो, दूगर बालेसे जौर,
सोनगरै गिल खोर, मांदलेचे मांन जू ।
गुहिलौत उमंट, साचौरे गोधे राकसिये,
हाले झाले दाहिमैं कहि [कवि] जांन जू ।
गूंदल बालोंत हाडे छोकर घंघेरे खैल जू
जेती सब साखनिकौ मूल चहुवांन जू, ॥५४॥

॥ **दोहा** ॥ बारोरिये धुकारनें, चीबे गोवल वाल ।
हुल तावर डल होर पुनि, चाहुवांनकी डाल ॥५५॥
पंड सूर आसोफ पुनि, पीपारे कहि जांन ।
गोतम दागी अरु मरिल, सबन मूल चहुवांन ॥५६॥
चाहुवानकै बंसमैं, भये छत्रपति राइ ।
तिनकी कथान जै कथी, नांव कह्यौ समझाइ ॥५७॥

राज कीयौ है दिल्लीमैं, मानिकदे चहुवांन ।
दोइ बरस षट मास लौं, सतरह दिन कहि जांन ॥५८॥
पाछैं दिल्लीमैं भयो, देवराज चहुवांन ।
तीन मास द्वै बरस लौं, सत्रह दिन कहि जांन ॥५९॥
पाछैं दिल्लीमें भयौ, रावलदे चहुवांन ।
सात द्योस नौ बरस लौं, राज कीयौ कहि जांन ॥६०॥
पाछै दिल्लीमें भयौ, देवसीह चहुवांन ।
तीन मास षट बरस लौं, राज कीयौ कहि जांन ॥६१॥
येक मास बाईस दिन, दस बरसनि स्योंदेव ।
राज कीयौ है दिल्लीमैं, सब मिलि कीनी सेव ॥६२॥
वा पाछै बलदेव है, राखन कुलकी लाज ।
पंच वरस दिन एक दस, करयौ दिलीमैं राज ॥६३॥
प्रिथीराज पाछै भयौ, दिल्लिपति चहुवांन ।
ग्यारह दिन दुने बरस, रही जगतमैं आंन ॥६४॥
दूब काबिली दिल्लीमैं, लई मंगाइ मंगाइ ।
घरी घरी आवत हरी, चरी तुरंगनि खाइ ॥६५॥
प्रिथीराजकी बरनना, मोपै करी न जाइ ।
साके गनना हि न सकौ, कहा कहौं समझाइ ॥६६॥
और बंस चहुवांनकै, राजा भये अपार ।
बीसल आना जांन कहि, हठी हमीर मुछार ॥६७॥
जिती जात रजपूतकी, सगरे हिंदसतान ।
सबमें निहचै जानियो, बड़ौ गोत चहुवांन ॥६८॥
चाहुवांन सुत मुनि अरु, मुनि मानिक जैपाल ।
येक भयो जोगी अमर, तीन भये भोवाल ॥६९॥
मानिक कुल प्रिथीराज हुव, सोमेसुरको अंस ।
जिते राठ चहुवांन है, ते अरिमुनिकै बंस ॥७०॥

चाहुवांन जब चलि गयो, मुनि बैठ्यो उहि ठौर ।
कूचौरैहूमें रह्यौ, केतक दिन सिरमौर ॥७१॥
मुंनि राइकै जानियो, भयो राइ भोपाल ।
कह कलंग ताकै भयौ, सूरा गोत गुवाल ॥७२॥
घंघरान ताकै भयौ, कीनौ घांघू गांव ।
अपनी भुज वर जातमैं, नीकौ कीनौ नांव ॥७३॥
चढ्यौ अहेरै येक दिन, घंघ राइ कहि जांन ।
म्रिग छौना टौनां मनौ, देख्यौ चरत उद्यान ॥७४॥
चौंप भई जिय राइकैं, पकरौं दै गर चाप ।
सब दल ठाढ़ौ छाड़िकैं, गयौ अकेलो आप ॥७५॥
म्रगसावक तब भजि चल्यौ, पाछै धायो राइ ।
घंघ [राइ] तुरंग पुनि, चले चढ़े रथ बाइ ॥७६॥
बहुत बार जब ह्वै गई, राजा आयो नांहि ।
तब सेवक सब बिकल ह्वै, सोधत है बन मांहि ॥७७॥
बन बन सेवक फिरत है, तन मन भैंट न चाहि ।
चिंता अंन अंन भांतकी, अनगन व्यापति ताहि ॥७८॥
सुनहु बात अब राइकी, चित अति बढ़्यौ उमंग ।
आगै पाछै जात हैं, निकट कुरंग तुरंग ॥७९॥
जात जात कवि जांन कहि, लोह गिरकै पास ।
छलकै छौनां छपि गयो, भयो नरेस उदास ॥८०॥
सोधि रह्यो नाहिन लह्यो, तकी ब्रिछकी छांहि ।
नैन सजल उर धकधकी, चिंत बढ़ी चित मांहि ॥८१॥
सर्ले तर्ले तरकाज तित, तातर निर्मल कुंड ।
तहां अपछर झुंड है, हनैंछी ससितुंड ॥८२॥
चार अपछरा चार छबि, करत कुंड असनांन ।
पांनिकौ पांनिपु चढ़ी, अंगलमै कहि जांन ॥८३॥

॥ सवैया ॥ करत सनांन, सर रूपकी निधांन,
बांम अति अभिरांम, ग्रैसी उपमां बखांनी है ।
अंगकी झंमक दंमकनि ग्रैसी लागति है,
असित घटामैं दामनीसी चमकांनी है ।
कै तौ ग्रैसी भांति तंन झांतिकी है सोभा देत,
ससि प्रतिबिंब देखियत मधि पानी है ।
मानहुं अगिन झाई, जलमांहि प्रगटाई,
कै तौ बड़वानल सलिल भभकानी है ॥८४॥

॥ दोहा ॥ बसतर छाडे पाल सर, न्हावन पैठी बांम ।
लीना घंघ उचाइकै, पूजे मनसा कांम ॥८५॥
बसन लेत राजा तक्यौ, परी परी मुरझाइ ।
सूर छपें ज्यौं नीरमैं, कंवल रहै कुमिलाइ ॥८६॥
द्रिग आंसू उर धकधकी, बकी लगी मुख रांम ।
बसतर बिना न उडि सकै, रही उघारी बाम ॥८७॥

॥ सवैया ॥ अंबर देहु हमारे, जात उघारी हहा रे !
खरी हम लाज मरै, दुख पावै महा रै ।
जीभ थकी बकतें,तुमसौं सुनतें,चुख कांन तिहारे न हारे ।
आवै सनांनकी दीजिये जांनन यामै कहौ तुम पुंन कहारे ।
ठाढ़ी रही जल पोत कीये हम अंबर देहु हमारे हहारे ॥८८॥

॥ दोहा ॥ तब हि घंघ उनिसौं कह्यौ, सुनि लै सांची बात ।
येक बरौ जौ चहुंनिमै, तौ ढापौ तुम गात ॥८९॥
कहै अपछरा राइसौं, ग्रैसी हुई न होइ ।
हम तुममैं कैसे बनें, जात गोत ही दोइ ॥९०॥
तूं मानस हम अपछरा, कैसें बनिहै बात ।
अबलौं काहू नां तके, येक संग दिन रात ॥९१॥
राइ कह्यौ सुनि अपछरा, यहु समझौ चित मांहि ।
जब हिं पीति तन ऊपजै, जात गोत सुधि नांहि ॥९२॥

जौ लौं जीउ जगतमैं, हां तो ह्वै हो नांहि ।
जौ तुम जिय तौ अंग हूं, तुम घट तौ हौं छांहि ॥९३॥
कै तुम लेहु मिलाइ मुहि, उरत फिरौं तुम मांहि ।
कै तुमकौ मानस करौं, बसतर दैहों नांहि ॥९४॥
काहेकौ बिललातु हौ, मया न आवत मोहि ।
मन बदलै बसतर लयै, सो कैसै द्यों तोहि ॥९५॥
सोच कर्यो चित अपछरा, बसतर नाहिंन देत ।
जो लौं हममें देखि कै, येक हि ना चुनि लेत ॥९६॥
बसतर नाहिंन देत है, कीने जतन अनेक ।
सब जलमें कोलौं रहै, दैहौं याको येक ॥९७॥
तब हि कह्यौ सुनि राइ जू, बसन हमारे देहु ।
जासौं उरझे नैनं तुम, येक बीन सो लेहु ॥९८॥
सबमें नान्ही बैंसकी, बीन लइ तब राइ ।
बनमें जल प्यासै लह्यौ, फूल्यौ अंग न माइ ॥९९॥
बोल बचन कर राइनै, बसतर दीने आनि ।
चारौं आइ घंघपै, बनि बनि बानिक बानि ॥१००॥
येक दई तब राइकौ, रीति भांति करि ब्याह ।
तबहि संग करि लै चल्यौ, पूजी चितकी चाहि ॥१०१॥
लही सुहारी फल लहत, कहत जांन परबीन ।
धावत पाछैं हरनकै, हरनंछी बिध दीन ॥१०२॥
तीन जंने सुत अपछरा, कन्ह, चन्द पुनि इंद ।
येक येकतें सरस हैं, तीनों भये नरिंद ॥१०३॥
चंदवार चंदे करी, इंद करी इंदोर ।
कन्हर देव सुजान कहि, रहे पिताकी ठौर ॥१०४॥
घंघ रान पुनि अपछरा, आनंद कीये अपार ।
अंत भये बस कालकै, यहै रीति संसार ॥१०५॥

अंत कलाही कन्हपै, आइ छिड़ाई ठौर ।
तब राजा अमरा भयो, चाहुवांन सिरमौर ॥१०६॥
अमरा अजरा सिधरा, पुनि बछरा ये चार ।
कन्हरदेके पुत्र हैं, प्रगट भये संसार ॥१०७॥
अजराते चाहिल भयो, सिधरा जौर जहांन ।
बछरातें मोहिल भये, अमरेते चहुवांन ॥१०८॥
अमरा सुत जेवर भयो, राज कर्यो जग मांहि ।
अंत मर्यो या जगतमें अमर अजर को नांहि ॥१०९॥
ताकै गूगा बैरसी, सेस धरह ये चार ।
राज कर्यो केतक बरस, अंत तज्यौ संसार ॥११०॥
गूगैकै नानिग भयौ, सेस सु गयौ अऊत ।
कहत जांन भोथर भरह, भये धरहके पूत ॥१११॥
उदराज सुत बैरसी, ताको सुत जसराज ।
तिह सुत केसोराइ है, समरथ सगरैं काज ॥११२॥
बिजैराज हरराज जुग, केसोनंद बखांन ।
है संतत हरराजकी, पर्वतमै कहि जांन ॥११३॥
बिजैराजकै जांन कहि, भयो पदमसी पूत ।
प्रिथीराज ताकै भयौ, राज कीयो अदभूत ॥११४॥
लालचंद ताकै भयौ, वाकै अजै जु चंद ।
याकै सुत गोपाल है, हरनहार दुख दंद ॥११५॥
तिह सुत उपज्यौ जैतसी, समसर करै न कोइ ।
पुंनपाल ताकै भयो, पुंननिहि सुत होइ ॥११६॥
मूलराज मल असरथ, दौंका सांगा जानि ।
रातू पातू और महियल, सुत जैत बखानि ॥११७॥
पुंनपालकौ रूप है, रावन है सुत ताहि ।
तिहुंनपाल याकै भयौ, लाज गोतकी ताहि ॥११८॥

तिहुंनपाल सुत ऊपज्यो, मोटेराइ सकाज ।
निस बासुर सुखसौं कीयौ, ददरेवैमें राज ॥११६॥
ताकें उपज्यौ करमचंद, प्रकट भयो सब ठांव ।
तुरक करचौ पतिसाहजू, धरचो क्यामखां नांव ॥१२०॥
मोटे राके चार सुत, क्यामखांन भोपाल ।
और जैनंदी सदरदी, हिन्दू रह्यौ जगमाल ॥१२१॥

श्री दीवान क्यामखान पुत्र—ताजखां १, महमदखां २, कुतुबखां ३, इखतियारखां ४, मोमनखां ५ ।

क्यामखांनको बखांन

॥ चौपाई ॥ करमचंदकी बरनौं बाता, कैसें कीनौ तुरक विधाता ।
कुंवर करमचंद खेलत डोलत । अधिक सिरिस्ट बचनमुखबोलत॥१२२॥
येक द्यौं सवहु चढ़चो अहेरैं । भाई बंधव हे बहु नेरैं ।
साबर हरंन रोझ बहु पाये । गहिबेकौं सबहि ललचाये ॥१२३॥
आप आपकौं सब उठि धाये । भूलि परे बनमें भरमाये ।
सबै अहेरैंके मदमाते । आप आपको डोलैं ह्वातै ॥१२४॥
करमचंद इक बिरछ निहारचौ । बैठ्यौ जाइ हुतौ अति हारचौ ।
घोरा बांधि डारि सकलात । पौढ्यौ कुंवर दैन सुख गात ॥१२५॥
आई नींद गयो तब सोइ । ढरि गइ छांह दुपहरि होइ ।
फेरोसाह दिली सुलतांन । चारौ चकमैं जाकी आंन ॥१२६॥
उतरै हे हिसारमें आइ । इक दिन चढ़े अहेरै चाइ ।
आवत आवत उहि ठा आये । कुंवर बिरछतर सोवत पाये॥१२७॥
सकल बिरछ छइयां ढरि गई । वा तरवरकी दूरि न भई ।
पातसाह अचरजकी बात । देखि देखि अति ही भरमात ॥१२८॥
नासिर सैद बुलायौ पास । जो देखौ सो करचौ प्रकास ।
अचरज रहे सैद पतिसाहि । महापुरुष कोउ यहु आई ॥१२६॥
कह्यौ जगाइ पाइ इह लागै । सूते भाग हमारे जागै ।
साहस करिकै कुंवर जगायौ । हिंदू देख बहुत भरमायौ ॥१३०॥

हिंदू मांहि न होइ करामत । इन कैसै कै पाई न्यामत ।
सैद कह्यौ ऐसी जिय आवै । अंत पंथ तुरकनि यहु पावै ॥१३१॥
पूछयौ तब हि कहा तुव जात । रहत कहां साची कहु बात ।
ददरेवौ रहिबेको ठाँव । मोटेराव पिताको नांव ॥१३२॥
बंस हमारौ है चहुवांन । नाम करमचन्द कहत जहांन ।
पातसाहनें निकट बुलायौ । बहुत प्यारसौं गरें लगायो ॥१३३॥
कह्यो संग मो चलि चहुवान । दै हौ तोकौं आदर मांन ॥१३४॥

॥ दोहा ॥ कर्मचंदते फेरिके, धरचो क्यामखां नांम ।
पातसाह संगहि लये, आयो अपनी ठांम ॥१३५॥

॥ चौपाई ॥ तब हि सैद नासर यों कह्यौ । तुम मेरे भागनि यहु लह्यो ।
मोकौं देहु जु याहि पढ़ाउ । तुम लाइक करि तुमपैं लाऊं ॥१३६॥
पातसाह भाख्यो यहु भाख । पायौ रतन जतन सौं राख ।
क्यामखांन संग चढ़े अहेरै । ते सब गये आपुनै डेरै ॥१३७॥
करमचंद घर आयो नाहीं । रोर परी ददरेवै मांही ।
येक परेवा सैद पठायो । ये ते मांहि लैन वहु आयो ॥१३८॥
मोटाराजा गयो हिसार । पातसाह कीनौं बहु प्यार ।
कह्यो करमचंद मोकौं देहु । जो भावै सो बदलौ लेहु ॥१३९॥
तुरक भयेकी करिहु न चिंत । याकौं राखो ज्यो सुत मिंत ।
याकौं करिहौ पंच हजारी । साँचु कहत हौं बांह हमारी ॥१४०॥
कर तसलीम कह्यो यों राइ । दिलीपति जो करे सु न्याइ ।
जो सेवा करिहैं सो बढ़िहैं । सोई फूल महेसुर चढिहैं ॥१४१॥
पातसाह देकैं सरपाव । बिदा करयो डेरैंको राव ।
पातसाह दिल्लीकौं धायो । क्यामखांनु तब सैद पढ़ायो ॥१४२॥
द्वादस हे मीरांके नंदन । तिनमें क्यामखाँनु जग बंदन ।
येक ठौर पढ़न ये जांहि । भोरे लरिहैं आपुन मांहि ॥१४३॥
रोवत लरत येक दिन जात । बालक आपुन मांहि रिसात ।
कुतुब नूरदी नूरजहाँन । हांसीते बैठे हैं आंन ॥१४४॥

तक्यो क्यामखां जात उदास। तबहिं बुलाय बिठायो पास।
पीरसुंबचन तब ही उच्चरैं। तैं बाबा काहे द्रिग भरे ॥१४५॥
मारौं थाप चबाऊँ लौंन। धनी बावनी मारै कौंन।
नेंबू औरगंदौरा आंन। दये नूरदी नूरजहांन ॥१४६॥
लये क्यामखां तब मन आछैं। नेंबू आदि गंदौरा पाछै।
कह्यौ रीत यहु ह्वै इन गोत। खाटे ह्वै फिर मीठे होत ॥१४७॥
केतक दिन पढ़तैं ही गये। क्यांमखानुं पढ़ि पूरे भये।
सैद कह्यौ अब सुनंत करावहु। करहु नमाज दीनमें आवहु ॥१४८॥
तब क्यामखान बिनती कीन। मेरौ हूं मंन चाहत दीन।
पै यहु चिंत मोहि चित्त मांहि। हमसों साक करे को नाहीं ॥१४९॥
नासिर सैद करांमत पूरन। जाको कह्यौ होत है दूरन।
यहु चिंता जिन चितकौं देहु। मेरे बचन मांनिकै लेहु ॥१५०॥
बड़े बड़े जगु ह्वै हैं राइ। ते तनया देहैं करि चाइ।
ह्वै है जोध मंडोवर राइ। बहु डोला घर देइ पठाइ ॥१५१॥
ह्वै बहलोल दिली सुलतांन। दैहै तनया निहचै मांन।
मीरांकै मुख निकसै बैंन। ते सब भये अैन ही मैंन ॥१५२॥
तबही दीनमें आयौ खान। निर्मल मो मन मुस्सलमांन।
जब सब बातिन निर्मल पायो। तब मीरां दिल्ली ले धायो ॥१५३॥
पातसाह देखत हरसाये। मनसब देकै खानं बढ़ाये।
पातसाह मीरांको प्यार। दिन दिन खांसो बढ़त अपार ॥१५४॥
मीरांजी जब रोगी भये। पातसाह पूछनकौं गये।
तब मीरांजी अैसें भाख्यौ। क्यांमखानू मैं सुत करि राख्यो ॥१५५॥
जौं कबहू मेरो ह्वै काल। याकौं दीजहु मनसब माल।
मेरैं पूत सपूत न कोई। जिनते सेव तुम्हारी होई ॥१५६॥
पातसाह भाख्यो जूं नीकै। क्यामखानु है लाइक टीकै।
पातसाह उठि डेरै आये। तब मीरां सब पुत्र बुलाये ॥१५७॥

कह्यो सुंनहुं तुम सगरे भाई। क्यामखानुंकौ दई बड़ाई।
यहु तुममें कीनौ सिरमौर। याकौ समझौ मेरी ठौर ।।१५८।।
क्यामखानुंसौं ये सिख भाखी। इनकौं बहुत प्यारसौं राखी।
सिखदे मीरां कलमां कह्यौ। या कलमेंको अमर न रह्यौ ।।१५९।।
मीरां भये जबहि बस काल। लह्यो क्यामखां मनसब माल ।।१६०।।

।। दोहा ।। पातसाह किरपालु ह्वै, दै हय गय सिरपाव।
दई बावनी क्यामखां, कर्यो बड़ौ उमराव ।।१६१।।
ठटा लैंन जौं ऊपज्यौ, पातसाह अभिलाष।
क्यामखानुंकौ मया करि, चले दिलीमें राख ।।१६२।।
फौजदार करि क्यामखां, सौंपी दिल्ली ताहि।
आपुन दलबल साजिकै, चले ठटाकौं साहि ।।१६३।।
देस देस बतिया चली, पातसाह घर नांहि।
बिना क्यामखां और को, रह्यो न दिल्ली मांहि ।।१६४।।

क्यामखांन मुगलनिसौं युद्ध करत है

।। दोहा ।। मुगल बिलायत ते चले, हिंद लैनके चाइ।
छलके बलसौं जांन कहि, दिल्ली घेरी आइ ।।१६५।।
सुनत बात यहु परजर्यो, क्यामखानुं चहुवांन।
सौंह आये लरनकौं, दै सतसौ नीसान ।।१६६।।
सुभट सबद सुनि ऊससैं, कादूर तन थहरान।
धौं धौं धौं धौसा करै, धौकत पावहु जान ।।१६७।।

।। सवैया ।। बहु सैंन बनाइ चढ्यो चहुवांन, निसान लये अरि मारनकौ।
अब जैसे गजिंद नरिंद चल्यो, विटपी खल मूर उखारनकौं।
अतिही बलवंत करे करता कर, दंतीके दंत उपारनकौं।
परिहै दलमैं इमं क्यामलखां, जिम चीतौ चलै म्रिग डारनकौ।। १६८।।

।। दोहा ।। दिली बिलाइत लरत है, परत महा घमसान।
येक वोर जुझै मुगल, येक वोर चहुवान ।।१६९।।

॥ भुजंगी छंद जुगंम बिधि ॥

चढ़े क्यामखानं, लये कर दुधारी।
इतहि चाहुवांन, उतहि मुगल भारी ॥१७०॥
बजें सुर नीसानं, सु जुझै जुझारी।
गहै कर कमानं, चलावै ततारी ॥१७१॥
लरें सुभट जोरै, सुत रनें किसोरे।
सहें झकझोरे, मुरे नहिं मोरे।
फिरे ना बहोरे, करै रज तोरे।
हने गैंद घोरे, रहे आइ थोरे ॥१७२॥
लरे बहु जुझारी, मरे जोध सूरा।
अरुन भौम सारी, भयो जुद्ध पूरा।
लगे हाथ भारी, गयो छूटि गरूरा।
मुगल सैन हारो, चले भाजि भूरा ॥१७३॥
लर्‌यो चाहुवाँनं, सुजस जगत सबही।
पगनि गज केकांनं, गये मुगल दबही।
सुन्या सुलतानं, जित्यो खांन जबही।
दयो संनमानं, बढ़्यौ बहुत तबही ॥१७४॥

॥ दोहा ॥ मुगल लरे सो मरि परे, उबरे गये जु भाग।
खल दादूर हें बापुरे, क्यामल कारो नाग ॥१७५॥
अैराकी तुरकी तुरग, लूट्यौ दरब अनेक।
सब पठये पतिसाह ढिगु, आप न राख्यो एक ॥१७६॥
आनंदित ह्वै छत्रपति, दीनों आदुर मांन।
क्यामखांनको नाम तब, राख्यो खानु-जहांन ॥१७७॥
मद गइंद अरबी तुरक, अपतनको सिरपाव।
मनसब बहुत बढ़ाइकै, कर्‌यौ बड़ौ उमराव ॥१७८॥
जौ लौ जीयौ जगतमैं, फेरोसाह सुलतांन।
तो लौं दिन दिन ही बढ्‌यो, क्यामखांनकौ मांन ॥१७९॥

जबहि भयौ बस कालकैं, फेरोसाह सुलतान।
तब महमद महमूदनें, फेरी जगमें आन ॥१८०॥
इनहू कीनौ प्यार बहु, पिता करत ज्यों नित्त।
क्यामखांनु असे रख्यौ, जैसे भाई मित्त ॥१८१॥
जब महमद महमूद हू, परे कालके जाल।
तब नसीरखां पुत्र उहिं, ठौर गही ततकाल ॥१८२॥
क्यामखांनु चहुवान सों, इनहू कीनौ प्यार।
जो कछु किये सु जांन कहि, इनसौं पूछि बिचार ॥१८३॥
रोगी भये निसीरखां, सब फिरि गये सुभाइ।
बिन मल्लूखां दूसरौ, निकट न कोउ जाइ ॥१८४॥
मल्लूखां चेरौ हतौ, पाल्यो फेरौसाहि।
बहुरि करचो परधान वहु, सब जगु मांनत ताहि ॥१८५॥
पातसाह जब चलि गये, तबही चली यहु बात।
दील्लीकें हित मल्लू नें, मारचौ है करि घात ॥१८६॥
गोत गैल बुधि होत है, असैं कुसल कहंत।
कुलहीनौ मुख लाइये, पूरी परै न अंत ॥१८७॥
कुलहीनौं सुधरै नहीं, कीजे जतन करोर।
पाइक तौ फरजी भये, चलैं सीसके जोर ॥१८८॥
पाछौ भारी नांहि जिहिं, यों चलिहै पग छोर।
जैसे गुंडिया पौंछ बिन, उलटि परत सिर जोर ॥१८९॥
जब मरि गयो नसीरखां, कोउ पुत्र न आहि।
मल्लूखांको तब भई, पतिसाहीकी चाहि ॥१९०॥
कामदार सब मल्लूसौ, राखत है अति नेहु।
कह्यो तखत पर बैठके, तुम पतिसाही लेहु ॥१९१॥
क्यामखानुं यहु बात सुनि, सबसौं कह्यौ रिसाइ।
पातसाह कैतखत पर, चेरौ क्यौं न आइ ॥१९२॥

साहब उत्तिम कीजिये, जो कुलवंतो होइ ।
चेरैंके चाकर भये, सोभ न पावै कोइ ॥१९३॥
लै तारी गढ़ कोटकी, उठि आयो परधांन ।
काइमखां दीवानकै, आगै राखी आंन ॥१९४॥
यहै कह्यौ तब सबनि मिलि, सुनि साहिब दीवांन ।
तुम चलि बैठो तखतपर, फेरहु अपनी आंन ॥१९५॥
पातसाह तुम दिल्लीके, हम सब सेवक आहि ।
गहर छाड़ि बैठहु तखत, जो पतिसाही चाहि ॥१९६॥
भये दिलीमें छत्रपति, बड़े तिहारे सात ।
तुम तिनके पतिसाह हौ, नांहि नई कछु बात ॥१९७॥
क्यामखानुं तब युं कह्यौ, सुनिहु बात परधांन ।
मोहि न दिल्ली चाहीये, रचनहारकी आन ॥१९८॥
जिन जानउं मो जीउमें, दिल्ली लैनको हेत ।
द्वै दिनकै सुख कारनै, को संतत दुख लेत ॥१९९॥
जो पाछै पतिसाह ह्वै, क्रोध धरै मन मांहि ।
संतत पहले छत्रपति, जीवत छाड़त नांहि ॥२००॥
परधाननि तब यों कह्यौ, सुनि चकवें चहुवांन ।
जो तुम दिल्ली लेत ना, देहैं मल्लू खांन ॥२०१॥
अनंत भतारहि भख गई, नैंकु न आई लाज ।
येक मरै दूजै धरै, यहै दिल्लीको काज ॥२०२॥
जात गोत पूछत नहिं, जोई पकरत पांन ।
ताहीसौं हिलमिलि चलै, पै भखि जाइ निदांन ॥२०३॥
यें बतियां कहि उठि गये, मल्लू पास परधांन ।
पकरि बांहि पतिसाहिकैं, तखत बिठायो आंन ॥२०४॥
बात सुनी यहु क्यामखां, तब ही दै नीसांन ।
अपनै घरको उठि चल्यौ, चक्रवती चहुवांन ॥२०५॥

जबहि क्यामखां चलि गये, मल्लू सुनी यहु बात ।
हय गय दल बल साजिकै, मारन चल्यो रिसात ।।२०६।।
कोस बीसकै बीचसौं, आगै पाछै जांहि ।
मल्लू दबाइ न सकत है, वै जानत है नांहि ।।२०७।।
जबहिं सुन्यौ यों क्यामखां, मल्लू चढ्यौ दल साज ।
फिरि अहुटौ सन्मुख चल्यौ, ज्यों तीतर पर बाज ।।२०८।।
उत मल्लू इत क्यामखां, भये सनंमुख आइ ।
करी घटा घंटा छटा, दुंदुभ गर्ज सुनाइ ।।२०९।।

क्यामखां मल्लूखांसुं युद्ध करत है

।। छंद अर्ध भुजंगी ।।

चढ्यौ चाहुवानं, मच्यो घमसानं ।
छूटै नाल गोली, बहै करां चोली ।।२१०।।
छुटै चपल बानं, चटकै कमानं ।
बहै सेल सागं, सु निकसैं द्रुवागं ।।२११।।
लगै सीस ससपर, परै धर मरै नर ।
बरैं बरंमं भारी, सुजंमं धर कटारी ।।२१२।।
हुई मार भारं, सु जुझै जुझारं ।
लरैं सुभट मनसौं, मिट्यौ हेत तनसौं ।।२१३।।
सु जोधा बिरच्चे, गये ह्वै किरच्चे ।
कहूं सिर कहूं धर, कहूं पग कहूं कर ।।२१४।।
लरे बहुत हस्ती, मरे सहित मस्ती ।
परे बहु तुरंगं, भयो अधिक जंगं ।।२१५।।
परी धाम धूमं, भई अरुन भूमं ।
सुभट घाव धूमं, मनौ गेंद घूमं ।।२१६।।
मच्यो जुद्ध भारी, मलू सैन खारी ।
जित्यो क्यामखानं, सु जानत जहानं ।।२१७।।

मलूखां परायो, सबै कछु लुटायो।
दिली मांहि आयो, लै आपहि छपायो ॥२१८॥

॥ दोहा ॥ फिरै भजोरा भाजतौ, ता पाछै ना जाउं।
सत छाड़ै तिह नांह तौ, मोहि क्यामखां नांउं ॥२१९॥
हाथी घोरे दर्ब बहु, लूट लयो चहुवांन।
पैठ्यो आइ हिसारमैं, बजत जैत नीसांन ॥२२०॥
क्यामखानुं बहु बल गह्यौ, करै जु इंछ्या प्रांन।
मल्लूकौं फिरि लरनकौ, नांहि रह्यौ अरमांन ॥२२१॥
देस देसकी पेसकस, क्यामखानुंकौ आइ।
भले पजाये भोमिया, सगरे सेवहि पाइ ॥२२२॥

॥ सवइया ॥ क्यामखांनु चहुवानुं खानुं सुलतानुं साधे,
राव रानं आनं सब भोमिया पजाया है।
कमधज कछवाहे वैरिया हुमइ भटी,
तूंवर······गोरी जाटू पाइ लाये हैं।
तावनीस रोवे नारू खोखर चंदेल कालू,
झाब साहुसेन अकलीमसा भजाये हैं।
साह महमद ममरेजखां इदरीस,
मोजदी मूगल खेतते खिसाये हैं ॥२२३॥
·········बैठे ही हिसार नीके साथे चक चार है।
दूनपुर रिनी भटनेर भादरा गरानौ,
कोठी बजवारौ और डरत पहार है।
कालपी येटावो और बीचिकै मेवासी सब,
चमकत रहत उजीन और धार है।
पूरव पछिम और उतर दछिन साधी,
दिल्लीमें मलूके नहीं खुलत किवाड़ है।
क्यामखां चहुवान मोटे रावसुत तप,
·· ॥२२४॥

॥ दोहा ॥ क्यामखाँनुं घर आपनै, मल्लू दिल्ली मांहि ।
बहुत रोस मन दुहुंनकै, कबहूं भेटत नांहि ॥२२५॥
काबिलमें तब रहत है, पातसाह तैमूर ।
सप्त दीपमें परगट्यौ, कहत जांन ज्यों सूर ॥२२६॥
उत्तर दिछन पूरब पछिम, अगनेई ईसान ।
नैरित बाइब तिमरकी, अस्ट दिसामै आन ॥२२७॥
चगता आये जगतमैं, कीनौ कर्म इलाह ।
तबके पतिसाही करे, हैं जाती पतिसाह ॥२२८॥
रूम साम अैराक ली, खुरासान इक धाप ।
भयो तिमर मन हिंदकौ, इत चलि आये आप ॥२२९॥
मलू सुन्यो आयो तिमर, चल्यो लरन दल साज ।
मुगलनिको देखत डर्‌यो, छाड़ी रज सत लाज ॥२३०॥
तिमर भयो दल धूरिकौ, आयो तिमर रिसाइ ।
मलू जहां डिढु करतु है, तिहां तिमर डिढु आइ ॥२३१॥
नांव तिमर तप तिमरहर, लरन सकत है कोइ ।
लरै सिकंदर जुलिकरन, जो अब जगमें होइ ॥२३२॥
मलूवा वपरौ कौन है, जो सनमुख ठहराइ ।
जोति गई मिटि तिमर तें, भाज दुर्‌यो बन जाइ ॥२३३॥
अर्कतूल मलुआ भयो, तिमरल्यंग दल बाइ ।
पल न सक्यो ठहराइकै, डार्‌यो केहूं उड़ाई ॥२३४॥
जैत भई तब तिमरकी, लूट्यो ढीली माल ।
आइ बिराज्यो तखतपर, चगता मरद मुछाल ॥२३५॥
मलुआ पाछे दल दये, आपुन ढीली मांहि ।
ढिली मंडलमैं नैकु हौं, रहन दयो वहु नांहि ॥२३६॥
तिमरलंगकै जीवमैं, उपजी काबुल चाहि ।
खिदरखांनूंकौं सौंपकै, दिली चले पतिसाहि ॥२३७॥

खिदरखां दिल्ली रहत, मरद मुंछार पठान ।
मानस सहस पचास ढिडु, सबही येक समान ॥२३८॥
तिमरलंग जब उठि गये, मलू सुनी यहु बात ।
खिदरखांनुकी नां बदै, फूल्यौं अंग न मात ॥२३९॥
तब दल बल बहु साजिकै, दिल्ली घेरी आइ ।
खिदरखांनु ठट्टु कटक करि, लर्‍यो सनमुख जाइ ॥२४०॥
जूझि गये सूरा सुभट, भार पर्‍यो जब आइ ।
मलू भाजि नाहिं न सक्यो, मरचो परचो भुंमि जाइ ॥२४१॥
जीते हैं दल तिमरके, मार्‍यो मल्लूखांन ।
खिदरखांनु फूल्यो फिरे, करिहै गर्ब गुमान ॥२४२॥
जबहि मलूकी वोरते, भयो नचिंत पठांन ।
बस कीने सब भोमिया, बदत न काहू आंन ॥२४३॥
सुलताननिकौं नां बदै, क्यामखांनु चहुवांन ।
बात सुनी जहु खिदरखां, बाढ़ी अधिक रिसान ॥२४४॥
खिदरखांनु फुरमांन दिय, मोजदीन अगवांन ।
मार बांधिकै काढ़िदै, क्यामखांनु चहुवांन ॥२४५॥

क्यामखां मोजदी जुध करत है

॥ दोहा ॥ रुहतक झज्झर जनम भुमि, मोजदीन अगवांन ।
फौजदार लाहोरकौ, है दल बल अनग्यांन ॥२४६॥
उन कहि पठयो क्यामखां, छाडहु कोट हिसार ।
जो तुम गहर लगाइ हौ, हमहि न लागै बार ॥२४७॥
पातसाहकौ नां बदहि, सेवा करन न जाहिं ।
बिनही दीनी बावनी, कहियो किहिं बल खाहिं ॥२४८॥
तबहि क्यामखां यों लिख्यो, सुनि अगवान गिवार ।
को काहूकौ देतु है, दैनहार करतार ॥२४९॥

दिली दई जिन खिदरखां, तिन मो दयो हिसार।
ग्रैसौ कौन जु लइ सकै, जो दीनौं करतार ॥२५०॥
जो चढ़ि ग्रावै खिदरखां, तौ ना तजौं हिसार।
जौ हिसार ग्रब छाँड हौं, हांसी हुवै संसार ॥२५१॥
कुतब हमारी मदत है. निहचै जियमें जान।
जो ग्रपनौ चाहै भलौ, जिन ग्रावहि ग्रगवान ॥२५२॥
रोस भयो चिठी पढ़त, दयो तबही नीसांन।
महा प्रबल दल साजकै, चढ़ि जु चल्यौ ग्रगवांन ॥२५३॥
सुनत बात यहु क्यामखाँ, करयो लरनकौ साज।
जुझ बिना सूझत नहीं, जिहं भाजनकी लाज ॥२५४॥
ग्रावत ग्रावत मोजदी, नेरैं उतरयौ ग्राइ।
चिठी लिखकै बहुरि इक, मानस दयो पठाइ ॥२५५॥
काहे लरिकै क्यामखाँ, मरिहै बेही काज।
सुलताननिकैं कटकसौं, भाजत कैसी लाज ॥२५६॥
मेरे कटक ग्रनंत है, मारि डारिहौं तोहि।
याते फिरि फिरि कहतु हौं, दया ग्राइ है मोहि ॥२५७॥
क्यामखानुं तब यों लिख्यो, सुनि ग्रगवान गिंवार।
तेरी डिठि है कटकपर, मेरि डिठि करतार ॥२५८॥
चिंता नैकु न कीजिये, जौ रिप होंहि ग्रनेक।
मारन ज्यावंनहार है, सु तौ जांन कहि येक ॥२५९॥
ढीठ बसीठन फेर तू, ग्रबहि मिलावहु डीठ।
ह्वै है जाके ईठ बिधु, ताकी रहै पटीठ ॥२६०॥
मोजदीन उतते चढ्यो, इतते काइमखांन।
चाहुवांन ग्रगवान मिलि, भलौ करयौ घमसांन ॥२६१॥
जैसी सावनकी घटा, मिली सैन द्वै ग्राइ।
ग्रंधकार ही ह्वै गयौ, धूरि रही जगु छाइ ॥२६२॥

॥ नाराइच छंद ॥

चढ़े मूछार सूरवां, बजंत सार सार ही।
लरंत जोध जोधसों, ररंत मार मार ही।
भई सुरंग भोम है, कटंत हाथ पाव ही।
सुभट्ट सीस टूटिहै, मिटै न चित्त चावही ॥२६३॥
कटैं परै उठैं लरै, मरै बिना नहीं रहै।
बदै न घाव चोटकौं, छतीस आवधैं सहै।
परैं हथ्यार हाथतैं, भुजा जबै कटंत है।
तबै सुभट्ट सूरिवां, करै हथ्यार देत है ॥२६४॥
परे करी तुखार हैं, लरे मरे जुझार हैं।
गने गने न जात है, अपार ते अपार है।
खरे महेस जुग्गनि, अनंद चैनमैं हंसै।
गिरिज्झ आसमानतैं, सु देखि देखिकै धंसै ॥२६५॥

॥ दोहा ॥ जबहि कटक दहुं औरके, मरे परे घमसांन।
तब दलमैंतै निकसिकै, चलि आयो अगवांन ॥२६६॥
क्यांम क्यांमखां ही करत, अरु डारत केकांन।
इतते निकस्यो क्यामखां, चक्रवती चहुवाँन ॥२६७॥
बरछी बाही मौजदी, हन्यो क्यामखां बांन।
ये राखे करतार नैं, पर्‌यो भोंम अगवांन ॥२६८॥
काइमखां चहुवांननै, लये मौजदी मारि।
दुलहु बिन न जनेत ह्वै, भाज चले दल हारि ॥२६९॥
सब दल लूट्यो क्यामखां, जीते करी तुखार।
दले दमामे जैतके, उपज्यौ चैन अपार ॥२७०॥
सुनी बात यहु खिदरखां, काटि काटि कर खाइ।
मेरे दल बल जिन हनें, तासौं लरिहौं जाइ ॥२७१॥
रैन दिनां चिंता करै, किहि बिधि लरियैं जाइ।
क्यामखानुंकी धाकतैं, चलत बहुत अरसाइ ॥२७२॥

जबहि सुन्यो यों क्यामखां, बहुत पठान रिसाइ ।
तब मन मांहि बिचारिकै, कीनौ यहै उपाइ ॥२७३॥
हुतौ बिलाइत खिजरखां, लकब वोज्झरीवाल ।
तासौं कछु पहिचांन ही, यहु टेरचो ततकाल ॥२७४॥
यो लिखि पठयो क्यामखां, तूं उठि बेगौ आव ।
मैं तोकौं दीनी दिली, जो लेबैको चाव ॥२७५॥
खिजरखानुं पाती पढ़त, सिर ऊपर धरि लीन ।
उतते दल करि चढ़ि चल्यो, गहर कछू नां कीन ॥२७६॥
लिख पठयों यों खिजरखां, खां जू गहर निवार ।
चढ़ि आवौ ज्यों मिलि चलें, दिली लैंनकैं प्यार ॥२७७॥
पाती बाचत क्यामखां, चढ्यो बजे नीसांन ।
खिजरखांन सेती मिले, आनंदनि मुलतांन ॥२७८॥
खिजरखानुं पाइन पर्यो, अंक भर्यो चहुवांन ।
यहै कह्यो तब कौन दे, तुम बिन दिल्ली आन ॥२७९॥
क्यामखानुं अैसे कह्यो, दिली दई करतार ।
हौं तेरौ संगी भयो, तूं अब गहर निवार ॥२८०॥
तबही चढ़े मुलताँन ते, मतौ कर्यौ मन मांहि ।
राठोरनिकौं साधिकैं, तब दिल्लीपर जाहिं ॥२८१॥
सबही मेवासै मलत, आइ लगे नागौर ।
तामै चौंडा बसत हौं, राइनकौं सिरमोर ॥२८२॥
आइ दबायो कोटमें, अैसी कीनी दौरि ।
चौंडा चढ़ि नाहिन सक्यौ, मूवौ निकसिकै पौरि ॥२८३॥
चौंडा लीनौं मारिकै, भाज चल्यौ सब संग ।
बहुत खदेरे ना लरे, सके कटाइ न अंग ॥२८४॥
कमधज कर बरछी लये, भज्जै इहं उनिहार ।
सांग स्रिगसे देखिये, मनहुं चले स्रिग डार ॥२८५॥

क्यामखां खिद्रखां पठांणसूं जुध करत

॥ दोहा ॥ अप बसि करि नागोरकौ, चलो दिल्लीकी वोर।
खिजरखांनु पुनि क्यामखां, दल बल साजे जोर ॥२८६॥
यहु कहनावत कहत है, तबते सकल जहांनु।
दील्ली थोरे कांगुरे, बहु दल लायो खांनु ॥२८७॥
सुनी बात यहु खिदरखां, आयो काइमखांनु।
खिजरखांनुकौ संग लै, देत बहुत नीसांन ॥२८८॥
चढ्यौ खिदरखां दिल्लीते, दल बल साजि अपार।
इत उतके कवि जांन कहि, जूज्झन लगे जुझार ॥२८९॥

॥ नाराइच छन्द ॥

चढ़े जुझार मारके, बदै न घाव सारके।
लरे कटै हटै नहीं, मरै परै जहीं तहीं ॥२९०॥
करी करी लरे मरे, तुरी तुरी किते परे।
सुभट्ट ठट्ट खेतमें, सु घूमि हैं अचेतमैं ॥२९१॥
मुवो सर्ब साथ ही, रह्यो न प्रान हाथ ही।
चल्यो पठान भज्जिकै, दयो न जीव लज्जिकै ॥२९२॥

॥ दोहा ॥ जीते काइमखांनजू, भाज्यो खिदर पठांन।
खिज रखांनुकी बाहि गहि, तखत बिठायो आंन ॥२९३॥
सबही बात समत्थ है, क्यामखानुं चहुवांन।
जाकै सिरपर कर धरैं, सो दिली सुलताँन ॥२९४॥
खिजरखान पतिसाह हुव, करै दिलीमैं राज।
चिंता कछू नाहिंन रही, पूरै सब मन काज ॥२९५॥
खिजरखांनुकौ रैन दिन, सुखही मांहि बिहात।
क्यामखानुं अरु आप बिच, तीसर नाहिं समात ॥२९६॥
पाछैं मूरिख खिजरखां, यहु समुझि जिय मांहि।
क्यामखानुं बलवंतु है, पतियारौ कछु नांहि ॥२९७॥
चाहै ताकौ काढि है, राखै जांनै जाहि।
महाबली उमराव है, रहन न देहौं याहि ॥२९८॥

राजा अरु परधांन पुनि, जबहिं हौहि सम दोइ।
पहलै हनै सु हनत है, पाछै कछु न होइ ।।२९९।।
यह मनमै समझी नहीं, दिली दई करि प्यार ।
कोउ बिरवा लाइकै, डारत नांहि उखार ।।३००।।
येक द्योंस तौ क्यामखां, ठाढ़े हुते सुभाइ ।
खिजरखांनु दीनौं धका, परो नदीमें जाइ ।।३०१।।
निकसि गयो ज्यों परत ही, खरो रह्यौ इक पांन ।
संतत कर रहि है खरौ, इक खांडै अरु दांन ।।३०२।।
मतौ कर्यौ हौ खिजरखां, सो जानत हौ खांन ।
पैं पतिसाहनिसौं लरे, होत धर्मकी हानि ।।३०३।।
जीयो बरस पचांनुवै, क्यामखानु चहुवांन ।
बड़े २ साके करै, गनत न आवै ग्यांन ।।३०४।।
साके क्यामलखांनके, सागर अपरंपार ।
जो मोकौ आवत हुते, ते मैं करे बिचार ।।३०५।।
क्यामखांनकी बातकौ, कर्यौ नहीं बिस्तार ।
भाखै है मैं सुलप अति, अपनी मति अनुसार ।।३०६।।
हतौ हजीरौ दिल्लीमैं, कीनौ काइमखानु ।
लै उत राख्यो छत्रपति, देकै आदर मांनु ।।३०७।।

श्री दीवान ताजखांके पुत्र

१ फतिहखां, २ रुका, ३ फखरदी, ४ मोजन, ५ इकलीमखां, ६ पहाड़ा ।

फतिहखांन मोजंन रुका, फखरद्दी इकलीम ।
और पहारा है छठौ, ताजंन सुत बलभीम ।।३०८।।

ताजखांकौ बखांन

पांच पुत्र है क्यामखां, सुनि पिताकी बात ।
विषधर कैसे जांन कहि, निस बासुर बल खात ।।३०९।।
ताजखानु महमद्खां, कुतबखांन इखतार ।
मौनुखांनु पांचौ सुभट, अरिदल भंजनहार ।।३१०।।

खिजरखांनु पै ना गये, रह्यो बुलाइ बुलाइ।
बैठे रहे हिसारमें, कर्यो जूहार न जाइ ॥३११॥
जबहि भयो बस कालके, खिजरखांनु पतिसाह।
तबहि मुबारक साहकौ, दीनौ राज इलाह ॥३१२॥
खिजरखांकै बंसमै, नाहिन सुनिये कोइ।
किर्तघंनीकौ जानिये, कबहु भलौ न होइ ॥३१३॥
मुवो मुबारक तब भयो, जगमहमद फरीद।
पतिसाही करि मरि गयो, जबही काल रसीद ॥३१४॥
ताकौ नंद अलावदी, दीनौ राज इलाह।
भयो अमानतखाँ बहुरि, पूत मुबारक शाह ॥३१५॥
ता पाछै बहलोल हुव, दिली महि सुलतान।
लोदी अपनी भुजन बलु, साध्यौ हिंदस्तान ॥३१६॥
ढोसी ऊपर अखन है, दिली साहि बहलोल।
बदै न नंदन क्यामखां, परे दहुंनमैं बोल ॥३१७॥
पातिसाहि अैराकके, तुरंग मंगाये आहि।
इत निकसे तब अखन नें, नौ चुनि लीने चाहि ॥३१८॥
बात सुनी बहलोलनै, कहि पठयो रिस मांहि।
मेरौ मारग देखीयौ, जौ असु पठयो नांहि ॥३१९॥
अखन लिख्यो बहलोलसों, मेरै घोरे लाख।
पै मै तेरे लये है सो, जुद्धकी अभिलाष ॥३२०॥
मोकौ इतही पाइये, जब जानहि तब आव।
ढोसी चलै न हौं चलौ, गिरकौ गह्यो सुभाव ॥३२१॥
पातसाह अति पर्जर्यौ, सुनि अक्खनके बोल।
पै कछु बल नाहिन चल्यो, बैठि रह्यो बहलोल ॥३२२॥
बावंन बर अक्खन करी, पात पात मेवात।
मेवाती भाजत फिरै, ज्यों रवि आगै रात ॥३२३॥

जौलौं जीयो जगतमें, बध्यो नहीं पतिसाहि ।
वहै करचो इखतारखां, जोई जियकी चाहि ॥३२४॥
जित गिरवर तितही करी, अखन कोटकी मांड ।
रहत भोमिया निकट जे, सबे देत ते डांड ॥३२५॥
आंबेरे बीतें बरष, देत दुवादस लाख ।
आठ अमरसरके भरत, कबितु देतु हैं साख ॥३२६॥
हैं चौथो सुत कुतुबखां, बस्यो बारुवै जाइ ।
कोऊ बरनां कर सकै, परे भोमिया पाइ ॥३२७॥
बस्यो बगरमें मौनखां, गयो नगरसौं होइ ।
आस पासके सब नये, बलु कर सकै न कोइ ॥३२८॥
मौनां क्यामलखांन सुत, कूरमरिप चहुवांन ।
जाकै दलकी दहलते, कूतल पर्चो भगांन ॥३२९॥
ताजखांनु सबमें तिलक, दूजो महमदखांन ।
दोउ अति नीके भये, सूरबीर चहुवांन ॥३३०॥
ताजखाँनु महमद्खां, दोउ रहे हिसार ।
ठौर पिता राखी भलै, हौं दहुवनमें प्यार ॥३३१॥
दिल्लीपतिसौं ना मिलैं, रिस राखै सिरमौर ।
ताक्यो खां पेरोजखां, तबहि गये नागौर ॥३३२॥
नागोरीखां उठि मिल्यो, बहुतें आदुर दीन ।
हौं ना बदौं दिलेसकैं, भये येकतें तीन ॥३३३॥
हांते कबहू होत नां, रहै रैन दिन संग ।
रानै ऊपर चढ़नकै, करि है मते उमंग ॥३३४॥
दल बल करि खां चढ़ि चल्यो, आगै मोकल रांन ।
कटकनिकें ठटु ठानिकै, आयो दे नीसांन ॥३३५॥
दल बल जोताई मिले, दहू वोरिके आइ ।
उत मोकल पेरोज इत, जुरे जुद्धके चाइ ॥३३६॥

कमधज कूरम भोमिया, बहु पिरोजकै संग ।
रांनैहूकैं बहुत दल, लरत न राखै अंग ।।३३७।।
नागोरी बाटी अंनी, फूल्यो करत कलोल ।
गोल हिरोल चंदोल पुनि, जरं गोल बरं गोल ।।३३८।।
ताजखांनु महमदखां, खरे तमाचै दोइ ।
देखौं तुम केसी करौ, जैसी तुमते होइ ।।३३९।।

ताजखां महमदखां आगे रांना भाग्यो

॥ दोहा ॥ चढ़े कटक दहुं ओरते, मिले बजत निसांन ।
घमडंत है मानो घटा, गर्जत है मरवांन ।।३४०।।
पहलै तौ गोली चली, और छुटी हथनाल ।
जिनकी लागी ते परे, ज्यो निकले ततकाल ।।३४१।।
बांन चले दहुवोरके, बहुत रहे गड़ि देह ।
घाइल असैं लागि हैं, है मांनौ येसेह ।।३४२।।
घोरे बाहे खांनपर, रानै अधिक रिसाइ ।
धका सहार न सक्यो, छूटि गये तब पाइ ।।३४३।।
भाजि चल्यो पेरोजखाँ, ताकी है नागौर ।
पाछै आवै लूंटतौं, मोकलसी सिरमौर ।।३४४।।
चार कोस लौ गैल करि, लैने जो नीसाँन ।
रान चल्यौ चीतोरकौं, चितुमें करत गुमाँन ।।३४५।।
ताजखानुं महमद्खां, ठाढ़े वाही खोज ।
रहे तमाचै ही खरे, भाजि गयो पेरोज ।।३४६।।
नागौरीकौं भाजतैं, नैकुं न लागी बार ।
झांकत ही भइया रहे, कहा करै करतार ।।३४७।।
सोच रहे दोउ खरे, रानौ निकस्यो आइ ।
ज्यौं चीतौ म्रगकौं तकै, परे रोसमें धाइ ।।३४८।।
लरि बिचर्यो सीसौदियो, जब हि पर्यो घमसांन ।
दे अपने पेरोजके, नेजे पुनि नीसांन ।।३४९।।

पाछै गये पहार लौ, बहुत बढ़ी कर लूट।
जुगल बाजकें हाथते, गयो चिरीसौं छूट ।।३५०।।
उत ते ये दोऊ फिरै, जैत दमांमे देत।
रानांकी रज लूट ली, गज हय दर्ब समेत ।।३५१।।
अब आये नागौरमें, नेजो पुनि नीसांन।
लुटवाये पेरोजखां, ते पठये चहुवांन ।।३५२।।
बहुत चप्यौ पेरोजखां, मुख ना सकै दिखाइ।
बात चले जब जुद्धकी, सुनि सुनि अधिक लजाइ ।।३५३।।
और इतेपर जस जुरे, ताजन महमदखांन।
काक भये पेरोजके, पढ़िहै सकल जहांन ।।३५४।।
स्वांम भगे सेवक लरै, ते रजवंत विचार।
जर उखरें तरु ठाहरै, तैसौ यहु अधकार ।।३५५।।
चोरी डिठ पेरोजखां, जब ये दोउ जाहिं।
ग्रैंयौ ग्वैयोही रहैं, हंसि बोलत है नांहि ।।३५६।।
जो आपुन कापुरस ह्वै, सुभट न भावै ताहि।
जैसौ कोऊ आप ह्वै, करै सु तैसै चाहि ।।३५७।।
चोरी डिठ पेरोजखां, रोस भरे चहुवांन।
अनरसमै ही ऊठि चले, ताजन महमदखांन ।।३५८।।
बंबु दमामेकी सुनी, रिस उपजी चित खांन।
अपनै दलसौं यों कह्यौ, इनको देहु न जांन ।।३५९।।
नागोरी पेरोजखां, दल बल साजि अपार।
आइ दबाये लरनकौं, फिरे जुगल जूझार ।।३६०।।
जुद्ध मच्यौ नाँरद नच्यो, भाज बच्यो नहिं सूर।
चितसौं जूझे जोध तिन, हितसौं ले गई हूर ।।३६१।।
परे खेतमें ताजखां, जबहि होइ घनघाइ।
निकसे महमदखांनु तब, नाहिं सके ठहराइ ।।३६२।।

नागौरीखां जीतिकै, बहुरि गयो नागौर ।
रहे खेतहीमें परे, ताजखांनु सिरमौर ।।३६३।।
घाइल फिरहिं उठावते, उत आये राठौर ।
परे हुते बेसुध भये, ताजखांनु जा ठौर ।।३६४।।
देखत ही रनधीर तब, लैके गये उठाइ ।
जबहिं घाव नीके भये, दये हिसार पठाइ ।।३६५।।
बड़ो कर्यो करतारनै, ताजखानुं चहुवान ।
इक जूझे पुनि ऊबरे, प्रगट्यौ सुजस जहांन ।।३६६।।
महा सुभट ताजन भयो, लयो सुजस सैंसार ।
भले पजाये भोमिया, करबर अरु करवार ।।३६७।।
ताजनकी तरवारकौ, डर उपज्यो नागौर ।
भै मानै पेरोजखां, खुलत न कबहू पौर ।।३६८।।
हनें खेतरी खरकरौ, बौहानों करि बैर ।
पाटन रेवासौं मिले, बस कीनी आंबेर ।।३६९।।
कछवाहे निरबांन पुनि, तूंवर और पंवार ।
इनपैं लीनी पेसकस, जानत सब सैंसार ।।५७०।।

।। सवैया ।। क्यामखानुंनंदन अरिकंदन ताजंन डर डरपन नागौर ।
हनें खेतरी और खरकरौ बौहांनौ पाटन इक दौर ।
रेवासौ दलमल्यो ते गबर गढ़ आंबेर खुलत ना पौर ।
तूंवर पंवार देवरे कूरम सांचे चहुवांन सिरमौर ।।३७१।।

।। दोहा ।। जबहिं भये बस कालके, ताजखांनु चहुवांन ।
राखे तबहि हिसारमें, क्यामखांन असथांन ।।३७२।।
महमदखांन जब मरि गये, राख्यो हांसी मांहि ।
भाई और हिसारमैं, कोऊ राख्यो नांहि ।।३७३।।
ताजखांनु जब चलि गये, फतिहखानुं सिरमौर ।
बैठौ कोट हिसारमैं, भलै पिताकी ठौर ।।३७४।।

श्रीफतिहखांके पुत्र

१ जलालखां, २ हैबतसाह, ३ महमसाह, ४असदखां, ५दरियासाह, ६ साहमनसूर, ७ सेख सलह, ८ बलों, ९ संग्रामसूर, १० हेतम ।

खां जलाल हेतम बलो, सलह साह मंनसूर ।
दरिया हैबत असद महमद, जुद्ध सूर संपूर ।।३७५।।

अथ फतिहखांको बखांन

फतन भयो अतहीं प्रबल, नम्यो न काहू सीस ।
काहूकौं मानत नहीं, येक बिनां जगदीस ।।३७६।।
नींव दई षटकोटकी, येक द्यौंस कहि जांन ।
नगर फतिहपुर आपनौं, कर्‌यों फतन असथांन ।।३७७।।
नयो बसायो फतिहपुर, हौ सरवर उद्यान ।
नांव आपनै फतेहखां, कर्‌यो बड़ो असथांन ।।३७८।।
पंदरहसै जु अठौतरै, बस्यो फतहपुर बास ।
सुद पांचै तिथ ही तबहिं, और चैतकौ मास ।।३७९।।
संन सत्तावन आठसै, जगमें कर्‌यो प्रकास ।
माह सफर दिन बीसवैं, बस्यो फतहपुर बास ।।३८०।।
कोट चिन्यो नींकै नखित, सुथिर कर्‌यो करतार ।
आस पासके भोमियां, आवहि करन जुहार ।।३८१।।
पल्हू सहेवा भादरा, पुनि भारंग अस्थांन ।
और बाइलै कोट ये, कीये फतन चहुवांन ।।३८२।।
पातसाहकी चोखसौं, रहि ना सके हिसार ।
कर्‌यो फतिहपुर फतिहखां, इतहि आइ तिंह बार ।।३८३।।
प्रथम रनाउमें रहे, जो लौं चिनियो कोट ।
पाछै आये फतिहपुर, लये साथ दल कोट ।।३८४।।
पातसाह बहलोल चित, उपजी रिनथंभ चाहि ।
मिल्यो न मोसौं आइकै, हेंदू कोधौं आहि ।।३८५।।

ढल बल सजि लोदी चल्यो, रिनथंभौरको लैंन ।
धूर बिनां डिठ नां परै, येक भये दिन रैंन ॥३८६॥
सुनी फतिहखां बात यहु, दल बल साजि अपार ।
मारगमें बहलोलकौं, कीनो जाइ जुहार ॥३८७॥
लोदी देखत फतंनकौ, बहुत बड़ाई दीन ।
क्यांमखांनकै नांवते, अंक वारनि भर लीन ॥३८८॥
नांव सुनत ही यों कह्यो, तब लोदी पतिसाह ।
फतिहखांनकै मिलत ही, दीनी फतह अलाह ॥३८९॥
परधानंनिसौं यों कह्यो, बार बार सुलतांन ।
कंचनकौ मांनस तक्यौ, फतिहखानुं चहुवांन ॥३९०॥
रिनथंभोरहू में सुन्यों, आवत है बहलोल ।
तब मांडौंको छत्रपति, उनहू लीनौ बोल ॥३९१॥
ताको नांव हिसामदी, मांडौको सुलतांन ।
रिनथंभोरकी भीरकौ, आयौ दै नीसांन ॥३९२॥
जब इतते लोदी गयौ, दल बल लयें अपार ।
गढ़ई भयौ हिसामदी, नाहि सक्यौ करि रार ॥३९३॥

फतननैं हिसामदी मांडौको पातसाह मार्यो

येक द्यौस बहलोलनैं, फत्तन लयौ बुलाइ ।
प्यार कियौ आदर दियौ, बात कही बिरदाइ ॥३९४॥
दादै तेरै क्यामखां, कैसे कीने काम ।
फतिह करौ रिनथंभको, फतिह तिहारै नाम ॥३९५॥
फतिहखानुं ह्वैकै बिदा, चले लगे गढ़ जाइ ।
आगै साह हिसामदी, लर्यौ सनमुख आइ ॥३९६॥
खोलि पौरि हिसामदी, देख्यौ थोरौ संग ।
आपुन बहु दलबल लह्यो, आये लरन उमंग ॥३९७॥

॥ **अर्धभुजंगी छंद** ॥ इतहि चहुवानं, उतहि सुल्लतानं ।
चले नाल बानं, पर्‌यौ घमसानं ॥३६८॥
बहै सांग भारी, गडै तन कटारी,
लगै चोट कारी, मरै बहु जुझारी ॥३६९॥
परे राव रानं, पर्‌यौ सुल्लितानं ।
जित्यौ फतिहखानं, भयो जस जहानं ॥४००॥

॥ **दोहा** ॥ दुहूं वीर सूरा कटे, बहुत परचो घमसांन ।
बादै हन्यौ हिसामदी, जैत भई दीवांन ॥४०१॥
काट्यो सीस हिसामदी,पठयो ढिग पतिसाह ।
हर्षवंत छत्रपति भयो, देख्यौ नीकैं चाहि ॥४०२॥
फतिह करचो रिनथंभ तन, पैठौ गढ़मै जाइ ।
पातसाह बहलोलनैं, पाछै देख्यौ आइ ॥४०३॥
गढ़ लै दिल्लीकौं चल्यौ, लोदी साह पठांन ।
फतिहखांनु चहुवानकौ, दीनौ मनसब मान ॥४०४
जैत पत्र लै फतिहखां, आयौ अपनैं देस ।
थर हर कंपै भौमिया, जबते कर्‌यौ प्रवेस ॥४०५॥
नारनोलते अखनकी, आई यहै पुकार ।
मेवाती सबही मिले, माड्यौ चाहै रार ॥४०६॥
कै तुम आवहु आपही, कै दल देहु पठाइ ।
भय्यनकौ यहु काम है, संकट होंहि सहाइ ॥४०७॥
नारनोलकौ फतिहखां, दलबल दये पठाइ ।
अंखिन खिल्यो अति देखकै, फुल्यो अंग न माइ ॥४०८॥
मेवाती उतते चले, लागे ढोसी आइ ।
इतते चढ़ि इखतारखां, सनमुख लीने आइ ॥४०९॥
मार परी दहुं वीरते, जूझि गये जूझार ।
मेवाती दल निबल ह्वै, हारि चले तजि रार ॥४१०॥

बादा पहुंच्यौ चिमनकौ, दुंदुभ लयो छिड़ाइ।
जैत भई सब जग सुनी, अंखन न अंग समाइ ॥४११
फतिहखानुं दल फतिह कर, आये लै नीसांन।
सदा फतिहपुरमें बजै, रससौं सुजस जहांन ॥४१२॥
फतिहखानुंके दल प्रबल, भये येकते येक।
कौन कौनकौ जांवल्यौ, सौहे सुभट अनेक ॥४१३॥
कांधिल रिनमलराइकौ, दयो खेत बिचराइ।
सीस कटें बहु गुन लर्यो, बहु गुन दये दिखाइ ॥४१४॥
सारौ सांगै रानकौ, अजा सांखलौ नांव।
फतिहखांनकै कटकनै, मारि गिरायो ठांव ॥४१५॥
तिहं समये चीतौरहौ, आपुन फतंन मुछार।
स्वामि बिना सेवक लरे, सुजस भयो संसार ॥४१६॥
जेते हैं दल फतनके, राठोरनसौं रार।
जो आपन ह्वै सापुरस, तिहं सेवक जूझार ॥४१७॥
तैसी ही बुधि उपजत, बैठत तैंसे पास।
जांन कहै यामै नहीं, अंत आदिकी रास ॥४१८॥

फतननै मुसकीखां किररांनी मार्यो

किररांनी हौ जातकौ, मुसकीखां तिहिं नांम।
आयो फत्तनसों लरन, खोवन अपनी मांम ॥४१९॥
इतने फतिहखां चढ्यो, दलबल साजि अपार।
सरसैमें मिलि दुहुंननै, सरस मचाई रार ॥४२०॥
॥त्रिभंगीछंद॥ उतहि पठानं, इत चहुवानं, गज केकानं जोधजुरे।
गोली बहु छुटैं, करपग टुट्टै, मस्तक फुटै नांहि मुरे ॥४२१॥
लगे तन बानं, निकसै प्रानं, जूझै ज्वानं थकि न रहै।
बरछी अनियारी, तेग दुधारी, काटैं भारी सूर सहैं ॥४२२॥

॥ दोहा ॥ बहुत भयो जुध ना मिटै, तब बादें असु डरि ।
नारि काटि करवारसौं मुसकी दीनौं डारि ॥४२३॥
जैतपत्र लै फतिहखां, आये अपनी ठौर ।
बहुरि करी आंबेर पर, चाहुवांन दै दौर ॥४२४॥
लूटि लई आंबेर सब, गये भोमियां भाजि ।
नीकी बिधिसौं लरि मुये, हौ जिनके मुंह लाज ॥४२५॥
आयो फतन फतिह कर, फूल्यो अंग न माइ ।
बहुरि भिवानी पर चल्यो, नीकी सैन बनाइ ॥४२६॥
जाइ भिवानी घेर ली, दल-बल अमित अपार ।
आगै जाटू जावले, भले लरे जूझार ॥४२७॥

फतननैं भिवानी मारी बंधकी करी

॥धवल छंद॥ उत जाटू चहुवान है, भयो जुद्ध पर्यो घमसांन है ।
उडि धूरि गई असमांन है, कहूं दिष्ट न आवत भांन है ॥४२८॥
चलै गोली बानं अपार ही, बहै जमंधर अरु करवार ही ।
बरछी ह्वै जा हिंदु सार ही, परे जाटू होइ सु मार ही ॥४२९॥

॥ दोहा ॥ फतिह फतिहखां की भई, जाटू हारे अंत ।
लूटि भिवांनी बंधकी, आने पकर अनंत ॥४३०॥
नीके मारे जोध दल, फतिहखानु चहुवांन ।
अैसौ कौन जु लरि सकै, कहौ भोमिया आंन ॥४३१॥
जोधैकै जियमें परि, करौ फतनसौं सुक्ख ।
नातौं करिहौ ज्यौं मिटै, दुहू वोरकौ दुक्ख ॥४३२॥
जोधै पठियो नारियर, फतन लीनौ नाहि ।
कांधिल बहु गुनहन्यौ हौ, रिस राखत मन मांहि ॥४३३॥
महमदखां सुत समंसखां, तबहि जूझनूं नांहि ।
उतहि नारियल लै गये, उनहू कीनी मांहि ॥४३४॥

बहुरि समसखां जो कह्यो, उत ब्यांहनको जाइ ।
जौ न रहौ करवार संग, डोला देहु पठाइ ॥४३५॥
यहै बात वै करि गये, डोला दयो पठाइ ।
मीरांजी जो कह्यौ हो, मिल्यौ समै वहु आइ ॥४३६॥
पातसाह बहलोलनै, फत्तन लयो बुलाइ ।
निस दिन राखे निकट ही, छिन छिन प्यार जनाइ ॥४३७॥
येक द्योंस बहलोलनैं, ग्रैसैं कह्यौ बिचार ।
हम तुम नातो चाहिए, बढ़ै प्यारमें प्यार ॥४३८॥
अदल बदलको साक ह्वै, इंछ्या पूजै प्रान ।
हम लोदी हैं जातके, जो तुम हो चहुवांन ॥४३९॥
तबही कह्यो जो फतननें, बदले साक न होइ ।
मेरे तो नाही सुता, अब अनब्याही कोइ ॥४४०॥
पातसाह मान्यौ बुरौ, फतन चढ्यौ रिसाइ ।
बहुरौं दिल्ली नां गयौ, बैठ्यौ अपने आइ ॥४४१॥
समसखांनु चहुवानसौ, कहि पठयो पतिसाह ।
अदल बदल नातौ करै, जूहै जीवमें चाहि ॥४४२॥
सुनी बात यहु समसखां, बहुत बधाई कीन ।
उहि तनया अपसुत बरी, बहन आपनी दीन ॥४४३॥
फत्तन जीयो जबहि लौं, नाहिंन बद्यो पठांन ।
सीस न नायो दिल्लीकौं, जानत सकल जहांन ॥४४४॥

॥ सवैया ॥

ताजंन अंस बिध्वंस धरा सबहि भुमियां भुज पानि पजाये ।
मारि लयो सुलतान हिसामदी, जाटू भिवानीके धूरि मिलाये ।
चिमनको हंन लीनौ नीसांन, भजाये हैं कांधिल जादौंखिसाये ।
लूंटि आंबेर लयो रिनथंभ, जहानमें फत्तनको जस छायो ॥४४५॥

श्री दीवान जलालखाँके पुत्र

१ दौलतखां, २ अहमद खां, ३ नूरखां, ४ फरीदखां, ५ निजामखां,

६ पहाड़खां, ७ लाडखां, ८ दाऊदखां, ९ अबन, १० महमदसाह ।

दौलतखां, अहमद अबंन, लाड फरीद निजांम ।
महमद नूर पहारखां, खां दाऊद समांम ॥४४६॥

जलालखांको बखान

जबहिं भये बस कालके, फतिहखांनु सिरमौर ।
तब जसवंत जलालखां, भये पिताकी ठौर ॥४४७॥
कोट करयो हौ फतिहखां, तापर कीनौ और ।
कीनी खांन जलालनै, बडड़ी बाँकी पौर ॥४४८॥
दिल्लीकै पतिसाहकौं, बदैनखांनु जलाल ।
नागौरीको दुख दये, लूटि लूटि लै माल ॥४४९॥
नागौरीखां रिस भर्‌यो, दल कीने अनग्यांन ।
बीरौ फेर्‌यो सभामैं, लयो मुगल चौपांन ॥४५०॥
कटरा थल जागीर ही, इत दल साजे आइ
सुनियत बात जलालखां, बैठ्यौ सेन बनाइ ॥। ४५१॥

जलालखां चौपानखां मुगल आगे जीत्यौ

उतते आयो रोसमैं, लरन चौप चौपांन ।
इतते दोर्‌यौ अतुलि बल, खां जलाल चहुवांन ॥४५२॥
येक बार छाडे भले, ताते मुगलनि बांन ।
किते येक घाइल भये, मानस अरु केकांन ॥४५३॥
जबहि जलौ सब संगसौं, लई येक बर बाग ।
सके न बान चलाइकै, गये मुगलवा भाग ॥४५४॥
जांन तक्यौ चौपानखां, पुंहच्यौ खांनु जलाल ।
मनहु बाज चिरिया गही, पकर लयो ततकाल ॥४५५॥
छाडि दयौ चौपानखां, दयो नितंबनु दाग ।
हाथी घोड़े दर्ब रजु, लाज गयो सब त्याग ॥४५६॥

तब घर आयो जीतिकै, देत जैत नीसांन ।
खां जलालकी सर करै, को है अैसौ आंन ॥४५७॥

जलालखांनैं छापौरी आंबैर फतिह की

॥ दोहा ॥ छापौरी ऊपर चढ्यो, फिर चकवै चौहान ।
उतके अनगंन भोमिया, मारि कर्यो घमसांन ॥४५८॥
बहुरि गये आंबेर पर, मारि मिलाई धूर ।
पै भुमिया नीके लरे, मरे लाज संपूर ॥४५९॥
हाथीखान जलाल को, भुमियनि घेर्यो आंन ।
दलमै काहू ना लख्यो, तक्यो आप दीवांन ॥४६०॥
लोग लगे हैं लूटकौ, काहूको सुधि नांहि ।
अपनी भुज बर खां जलो, आइ पर्यो उन मांहि ॥४६१॥
करी लये वै जात हे, पुंहचे जल्लोखांन ।
छाडि गये ज्यों लै भजे, अैसे लाये बांन ॥४६२॥
तब घर आये जीतिकै, खां जलाल चहुवांन ।
सूरत्तनकौ जगतमैं, सब कौ करत बखांन ॥४६३॥
समसखांनु जब मरि गयौ, फतिहखांनु तिह ठौर ।
ब्याह्यौ हो बहलोलकै, बदत न काहू और ॥४६४॥
भाई और बिमात है, तिनही न बांटौ देत ।
जो कछू उपजै जूँझनू, सबै आपही लेत ॥४६५॥
तब जोधापै चलि गयो, नांव मुबारकसाह ।
नांनां जू उपर करहु, ज्यों हम होइ निबाह ॥४६६॥
तब जोधैनै यों कह्यो, मोते कछू न होइ ।
मामू तेरे निकट है, बीका बीदा दोइ ॥४६७॥
तबहि मुबारकसाह उठि, आयो मामू पास ।
वैहू भीर न कर सकै, तब उठि चल्यो निरास ॥४६८॥

उतते आयो फतिहपुर, ताक्यो खांनु जलाल।
बहुत प्यारसेती मिल्यौ, भर लीनो अंकमाल ॥४६९॥
कह्यो मुबारक साहनै, हौं आयो तुम ताक।
जोधै बीकै हौं फिर्यौ, गनै न कोऊ साक ॥४७०॥
सबै डरै बहलोलते, ऊपर करै न कोइ।
काम हमारो जल्लोजू, तुमते ह्वै तो होइ ॥४७१॥
जलो कह्यौ बहलोलते, डर्यो न मेरो बाप।
अब जो हौं वातें डरौं, खोर लगाऊं आप ॥४७२॥
खां जलाल तब कटक करि, गये जूंझनू मांहि।
फतिहखांनुके दल भगे, जूझ सक्यो को नांहि ॥४७३॥
तबहि मुबारकसाहकौ, दयो जूंझनू राज।
फतिहखांनु उत मरि गयो, पूजे सब मन काज ॥४७४॥
फतिहखांनु जब मरि गयो, सुत समस सिरमौर।
महमदखां टीकौ कर्यौ, गई मुबारक ठौर ॥४७५॥
रह्यौ लुहागर जाइकै, खांनु जलाल जुधार।
नागौरीकौ देत दुख, पकरें वोट पहार ॥४७६॥
सूनो फतिहपुर सुन्यो, चित बीदा ललचाइ।
जानत काहू भांतिकै, गढ़मै पैठौ जाइ ॥४७७॥
बीदा दल बल जोरिकै, नरहर उतर्यो जाइ।
खानुं दिलावरसौं मिल्यौ, बात कही समझाइ ॥४७८॥
नांहि फतिहपुरमें कोउ, तुम चलि मोकौं देहु।
देउं रुपया दस सहस, अरु इक तनया लेहु ॥४७९॥
सुनियहु बात पठांन कैं, भाई है मन मांहि।
देइ दमामो उठि चल्यो, गहर लगाई नांहि ॥४८०॥
आवत आवत गोवरै, उतरे दोउ आइ।
भलो महूरत ना लहै, पैठे गढ़में जाइ ॥४८१॥

मानस दोर्‌यौ नगरकौं, गयो लुहागर मांहि ।
यहै कहै दीवानजू, फिर गढ़ पावो नांहि ॥४८२॥
बीदा आया कटक करि, खांनु दिलावर संग ।
ऐसौ कौन जु करि सकै, तुम बिन उनसौं जंग ॥४८३॥
जल्लौको बेटो बड़ौ, दौलतखां तिह नाम ।
बात सुनत ही चढ़ि चल्यो, अचवन नीर हरांम ॥४८४॥
आइ रही थोरी निसा, तब गढ़ पैठ्यो आन ।
दौलतखां जल्लो नंदन, देत जैत नीसांन ॥४८५॥
तब बीदा बिड्डरन लगे, लाग्यो डरुन पठांन ।
दहदह हुल खलभल भई, आये दौलतखांन ॥४८६॥
आप आपकौ भजि गयै, कमधज और पठांन ।
त्रास परे ज्यों बाघकी, भग्गे गऊ उद्यांन ॥४८७॥
पाछैंते आयौ उतहि, खां जलाल चहुवांन ।
जैत भई है पुत्रकी, बहु सुख उपज्यो प्रांन ॥४८८॥

॥ सवैया ॥

खां जलाल, मरद मुंछाल, चौपानकौ घान मैदानमें कीनौ ।
छार करी है, छपोलिय जरिकै, मरिहिंकै जु लुहागर लीनौ ।
गंज अंबेर, भये सब बरिय, टाक संमसखा ह्वै रह्यौ हीनौं ।
जूंभनू आनि, बिठायो भुजा गहि, टीकौ मुबारकसाहको दीनौं ॥४८९॥

श्री दीवान दौलतखांके पुत्र

१ नाहरखां, २ होंबनखां, ३ बाजीदखां ।

॥ दोहा ॥ नाहरखां बाजीदखां, होबनखां जुझार ।
दौलतखां नंदन नरिंद, तीनौ मरद मुछार ॥४९०॥

दौलतखांको बखांन

जबहिं भये बस कालकै, खां जलाल सिरमौर ।
तब दौलतखां जांन कहि, बैठे उनकी ठौर ॥४९१॥

दौलतखांसौ खेत चढ़ि, लरै सु अैसौ कौंन।
भै मानै भरमैं फिरै, दुर्जन छांडै भौन ॥४९२॥
बैरी आये नाक सब, घर झांकनकी आंन।
आक ढ़ाक छपते फिरै, हाक धाक चहुवांन ॥४९३॥
बिरद बहुत इन बातके, दौलतखां दीवांन।
ना भाजौं जो आइ हैं, लरन सात सुलतांन ॥४९४॥
और करी ही आन यहु, नाहिन लेउ अकोर।
जैसी कौड़ीकौ गनौं, तैसी लाख करोर ॥४९५॥
और कहत हे बात यहु, जौ बिन पावै कोइ।
कौड़ी हाथ न लाइ हौ, अरब खरब जो होइ ॥४९६॥
आवै जिती अंगुस्ट तर, सीव न दाबंन देउ।
और पराई भूमिकैं, रंचक दाबंन लेउ ॥४९७॥
दौलतखांमै ही कछू, रचनहारकी जोत।
बचन जु मुखते उच्चरत, सोई निहचै होत ॥४९८॥
बीका ढोसी गयो हौ, उतते आयो भाजि।
·····रंन चित चोख घरि, चल्यो उतहि दल साजि ॥४९९॥
पाटोधै डेरा भयो, तब पठये परधांन।
लूनकरन चिट्ठी लिखी, करिकै बहुत गुमांन ॥५००॥
दौला चीठी देखितैं, बैगौ मोपै आइ।
जौ अपनौ चाहैं भलौ, तौ कछु भुगत पठाइ ॥५०१॥
बाचत ही अति पर्जर्यो, खां जलालकौ पूत।
कह्यौ कांम लै भाड़कौं, या चीठीमै मूत ॥५०२॥
परधांननिकै देखते, मूत्यौ चीठी मांहि।
जरि बरिकै क्वैला भये, बोल सके कछु नांहि ॥५०३॥
बांधी अंचर बसीठके, बारू रेत मंगाई।
लूनैकै सिर रेत है, जो नां लरिहै आई ॥५०४॥

लूनेंसेती यौ कह्यौ, जो तूं चढ्यौ तुषार।
आई जो आयो नहीं, तौ रासिन्भ असवार ॥५०५॥
परधांननिकौ धके दै, काढ़े वाही बार।
कह्यो बसीठ न मारिये, नांतर डारत मार ॥५०६॥
जबहि गये परधांन उठि, सोच भयो पुर मांहि।
तब दौलतखां यों कह्यौ, बाकैं धर सिर नांहि ॥५०७॥
लूनकरनकें ढिग गये, फीकै मुख परधांन।
सकल बचन परगट करे, कहे जु दौलतखांन ॥५०८॥
लूनकरन सुनि रिस भर्‌यो, तब यहु कर्‌यो विचार।
आवत याकौ मारिहैं, पहलैं ढोसी मार ॥५०९॥
उतते चढ़ि ढोसी गयो, दलबल लये अपार।
आगै रहत पठांन हे, नीके लरे जुझार ॥५१०॥
तुरक मान कीनी मदत, जाँनत सकल जहांन।
हेंदू मारे खेत घर, भलौ पर्‌यौ घमसांन ॥५११॥
लूनकरन मार्‌यौ उतहि, लूटि लयो सब साथ।
तुरक मांन कवि जांन कहि, भले लगाये हाथ ॥५१२॥
पहलें हीते जो कह्यो, दौलतखां दीवान।
सोई निबर्‌यो होइकैं, अचल बचंन चहुवांन ॥५१३॥
दौलतखां बांकौ बली, नां कौ गंजै ताहि।
डांकौ बाजै जैतकौ, सांकौ मानहि साहि ॥५१४॥
बांकैं बांकैं ही बनें, देखहुं जियहि बिचार।
जो बांकी करवार ह्वै, तौ बांकौ परवार ॥५१५॥
बांकैसौं सूधौ मिलै, तौ नाहिंन ठहराइ।
ज्यों कमांन कबि जांन कहि, बानहि देत चलाइ ॥५१६॥

सुलतांन बाबरसुं दौलतखां मिल्यौ

बाबर काबिलते चल्यौ, ढीली देखन चाहि।
भेख कलंदरको कर्‌यौ, येक बाघ संग ताहि ॥५१७॥

आवत आवत फतिहपुर, इक दिन निकस्यौ आइ।
मिलि दीवांनसौं यों कह्यौ, येक मंगावहु गाइ ॥५१८॥
भूखौ है दिन तीनकौ, बाघ हमारौ आज।
दीजै गाइ मंगाइकै, ज्यौं पूरै मन काज ॥५१९॥
दौलतखां दीवाननें, दीनी गाइ मंगाइ।
देखौ मेरे देखतै, बछुवा कैसे खाई ॥५२०॥
मारनको बछुआ उठ्यौ, निकट तकी जब गाइ।
हाक दई दीवांननै, सिंघ सक्यौ नहिं जाइ ॥५२१॥
बाघ चलै उठि गाइकै, फिर हटकै दीवांन।
उहि ठौर ठाढ़ौ रहै, गऊ न पावै खांन ॥५२२॥
तब बाबरनै यौं कह्यौ, खां देखहु जु गाइ।
जौ तुम यासौं यों करी, तौ""रि जाइ ॥५२३॥
डिस्ट करेरीं सापुरस, सिंघ न सकै सहार।
मद कुंजरकौ . सूकि है, सुनिकै सुभट हकार ॥५२४॥
बाबर जब इतते गयो, देख्यो अलवर जाइ।
हसनखांनकैं कटककैं, देखि रह्यो भरमाइ ॥५२५॥
उतते ढीलीको गयौ, तक्यों सिकंदर साह।
पाछै काबिलकौ गयो, सकल हिंद अवगाह ॥५२६॥
पूछन आये लोग सब, ढिली मंडलकी बात।
तब बाबरनें यों कह्यौ, तकी तीनही जात ॥५२७॥
तीन पुरष असे तके, सगरे हिंदसतांन।
तिनकी सम कौ जगतमैं, डिस्ट न आवै आंन ॥५२८॥
येक सिकंदर आपही, ढीलीको पतिसाह।
पुनि मेवाती हसनखां, जाकै कटक अथाह ॥५२९॥
तीजौ दौलतखां तक्यौ, नगर फतिहपुर आइ।
जाके डरते बाघहूं, मार सक्यो नां गाइ ॥५३०॥

दौलतखां चहुवानकै, कीजै कहा बखांन ।
दीनदार दातार है, पुनि जूझार दीवांन ।।५३१।।

दौलतखांनैं गौर निरबांन मारे

लूंट चले नागौरके, गांव गोरि निरबांन ।
दौलतखां यहु बात सुनि, चढ्यौ बजे निसांन ।।५३२।।
मारगमें घेरे सकल, गौर और निरबांन ।
मच्यौ जुद्ध नारद नच्यौ, पर्यौ बहुत घमसांन ।।५३३।।
जीते अंत दीवानजू, दुर्जन मारे कूट ।
दौलतखां चहुवाननें, लूट लइ सब लूंट ।।५३४।।
चढ्यौ अहेरै येक दिन, दौलतखां दीवांन ।
बाज कुही बहरी जुरे, बासे संग अनग्यांन ।।५३५।।
बहरी छाडी कूंजको, गई निकट आकास ।
डिष्ट कहूं आवै नहीं, उठि आये तजि आस ।।५३६।।
जात जात बहरी गई, उतरी जाइ हिसार ।
उतहि बुलावत बाजकूं ठाढ़ें मीर सिकार ।।५३७।।
सौंपी लै सिकदारकौं, राखी करिकै प्यार ।
दौलतखां यहु बात सुनि, लई हिंसार कतार ।।५३८।।

दौलतखां आगै मुहबतखां साराखांनी भाग्यो

हो सिकदार हिसारकौ, नांव मुहबतखांन ।
साराखांनी सैन सजि, आयौ लरन पठांन ।।५३९।।
दौलतखां यहु बात सुनि, नासौ उतरे जाइ ।
उतते वहु उततें चढ़े, मिली सैन द्वै आइ ।।५४०।।
महबतखांनै दूरतें, देख्यौ दौलतखांन ।
मुख फीकौ उर धकधकी, बिचलन लागे प्रांन ।।५४१।।

सूधी कही पठांननें, अपनै दलसौं बात ।
दौलतखां चहुवानसौं, मौपें लर्‌यौ न जात ॥५४२॥
यौं कहि मिटि कै उठ चल्यौ, छूट गयौ है धीर ।
निकसि गयौ ज्यौ बाटमें, तन उपजी भै पीर ॥५४३॥
देत दमामें जेतके, आयौ दौलतखांन ।
कोट सुभट संमडिष्टहीं, मारत है चहुवांन ॥५४४॥
खां सहाबसौं खेत चढ़ि, नीकौ कर्‌यौ बचाव ।
जो को नांतौ पालिहै, सो ना ताकत दाव ॥५४५॥
आपहि मारत आपही, सु कर्माहिंसो जात ।
गोत घाव जो कीजीये, मनहु करी अपघात ॥५४६॥
डारी येक डुराइये, डोरि हिंडारि अनेक ।
जे उपजे रज येकते, है तिनकी रज येक ॥५४७॥
जो रज खोवै गोतकी, लजत नांहि ज्यो मांहि ।
कै वाहूमें रज नहीं, कै उहि रजकौ नांहि ॥५४८॥
दुख पावत दुख गोतकै, है सु तिलक कुल अैन ।
फलिका पाइ पिरातु है, नींद न आवत नैंन ॥५४९॥
दौलतखांके सुभ वचन, सुनहु सबै दै चित्त ।
तीन बात दीवांनजू, कहत रहत यो नित्त ॥५५०॥
करता जानहु येक करि, जिन मन आनहु दोइ ।
सब रचना आपै रची, संगी लयो न कोइ ॥५५१॥
धीरज देहु न छाड़िकें, डरहु न बिन करतार ।
कहा भयो दुर्जन भये, जौपें लाख हजार ॥५५२॥
कहा भयो कवि जांन कहि, बैरी बकी कुबात ।
कबके गिर गिर कहत हैं, पै गिरना गिरजात ॥५५३॥
और कहत दीवांन जू, समझहु बात बिबेक ।
न्याइ समै दुर्जन सजन, दोऊ जानहु येक ॥५५४॥

भयो सिकंदर छत्रपति, मर्‌यो जबहिं बहलोल ।
दौलतखां नाहिंन बदै, भुजबर करै किलोल ॥५५५॥

॥ सवैया ॥

दौलतखा चहुवान अपनै भुजनि पांनि
होइ मतिवारौ हाथी अरि चीर मारी है ।
देखै गज सैंन तब रंचक बदै न कछु
सूकै मद गज बाघ होइकै बिदारी है ॥
सिंघकौं तकेते पल कल सारदूल होइ
सारदूल देखकै भुजनि बर मारि है ।
नंदन जलालखांकौ बाज होइ ततकाल
धावै खल दल जब तीतुर निहारि है ॥५५६॥
दौलतखां चहुवांन मलिकै नागोरी मान
तिमरके दलबल भीलि भांत भंजे हैं ।
महबतखांन साराखांनी हू भजाइ दीनौ
गौर निरवान मारे गढ़ कोट गंजे है ।
अरिनं नारि बंन बंन.................
पानीयो न पावै अंग मंजनन मंजे है ।
तनमै न भूषन न बसन भूखी डोलत
मुख न तंबोर द्रिग अंजन न अंजे है ॥५५७॥

॥ दोहा ॥ भयो मुबारक साहकै, बड़ड़ो खांन कमाल ।
ताकौं दीनी झूंझनू, और सबै बित माल ॥५५८॥
दूजौ पुत्र सहाबखां, ताकौ नौहां दीन ।
जीयौ तौलौ उत रह्यौ, भईयाको आधीन ॥५५९॥
दोउ भइया जब मुये, गोनें छाड़ि जहांन ।
पूत रहे इंन दुहुनके, तिनकौ करौ बखांन ॥५६०॥
बेटा खांन कमालको, भीखनखां तिह नांव ।
राज झूंझनमें करै, वाकै बस पुर गांव ॥५६१॥

बेटा खांन सहाबकौ, महबतखां तिह नांम।
भीखनखांसूं चोख चित, पै नित करत सलाम ॥५६२॥
भीखनखांहूनै लख्यौ, कपट महोबतखांन।
तबते डिस्ट न जोरिहै, मनमें बढ़ी रिसांन ॥५६३॥
तब नौहांकौं, छाडिकै, चल्यौ महोबतखांन।
आइ फतिहपुरमैं रह्यो, राख्यौ दौलतखांन ॥५६४॥
महबतखां बेटी दई, फदनखांनको चाहि।
ज्यों लै दैहै झूंझनू, दैन जोड़ाये आहि ॥५६५॥
केतक दिन सेवा करी, बहुरि बीनती कीन।
मोकौं भीखनखांननें, देस निकारौ दीन ॥५६६
दौलतखां तब यों कह्यो, नौंहां तेरी आहि।
देखें कौन निकारिहै, तूं उत बेगौ जाहि ॥५६७॥
जो भीखनखां ना रहै, मानस देहि पठाइ।
वाकों नीकी भांतसों, राखौंगौं समझाइ ॥ ५६८॥
नौंहां बैठ्यौ जाइकै, जबहि महबतखांन।
भीखनखां यहु बात सुनि, दल साजे अनग्यांन ॥५६९॥
महबतखां तब सुनत ही, मानस दयो पठाइ।
नाहरखां इतते चढ्यौ, पुंहच्यौ, बेगो जाइ ॥५७०॥
इतते महबतखां चढ्यौ, उतते भीखमखांन।
आभूसरकै ताल पर, भलौ पर्यौ घमसांन ॥५७१॥
नाहरखांकौं देखिकै, भीखनखां थहराइ।
जैसें नाहरकें तकें, बिझुकै भज्जै गाइ ॥५७२॥
भीखनखां तब भजि गयो, जीत्यो नाहरखांन।
महबतखांको झूंझनू, लै बैठाओ आंन ॥५७३॥
नाहरखां जुध जीतिकै, आये बजत नीसांन।
गरै लगायो प्यारसौं, दौलतखां दीवांन ॥५७४॥

जौलौं दौलतखां जिये, साके किये अपार ।
अंत न कोउ थिर रहै, या झूठै संसार ॥५७५॥

दीवान नाहरखांके पुत्र

१ फदनखां, २ बहादरखां, ३ दिलावरखां ।

॥ दोहा ॥ बड़ौ फदनखां जानियों, और बहादरखांन ।
पुनहि दिलावरखांन है, जानि लेहु कहि जांन॥५७६॥

नाहरखांकौ बखान

॥ दोहा ॥ जबहि भये बस कालकैं, दौलतखां सिरमौर ।
तब नाहरखां जांन कहि, भयौ पिताकी ठौर ॥५७७॥
करता दीनी लच्छिमी, निसदिन करत कलोल।
पातुर चातुर रूप बर, बहुत लई है मोल ॥५७८॥
नचैं अखारौ रैंन दिन, छिन छिन कौतिग होइ ।
राज मांन दीवान ये, रागलीन है दोइ ॥५७९॥
मरद मुछार जुझार है, उठ्यो लहे बहु बंक ।
भौ मानत है भोमियां, करै सिंवारी संक ॥५८०॥
बीकावतनैं सोचि कैं, दूरि करि चित चोख ।
लूनकरन बेटी दई, उपज्यो अति संतोख ॥५८१॥
पहलै बोल कियो हुतौ, जीवत लूनकरन ।
दई वजीरनि ब्याहि कैं, आये चरन सरन ॥५८२॥
जबहि सिकंदर मरि गयो, भयो बिराहिम साह ।
वाकौ हनि दिल्ली लई, बाबर दई इलाह ॥५८३॥
भयो हमाउं पातसाह, बाबर पाछै जान ।
सेरसाह पाछै भयौ, समये नाहरखांन ॥५८४॥
सेरसाह आदुर दयौ, नाहरखांनु निहार ।
मामूं कहि बातैं कहत, और करत बहु प्यार ॥५८५॥
सेरसाह ऐसें कह्यौ, नगर आपुनै जाहु ।
कर्‌यो फतिहपुर पेसकस, घर बैठे तुम खाहु ॥५८६॥

चोवा नाहरखानकै, निकसत उत्तिम आहि ।
बास मगंन ह्वै रीझिकैं, मांग लयो पतिसाहि ॥५८७॥

महलकौ सबता

॥ दोहा ॥ अपने मनकी उकत सौं, महल चिनायो येक ।
वैसौ जगमै और नां, घन दीवाँन बिवेक ॥५८८॥
पंद्रह सै जु तिरानुंवै, महल रच्यो दीवांन ।
भादौ सुदि आठैं हुती, सोमवार कहि जांन ॥५८९॥

नाहरखांनै जगमाल पंवार भजायो

॥ दोहा नागौरी खां पर चढ्यो, राना दल बल साज ।
इनहू सुनि मांडे चरन, ही आगैकी लाज ॥५९०॥
कूरम कमधज सकल ही, मांनत खांकी आन ।
दिल्लीकौं जानत नहीं, बदत न मुगल पठांन ॥५९१॥
आये गांगा जैतसी, सूजा पिर्थी राज ।
और भोमिया निकटके, सब आये करि साज ॥५९२॥
नागोरी चिठ्ठी लिखी, टेरे नाहरखांन ।
रानैकौ आंवन सुन्यौ, चढ्यो तंत दीवांन ॥५९३॥
नीकी सैन बनाइ कै, चक्रवती चहुवांन ।
निकट गये नागौरकें, देत जैत नीसांन ॥५९४॥
उतहि जाइ असैं सुन्यौ, नागोरी गढ़ मांहि ।
रानौ बाहर कोस पर, निकसि लरत है नांहि ॥५९५॥
रिस उपजी चहुवान चित, नां पैठ्यौ नागौर ।
तीन कोस आगै गयो, सुभटनिकौ सिरमौर ॥५९६॥
खां सुनि पाई बात यहु, मानस दयो पठाइ ।
चले अकेले तुम कहां, हमपै उतरौ आइ ॥५९७॥
नाहरखां तब यों कह्यौ, रानौ उतर्यौ पास ।
वोट गही तुम कोटकी, नाहिन लेत निकास ॥५९८॥

हौं पाछै आवत नहीं, आगै उतर्यौ जाइ।
जो मिलबेकी हौंस है, इतहि मिलहु तुम आइ ॥५९९॥
नागौरी खां सुनत ही, चढ्यौ बजे नीसांन।
आयो नाहरखांनपै, मिलि सुख उपज्यो प्रान ॥६००॥
तब रानों यहु बात सुनि, निसही गयो पराइ।
हाक धाक सुनि सुभटकी, काइर क्यों ठहराइ ॥६०१॥
खाँ उठि दौर्यौ खोजहीं, जित जित निकस्यो रांन।
आगै पाछै जात है, जैसें रैन बिहान ॥६०२॥
राना बर्यौ पहाड़में, फिरी सैन नागौर।
गांव लये सब लूंटि कै, बंची न कोऊ ठौर ॥६०३॥
आवत है ये उमंगसौं, लूंट चले चित चाइ।
तब जगमाल पंवारनै, मांनस दयो पठाइ ॥६०४॥
करत जाहु रजपूत मुहि, जो तुम मैं रज होइ।
पहुँचौ जौ ठाढ़े रहौ, पहर येक कै दोइ ॥६०५॥
रानैनै अजमेर मुहि, सौंपी ही कर प्यार।
देस लूंटि कै तुम चले, करत जाहु इक रार ॥६०६॥
किनही मुख लायो नहीं, तब उठि चल्यो बसीठ।
काहूकौ नाहीं बदै, गार देत मुख ढ़ीठ ॥६०७॥
नाहरखां यहु बात सुनि, नाहिनं सक्यो सहार।
मानस तबही पंवार कौ, अपतन लयो हंकार ॥६०८॥
हरयें हरये आइयहु, भाषहु जाइ पँवार।
हौं नाहरखां बागरी, जाउं न बिना जुहार ॥६०९॥
नाहरखां ठाढ़े रहे, और गये सब छाडि।
नां राखी पहिचान कछु, ना रजवटकी आडि ॥६१०॥
नागोरी नगरी तकी, बीकै बीकानेर।
सूजै ताक्यौ अमरसर, आंबैरै आंबेर ॥६११॥

नाहरखाँ निहचल रह्यौ, धरि अपनै मनि धीर ।
क्यों न होइ जिह बंसमै, पिरथी रा हमीर ॥६१२॥
मारग तकै पंवारकौ, मकरानैंकै ताल ।
ताही मै बहु दल लये, आयो डिठ जगमाल ॥६१३॥
फौजदार अजमेरकौ, हौ जगमाल पँवार ।
रानैकै दल बल लये, हय नर अमित अपार ॥६१४॥
दहूं वोर बांटी अनी, बनी सैंन जूझार ।
छूटत है गोली घनी, बरिषा बान अपार ॥६१५॥

॥ गैनन्दछन्द ॥ उमडे कटक दहुं वोरके, घमंडे मनौ घनस्याँम ।
हथियार चमकत देखीये, ज्यों बीजुरी अभिरांम ॥६१६॥
इंद जैसै गज्जिहै, त्यों बज्जिहै नीसांन ।
बुंद नाई बरसिहै, बरिखा लग्गी बहु बांन ॥६१७॥
छेद करिहैं अंगमैं, चलिहै छछोहे बांन ।
कटिहै कटि मुंड कर, जित लागि है किरपांन ॥६१८॥
चहुवांन पंवार मिलिकै, कर्‌यौ है घमसांन ।
सुभट सुभटनि लरि मरै हैं, पर्‌यौ कीचक धान ॥६१९॥
खेल जुद्धकै खेले भले, जोध रची धमाल ।
लरत नांहिन मिटे रंचक, कटे मरद मुंछाल ॥६२०॥
चले नारे खार रत भयो, लाल सगरो ताल ।
अंत जीत्यो खांन नाहर, भाजियो जगमाल ॥६२१॥

॥ दोहा ॥ नाहरखांनै खेत चढ़ि, पूठ कहूं ना दीन ।
दौलतखांकै नंदनै, आगै ही धस लीन ॥६२२॥

॥ सवैया ॥ दौलतखां नंदन जग बंदन नाहरखां नाहर है मानौ ।
चढ़ै तुरंग कुरंग होहिं अरि गउवनकी ज्यों परत भगाँनौ ।
मकरानै जगमाल भजायौ हाक धाक भै मानत रानौ ।
जाकी भुजा प्यारकर पकरी महबतखां ज्यों पार लगानौ ॥६२३॥

श्री दीवांन फदनखांके पुत्र

१ ताजखाँ, २ पेरोजखाँ, ३ दरियाखां।

॥ दोहा ॥ ताजखानु पेरोजखां, तीजौ दरियाखाँन।
फदनखानुके नंद हैं, पर्गट सकल जहांन ॥६२४॥

अथ फदनखांको बखांन

॥ दोहा ॥ जबहिं भये बस कालकें, नाहरखां सिरमौर।
तबहिं फदन खां जांन कहि, बैठे उनकी ठौर ॥६२५॥
फदन खांन दीवानकैं, ग्यान दयौ करतार।
सम लुकमाँन हकीमकी, देत सकल संसार ॥६२६॥
दिल्ली मांह सलेम साह, भयो जबहि पतिसाहि।
कीनी बहुत पठांननैं, फदन खांनकी चाहि ॥६२७॥
महबतखां सुत खिदरखां, फदन खांनके पास।
ठाढ़ौ हौ पतिसाहनैं, ग्रैसें कर्यौ प्रकास ॥६२८॥
फदन खांन तूं ग्राव इत, वहन तिहारी ठौर।
कहा भयौ भइया भये, तूं सबमें सिरमौर ॥६२९॥
बहुर हुमायों आइ कें, भयो दिल्ली सुलतांन।
फदन खांनुकौ टेरकैं, दीनौ ग्रादुर मांन ॥६३०॥
जब ग्रकबर दिल्ली भयो, साहिनकी मनसाह।
फदन खांन दीवांनसौं, कीनौ हेत निबाह ॥६३१॥
ग्रमित प्यार निसदिन करत, ग्रकबर साह सुजांन।
फदन खांनु चहुवांनकौ, जगुमें बाढ्यौ मान ॥६३२॥
करी बीनती बीरबल, देखि छत्रपति प्यार।
इत्ती मया तुम करत हौ, या पर कौंन बिचार ॥६३३॥
पातसाह तब यों कह्यौ, सुनि बर बीर बिचार।
ग्रौर बड़े मेरे किये, ये कीने करतार ॥६३४॥
साढ़े तीन कुली कहै, रजपूतनकी जात।
तोहि कहौं समुझाइ कै, सुनि लै तिनकी बात ॥६३५॥

चाहुवाँन तुंवर दुतीय, तीजौ आहि पंवार ।
आधेमें सगरे कुली, साढ़े तीन बिचार ॥६३६॥
जैसें सब बाजित्रमें, है बड़डौ नीसांन ।
तैसें सब ही जातमें, बडो गोत चहुवांन ॥६३७॥
फदन खांनु सौं यों कह्यो, छत्रपति अकबर साहि ।
हमसौं तुम नातौ करहु, पूजै मनकी चाहि ॥६३८॥
अकबरकौं बेटी दई, फदन खानुं चहुवांन ।
बढ्यौ प्यार बहु प्यारमैं, अति सुख उपज्ये प्रांन ॥६३९॥
पातसाहकौ नां परै, भुमियनकौ पतियार ।
हेंदू गुमरह होत हैं, फिरत न लावै बार ॥६४०॥
तौ हौं मनसब देउं तुम, जो तुम देहु जमांन ।
तब सबके जामिन भये, फदन खानु चहुवांन ॥६४१॥
राइसालकी बांहि गहि, फदन खानु सुलतांन ।
दरबारी करवाइ कैं, द्यायो मनसब मांन ॥६४२॥

फदन खांनै बीदावत भगायो

॥ दोहा ॥ बीदावत नाहिंन रहत, चोरी करि करि जांहि ।
फदन खांन दीवाननें, रोस धर्यो जिय मांहि ॥६४३॥
बदत न बीकानेरकौ, फदन खानु दीवांन ।
दल कर बीदाहद गये, देत निडर नीसांन ॥६४४॥
पहुंचे छापर दूनपुर, बीदे गये पराइ ।
लर न सके दीवांनसौं, छूटे सबके पाइ ॥६४५॥
बीदाहदहि विध्वंस कै, आये हैं दीवांन ।
बीदावत बन्यों चले, करि चोरीकी आंन ॥६४६॥

फदन खांनै छापौली वा पूष मारी

॥ दोहा ॥ निरबाननि ऊपर चढ़े, करि कै कोप दीवांन ।
लये सुभट पखरैत बहु, देत जैत नीसांन ॥६४७॥

निरबांननि पर जांन कहि, बहुत परी है मारि ।
छापौरी अरु पूंख पुनि, जारि बारि की छारि ॥६४८॥
फदन खांनसौं लरि सकै, ग्रैसौ कौन जूझार ।
नाहरखांकै नंदकौ, मानत सब संसार ॥६४९॥
॥ सवैया ॥ नाहरखाँनु नरिंद नराधिप नंदन फदनखांनु सिर मौर ।
करि दल गयो दून पुर छापर, ना ठहराइ सके राठौर ।
छापौरी अरु पुंख रोष ह्वै धूरि मिलाई येक्कै दोर ।
भये सहाइ बहादरखांके ले कै दई झूंझनू ठौर ॥६५०॥

श्री दीवांन ताजखांके पुत्र

१ महमदखां, २ महमूदखां, ३ सेरखां, ४ जमालखां,
५ जललखां, ६ मुजफरखां, ७ हैबतखां, ८ हबीबखां ।

॥ दोहा ॥ महमदखां महमूदखां, सेरखांनु दीदार ।
खांन जमाल जलालखां, मुजफरखां जूझार ॥६५१॥
हैबतखां जु हबीबखां, अष्ट ताजखां नंद ।
ये लागत हैं चंदसे, और सिंवारी मंद ॥६५२॥

ताजखांकौ बखांन

॥ दोहा ॥ जबहि भये बस कालके, फदन खानुं सिरमौर ।
तबहि ताजखां जाँन कहि, बैठे उनकी ठौर ॥६५३॥
ताजखांनकै रूपकी, परी जगतमें रौर ।
बिन पूछयौ ही जानिये, आहि बंस सिरमौर ॥६५४॥
उजियारें दौलत खां, सुन्यो रूप दीवांन ।
तब चितराइ मगांइ कै, रीझ्यो देखि पठांन ॥६५५॥

ताजखांकी फतिह

॥ दोहा ॥ अलवर ते दल कर चढ़ें, ताजखानुं चहुबांन ।
मारी सारां खरकरी, पुनि गढ़ येदल खान ॥६५६॥

मलिक ताजकौ लूंटि कै, ताजखानुं चहुवांन ।
थांनौ रैबारी हन्यौ, जानत सकल जहांन ।।६५७।।

।।सवैया।। अलवर ते दलबल कर धायो तरवार ताजखानुं चहुंवांन ।
मारी सारां और खरकरी लूटि लयो गढ येदलखांनु ।
मलिक ताजकौं भंजि गंजिकै राइमलहिं हरखे दीवांनु ।
बिचरायौ रैवारी थांनौं प्रगट्यौ है जसु सकल जहांनु।।६५८।।

।। दोहा ।। ताजखांन कौ बड़ौ सुत, महमदखांनु चहुवान ।
ग्यानवंत दाता सुभट, सम को नांही आन ।।६५९।।
अरथ दुर्यो ततछिन लहत, चातुर ग्यान अपार ।
इंछया पूरत सकलकी, महमदखां दातार ।।६६०।।

श्री दीवांन महमदखांके पुत्र

१ अलिफखां, २ इबराहिमखां, ३ सरमसतखां ।

।। दोहा ।। अलिफखांनु कुल तिलक है, पुनि इबराहिमखांन ।
तीजौ खां सरमसत है, जानि लेहु कहि जांन ।।६६१।।

महमदखांकी फतिह

।। दोहा ।। महमदखां साधे भलै, क्यारौ पुनि बैराठ ।
करवर कैंबर जांन कहि, जेर करी है राठ ।।६६२।।
कुंभकरन मांडन नंदन, कूंपावत राठौर ।
दीनौ खेत खिसाइ कै, महमदखां सिरमौर ।।६६३।।

।। सवैया ।। ताजखांनु सुत तिलक सुभट मैं महमदखांनु मरद मुछार ।
क्यारौ अरु बैराठ तेग बर साधे अरि लागे पग हार ।
कुंभकरन मांडनको नंदन खैत खिसाय दयो जूझार ।
दीनदार सरदार छबीलो भोज करन सम बुद्धि दातार ।।६६४।।

।। दोहा ।। भर तरुनापै मरि गये, महमद खां चहुवांन ।
पूत पिलापहलैं मरै, यातैं कठिन न आंन ।।६६५।।

अति दुखि पायो ताज खां, पै कछू नांहि बसाइ।
रुदन करै असुवां बिना, कछू हाथ नहिं आइ ॥६६६॥
पाछैं रह्यौ सपूत अति, अलिफ खाँनु चहुबान।
पं.तैकें सिर कर धरयो, ताजखानु दीवांन ॥६६७॥
पातसाह पैं ले गये, पोतैंकौ दीवांन।
मेरे घरमैं यहु बड़ौ, याकौ दीजै मांन ॥६६८॥
कीनौ प्यार जलालदी, सुनी ताजखां बात।
होनहार बिरवा तक्यो, चिकनें चिकने पात ॥६६९॥
जोलौं जीये ताजखां, रखे अलिफखां संग।
पल न्यारे नाहिंन करै, है मानौं अरधंग ॥६७०॥

श्री नवाब अलिफखांके पुत्र

१ दौलतखां, २ न्यामत खां, ३ सरीफखां, ४ जरीफखां, ५ फकीरखां।

॥ दोहा ॥ बडड़ौ दौलत खाँनु है, दूजौ न्यामत खांन।
खांन सरीफ जरीफ खां, पुनि फकीर खां जांन ॥६७१॥

नबाब अलिफखांन बखांन

॥ दोहा ॥ जबहिं भये बस कालके, ताजखाँनु सिरमौर।
अलिफखांनु दीवांन तब, बैठे उनकी ठौर ॥६७२॥
टीकै दयो जलाल दी, गज घोड़ा सरपाव।
नगर फतिहपुर पुनि दयो, छत्रपति आयो भाव ॥६७३॥
पातसाह कीनी मया, बाढ्यौ मनसब मांन।
दयो फतिहपुर छत्रपति, लिखि अपनो फुरमांन ॥६७४॥
अलिफ खांनु दीवानकै, आनंद बढ्यो प्रांन।
पठय दयो फुरमांन घर, अलिफखांनु ततकाल।
स्याँमदास मानैं नहीं, कूरम सुत गोपाल ॥६७५॥
हुतौ फतिहपुरमैं तबही, सेरखांनु सिकदार।
कूरम दये निकारि कै, जीत्यौ राइ मुछार ॥६७६॥

नंद बहादुर खांनकौ, समसखांनु सिरमौर।
पिता मुवौ तब झूंझनू, बैठ्यौ उनकी ठौर ॥६७७॥
भइया और बदै नहीं, निस बासुर दुख देत।
अलिफ खांन दरगह गये, संग आपुनै लेत ॥६७८॥
समसखांनकी बांहि गहि, अलिफखांन दीवांन।
लै मिलयौ पतिसाहकौं, द्यायो मनसब मांन ॥६७९॥
अबलौं यों आई चली, असौ करम इलाहि।
वहै झूंझनू ह्वै बड़ौ, करै फतिहपुर जाहि ॥६८०॥
अकबर झुक्यौ पहारसौं, बहुत भयो चितभंग।
जगतसिंघ पठयो उतहि, अलिफखानु दै संग ॥६८१॥
पैठे जाइ पहारमें, जगतसिंघकै साथ।
द्रुवननिकौं दीवान जू, नीके लाये हाथ ॥६८२॥
मारी जाइ धमेहरी, और तिहारा गांव।
बासो बिचरयो खेत चढ़ि, भलौ भयो जगु नांव ॥६८३॥
राजा आप तिलोकचंद, डरत मिल्यौ है आइ।
संग लाइ कै ले गये, पातसाहकै पाइ ॥६८४॥
रानै ऊपर जब चढ़े, रिस धर साह सलेम।
अलिफखानुं पतिसाहि पै, मांगि लये करि पेम ॥६८५॥
बाटे थाने जाइ उत, साहि सलेम विचार।
थानौं दीनो सादरी, अलिफखांन सरदार ॥६८६॥

दीवाननै रानैंकौ थानौ मारयो

॥दोहा॥ रानैकौ थानौ तक्यौ, अलिफखानुं सिरमौर।
चक्रवती चहुवाननै, उत कौं कीनी दौर ॥६८७॥
परी लराई अति भली, चली बात सैंसार।
रानैकै दल अलिफखां, मारे अमित अपार ॥६८८॥
तबहि चिनायो चौंतरा, अरि सिर काटि अपार।
लूंट बहुत ही कर चढ़ी, सुजस भयो संसार ॥६८९॥

तब रानौ यह बात सुनि, काटि काटि कर खाइ ।
पै अमरा दीवानकै, थानै सक्यौ न आइ ॥६६०॥
ऊंटौलै हौ समसखां, उत आयौ कर साथ ।
रानैकौ चहुवांननै, भले लगाये हाथ ॥६६१॥
सहजादै यह बात सुनि, कीनौ प्यार अपार ।
कह्यौ अलिफखां समसखां, जुगल बड़े जूझार ॥६६२॥
जबहि भये बस कालके, अकबर साह जलाल ।
बैठ्यौ तबही तखत पर, साह सलेम मूंछाल ॥६६३॥
जबते बैठे तखत पर, जहांगीर हुव नाम ।
निस दिन आठौं जाममैं, देबै ही सूं काम ॥६६४॥
अलिफखांन दीवानसौं, बहुतै किरपा कीन ।
नगर फतिहपुर प्यार कर, लाल मुहर करि दीन ॥६६५॥
राइ मनोहर अलिफखां, पठय दये मेवात ।
मेव सेव लागे करन, भेट देहिं दिन रात ॥६६६॥

दलपत ऊपर बिदा भये

॥दोहा॥ दलपत बीकानेरीये, कटक करे अनग्यांन ।
बदत नहीं पतिसाहकौ, लूंटत फिरत जहांन ॥६६७॥
दलै भजायो ज्याव दी, कर दल सरसै जाइ ।
बित लूट्यौ पतिसाहकौ, फूल्यौ अंग न माइ ॥६६८॥
बात सुनत पतिसाहकैं, रिस न समाई अंग ।
पठये सैख कबीर पुनि, अलिफखांनु जुग संग ॥६६९॥
बीस और उमराव संग, चले लरनकै चाइ ।
दलपति रहि नांही सक्यौ, सरसे उतरे आइ ॥७००॥

सरसैं मांहि लराई भई उमरावनिसौं

॥दोहा॥ पानी ऊपर आपमैं, मच्यौ येक दिन जुद्ध ।
अपने अपने कटक लै, आयै सबै विरुद्ध ॥७०१॥

येक भये उमराव सब, आपुनमें करि आंन।
येक वोर इकईस है, येक वोर दीवांन ॥७०२॥
छूटे गोली नाल बहु, फूटैं हय गय मुंड।
कूटैं कर करवार लै, टूटै सुभटनि झुंड ॥७०३॥
गज सेती गज लरत है, बजत सारसौं सार।
सुभट सुभट लट पट भये, करत मार ही मार ॥७०४॥
इत उत कै मूये सुभट, साहस सत सधीर।
बीच परे तब आइ कै, आपुन सैख कबीर ॥७०५॥
कीनी सैख कबीरनै, मनोहार दीवांन।
पहलैं हाथ लगाइ अति, पाइ लगाये आंन ॥७०६॥
येक लरचो इकईस सौं, करता रखी पटीठ।
सबकौं भंजत अलिफखां, सैख न होत बसीठ ॥७०७॥
अलिफखांन उमराव सब, करे तेग बरजेर।
मालामैं मनके बहुत, पै पूजत ना मेर ॥७०८॥
बहुरौं येक मतौ कियो, सबननि मिलि दीवांन।
दलपति पर दल कर चढ़े, बजत जैत नीसांन ॥७०९॥
भाठूमें दलपति हुतौ, संग बहुत सरदार।
उमंडे दल पतिसाहके, ज्यों घन घटा अपार ॥७१०॥
गोल चंदोल भये जब कोउ, जरंगोल बरंगोल।
अलिफखांनु दीवान तब, अपुन भयो हिरोल ॥७११॥
जबहि आइ सनमुख भये, अलिफखांनु सिरमौर।
सही न हौंल हिरौलकी, भाजि चल्यौ राठौर ॥७१२॥
दलनि दबायो जाइ कै, तब दलपत बिललाइ।
खांन जलाल मुछालसौं, पठयो यहै कहाइ ॥७१३॥
तुम मेरे भइया बड़े, और कहूं हौं काहि।
अलिफ खांन जू सौं कहौ, थांभै दल पतिसाहि ॥७१४॥

लूंनकरन परतापसी, राजा जोधा माल।
उनकौ नातौ देखि कै, होहुं अबहि प्रतिपाल ॥७१५॥
इन पांचों दीनी सुता, सु तौ इहिं दिन काज।
तुम विन अैसौ कौन है, जिहि भुमियांकी लाज ॥७१६॥
तब दल थांभे अलिफखां, दलपति भयो उबार।
फिर पठयो पतिसाह पैं, कीनौ प्यार अपार ॥७१७॥
टेरचो सेख कबीर जब, दिल्लीके सुलतांन।
आयो वाकी ठौर तब, इतहि मुबाराखांन ॥७१८॥

भिवांनी फतह की

॥ दोहा ॥ तब दीवांन पठान मिलि, चले भिवानी कोप।
आगै जाटू जावले, रहे भलैं पग रोप ॥७१९॥
लागे गढ़ई जाइ कै, गोली चली अपार।
को आगै पंग नां धरै, डरपैक असवार ॥७२०॥
तब उमड़े दीवांन दल, डागी गढ़ई तोरि।
जो जाटू सनमुख भयो, मारचो मींड मरोरि ॥७२१॥
दंत तिनौलेकै भजे, जाटू तजिकै ठांव।
सुजसु भयो दीवांनकौ, लूटि लयो सब गांव ॥७२२॥

मेवातकी फौजदारी पाई

बोलि लयो पतिसाहनैं, अलिफखांनु सिरमौर।
कह्यौ अबहिं मेवात पर, करहु येक तुम दौर ॥७२३॥
दै हय गज सरपाव अरु, मन सब बहुत बढ़ाइ।
बिदा किये मेवातकों, चाहुवांन चित चाइ ॥७२४॥
आवत हीसारां प्रथम, मारि मिलाई छार।
जे भाजे तेई बचे, मरे करी जिन रार ॥७२५॥
कारहंडै डेरे कीये, फिरू सारां कौ मार।
मेव मिले उत आइ कै, अैसी मानी हार ॥७२६॥

पेस करी घोरी तुपक, बसे तलहटी ग्राइ।
इनहि साधि तबघन हटौ, नीकै मारचौ जाइ ॥७२७॥
उतहू मेव भले लरे, मरे परे ह्वै टूक।
उपजी रौर पहारमैं, धार धारमें कूक ॥७२८॥
सगरै जंबू दीपमैं, पुहंची है यह बात।
ग्रलिफखांन नीकी करी, पात पात मेबात ॥७२९॥

दच्छिनकों बिदा भये

बिदा कीये पतिसाहनै, दच्छिनकौं दीवांन।
सहिजादै परवेज संग, दलकौ ग्राइ न ग्यांन ॥७३०॥
पुँहचे जब बुरहानपुर, थानें बांटे सर्ब।
तब मलिकापुर ग्रलिफखां, लीनों रजवट गर्ब ॥७३१॥
सहिजादे चढ़ि ग्रापहू, गये येदलाबाद।
ग्रागैकौं पठये कटक, चले लये मंनबाद ॥७३२॥
खांननि खां आपुन चढ़े, लोदी खांन जहांन।
ग्रबदुल्लह जखमी चढ़े, ग्रौर चढ़े बहु खांन ॥७३३॥
मानसिंघ कूरम चढ़े, राइसिंघ राठौर।
काकौ काकौ नांव ल्यौं, चढ़े बहुत सिरमौर ॥७३४॥
ग्रंबर ग्रायौ साजि दल, गनती ग्रावै नांहि।
जैसे बादर देखियें, ग्रनगन ग्रंबर मांहि ॥७३५॥
येकल राईकी भली, ग्रबदुल्लह सिरमौर।
ग्रंत चरन पैं छुटि गये, ठाहर सके न ठौर ॥७३६॥
ग्रबदुल्लहके बिचरतैं, बिचर भई दल मांहि।
ग्राये सब बुरहानपुर, कहूं रह्यो को नाँहि ॥७३७॥
थांने सबही उठि गये, रह्यौ नहीं को ठोर।
मलिकापुर बैठे रहे, ग्रलिफखांनु सिरमौर ॥७३८॥
सब मीतनि चिठी लिखी, तुम रहिहों किहि काज।
पंच करै सो कीजिये, यामैं कैसी लाज ॥७३९॥

उतर लिख्यो दीवान जू, तुम पीरत मो पीर।
पै हौं कैसे आइ हौं, लागै लाज हमीर ॥७४०॥
दच्छिनके दल अति प्रबल, चलि आये चहुंवोर।
दिस दिस धुखासे धसे, दुंदभ घंनकी घोर ॥७४१॥
मलिकापुर घेरौ कीयौ, दच्छिनके दल आंन।
दहूं वोर छूटन लगे, गोली गोला बांन ॥७४२॥
दहूं दलतै गोली चलै, जांन सु यहै सुभाइ।
मरन संदेसै देत है, जुगल वोरते आइ ॥७४३॥
मलिकापुर लै ना सके, करि बहुत ही रार।
दछनी दल दीवानके, आगे भाजे हार ॥७४४॥
बात सुनी परवेजनें, रहे न थानें आंन।
मलिकापुर लरिकै रख्यौ, अलिफखानं चहुवांन ॥७४५॥
सहजादै तब यों कह्यो, अलिफखानं चहुवांन।
अटलखांन है साचलौ, अैसौ सुभट न आंन ॥७४६॥

दीवांन नै थांने साधै

॥ दोहा ॥ भीलनकौ थानौं कठन, लेत न को उमराइ।
मलिकापुरते अलिफखां, तब उत दयो पठाइ ॥७४७॥
ढील नैकु लाई नहीं, भील हने तब जाइ।
परी पपीलक बापरी, तरै पीलकैं पाइ ॥७४८॥
बहुर जालवापुर गये, साधे सब मैवास।
सगरै जगमैं पर्गटी, सुजस फूलकी बास ॥७४९॥
उतते कीनी जाइ कै, फतिह फतिहपुर गांव।
अलफखांन दीवांनकौ, भयौ जगतमें नांव ॥७५०॥
ना छाड़ै मेवासकौ, यहै अलिफखां टेव।
आइ मिले स्यो गांवके, लागे करनै सेव ॥७५१॥
अलिफखानं चहुवान पर, आयो छत्रपति भाव।
मनसब बहुत बढ़ाइ कै, करचौ बड़ौ उमराव ॥७५२॥

दच्छिनमैं दीवान जू, घरहौ दौलत खांन।
सीवारी सब दल मले, अपनै ही भुज पांन ॥७५३॥
बीदावत चोरी करै, बरज्यौ मानत नांहि।
दौलतखां दल कर चढ्यौ, रोस धरचो मन मांहि ॥७५४॥
बीदावत लरि नां सके, भाजे बदन दुराइ।
गांव फूंक बहुरे मियां, जैत नीसांन बजाइ ॥७५५॥
पाटौधैं जु रसूलपुर, कूरम बसत अपार।
मग मारत चोरी करत, दरगह भई पुकार ॥७५६॥
कह्यौ महोबत खांनसूं, तब असैं पतिसाहि।
कूरम धूर मिलाइ है, असौ कोऊ आहि ॥७५७॥
कह्यो महोबत खांन तब, असों दौलत खांन।
सुनत छत्रपति मया करि, टेरे लिख फुरमांन ॥७५८॥
मिले जाइ अजमेरमें, दूलह दौलत खांन।
जहांगीर बहु प्यार करि, दीनौं आदुर मांन ॥७५९॥
पातसाह असे कह्यौ, सूजावत है चोर।
छीन लई है सगर पें, पटी आपनै जोर ॥७६०॥
पटी लेहु जागीरमें, उनको देहु निकार।
जो तुम तें यों होत नां, उतर देहु बिचार ॥७६१॥
दौलतखां तसलीम करि, असैं कियौ बिचार।
लरहिं तौ काटौं सीस उन, ना तर देऊं निकार ॥७६२॥
दयो तुरी सरपाव तब, जहांगीर परबीन।
जुगल पटी दीवांनकै, मनसबमैं लिख दीन ॥७६३॥
बिदा होइ पतिसाहतें, आये दौलत खांन।
अपनी रज भुज बल मंगन, गनत न काहू आंन ॥७६४॥
कछवाहनिसौं यों कह्यौ, दौलतखां चहुवांन।
पटी हमारी छाड़ि कै, जाहू कहूं तुम आंन ॥७६५॥

लरिबेकौ सांमौ करहु, जो तुम छाडि न जात ।
द्वै बातिनमें सोच कै, करि निबरौ इक बात ॥७६६॥
कछवाहनि तब यों कह्यौ, ग्रैसौ कौन मुछार ।
जो इन पटिइन मांहि तैं, हमकौ दैत निकार ॥७६७॥
राइसिंघ रानौ सगर, सके न हमकौ काढ़ ।
छाड़ि दई जागीर ही, तुम नहीं उनतै बाढ़ ॥७६८॥
खुसरों बीतरबीत खां, ग्रौर ग्रंबिया सेख ।
साधि हमैं नांही सके, तुम भूले का देख ॥७६९॥
दौलतखां ये बात सुनि, दल करि चढ़यौ रिसाइ ।
भाजि गये कूरम सकल, सके नांहि ठहराइ ॥७७०॥
दुंदभ सुनि कूरम गये, ग्राप आपकौ नासि ।
गऊंवनमैं मानौ परी, पंचाननकी बास ॥७७१॥
माधो नरहर कुटंब लै, भाजे ज्यों म्रिगडार ।
नाहरखां ग्रैसैं गयो, जैसैं जात सियार ॥७७२॥
गोकल गिरधरकै नंदन, कीनौं ग्राइ जुहार ।
दौलतखां की दिष्ट को, द्रुबनं न सके संहार ॥७७३॥
पटिइनमैं ते कोप करि, काढ़यो नरहर दास ।
कुटंब सहित तब जाइकैं, कीयो लुहारू बास ॥७७४॥
भादौंवासीमें रह्यौ, माधौ करि मनुहार ।
निस बासुर चोरी करै, सगरै हुई पुकार ॥७७५॥
दौलतखा चहुवांन तब, मानस दयो पठाइ ।
भादौंवासी छाड़ि दै, कै हौं मारो ग्राइ ॥७७६॥
तब माधोने यों कह्यौ, हौं मारयौ नां जात ।
पातसाहकौ नां बदौं, नांहि सुनी तुम बात ॥७७७॥
दौलतखां यह बात सुनि, साजे कटक अपार ।
तबल निसांन बजाइकै, चढ़यौ न लाई बार ॥७७८॥

आगै माधौ दल कीयो, लै सेखावत सर्व ।
अनगंन कटक निहार कै, बहुत बढ़यौ मन गर्व ॥७७६॥
दौलतखां चहुवांन जब, नेरैं लाग्यो आइ ।
तब माधो लर नां सक्यौ, डरकैं गयौ पराइ ॥७८०॥
बित बसई सब तजि गयो, जब दल पहुंचे आइ ।
लूटी नांहि दयाल ह्वै, दी चहुवांन पठाइ ॥७८१॥
जुद्ध करै ताकौ हनै, दूलहु दौलतखांन ।
भाजेकौं मारे नहीं, यहै बांनि चहुवांन ॥७८२॥
नरहर पाई अलिफखां, दीनी आप दिलेस ।
तबहिं चढ़यौ दल साजि कै, दौलतखांनु नरेस ॥७८३॥
नरहर नाहर दल सजे, लरि नां सके निदांन ।
नाहरखांकौं दी सुता, गहे चरन चहुवांन ॥७८४॥
अलिफ खांन दीवांनकी, बहुत बढ़ी परतीति ।
दयो उदैपुर बारुवो, पातसाह करि पीति ॥७८५॥
गिरधर अलखांसु लिख्यो, उनको दखल न देह ।
जो वै आवै लरनकौं, तौ सनमुख ह्वै लेह ॥७८६॥
दौलतखां अैसे लिख्यौ, अलखां जाहि पराइ ।
आपुनते निकसै नहीं, तौ हौं काढ़ौं आइ ॥७८७॥
अलखां तब अैसें लिख्यौ, मेरे पाइ पतार ।
अैसौ जोधा कौन है, सकै जु मोहि निकार ॥७८८॥
दौलतखां यहु बात सुनि, कर दल चढ़यौ रिसाइ ।
सनमुख ह्वै नाहिंन सक्यौ, अलखां गयो पराइ ॥७८९॥
अलखां भाजत फिरत है, बचन गये सब भूल ।
पवन लगे ज्यों जांन कहि, उड़त अर्कको तूल ॥७९०॥
रहि न सक्यौ खीरोरमें, दुर्‌यौ खोह में जाइ ।
दौलतखां दुंदभ बजत, बरे उदैपर आइ ॥७९१॥

परी खंडेलै खल भली, रैवासैमें रोर।
दौलत खां चहुवांन की, हाक धाक सब ठौर ॥७९२॥

तीजी बार मेवातकी फौजदारी पाई

॥ दोहा ॥ दछिनतें दीवांन जू, टेर लये पतिसाहु।
कह्यौ अबहि मेवातकू, बहुरौ साधन जाहु ॥७९३॥
फौजदार मेवात के, तीजे भये दीवांन।
भले पजाये भोमिया, संग हौ दौलतखांन ॥७९४॥
बाकी खेरी चोरटी, अति गाढ़ा मैवास।
तिनकौ दौलतखांननै, करचौ कौपकै नास ॥७९५॥
लरे बहुत ही भोमिया, मरे होइ घन घाइ।
बंध कर आनी तिन सुता, डारे धूर मिलाइ ॥७९६॥
फिर पठये दीवांन जू, दच्छिन कौ छत्रपत्ति।
दछिन दछिना मांगि है, भये हीन बल अत्ति ॥७९७॥

कांगरैकों बिदा कीने

॥ दोहा ॥ सार पर्‍यौ जब कांगरै, फिर टेरे दीवांन।
राजा बिक्रमजीतकै, संग दये दै मांन ॥७९८॥
सूरज मल हौ नूरपुर, आये दल पतिसाह।
अनी जोरि ताकी बनी, बनी न मनकी चाह ॥७९९॥
सूरजमल लरि नां सक्यौ, भाजि बचायौ प्रांन।
आइ बिराजे नूरपुर, राजा पुनि दीवांन ॥८००॥
सूरज मल दल साहकें, घरतें दयौ भजाइ।
खोद मुवौ बिल चौखरां, लीनौं नाग छिड़ाइ ॥८०१॥

॥ सवैया ॥

भाजि गयौ तजि मंदिर कौ गिरकंदर अंदर आपु दुरायौ।
छाड़ि कै बाग बगीचा बनै बहु थोहरकै बिरवै मनु लायौ ॥

सूरजमल फिरै बनमें मनकौ बिधु ठांव कै ठांव पुरायो ।
खोद मुवौ बिल चोखर ज्यौं छत्रपत्ति भवंगम कोप छिड़ायो ।।८०२।।

अनगंन दल आयो साहि जहांगीर जू के
बाटे हू न आवै गढ़ कांगुरै के कांगुरे ।
डर भयो घर घर थर हरो गिरवर
भाजि न सकै पहारी कीने भव पांगुरे ।
चंबे कीनं छूटै वोट ढाहे वैसे कोट कोट
उडि हैं तू नाल चोट पावहि न गांगुरे ।
कहै कबि जांन सुनि सूरजमल अजांन
बेग आइ पाइ गह दांन जिय मांगुरे ।।८०३।।

॥ दोहा ॥ सूरजमलकौं खेद कैं, बहुरै दल पतिसाहि ।
जीति फिरे जीतन चले, नगर कोटकी चाहि ।।८०४।।
अलिफखांन दीवांनकूं, दयो नूरपुर थांन ।
सूरजमल कौ बहुत डर, रहि न सकै को आंन ।।८०५।।
नगर कोट राजा गयो, सूरजमल सुनि बात ।
आयो दल बल साजि कैं, पै कछु बनी न घात ।।८०६।।
साहसीक मल अलिफखां, जाके निहचल पाइ ।
लरि न सक्यौ दीवांनसू, सूरज सनमुख आइ ।।८०७।।
सूरज नांव कहाइ है, उलटौ सबै सुभाइ ।
छप्यौ रहत है द्योंसकूं, निसकौं निकसत आइ ।।८०८।।
जाइ कांगरै बिक्रमां, करी अरिनसौं बात ।
करि आयो भुस लीपनो, नांही बनी कछु घात ।।८०९।।
आइ नूरपुर बिक्रमां, यहै कह्यौ दीवांन ।
काहलूर ऊपर चढ़ौ, हौं रहिहौं इह थांन ।।८१०।।
उततें चढ़े दीवांन जू, जस नीसांन बजाइ ।
तबहिं तुंड करि ग्वारियर, डेरे दीनै आइ ।।८११।।

बात सुनी कहलूरिये, आवतु है दीवांन।
आइ मिल्यौ दै पेसकस, दमका गज केकान ॥८१२॥
पठय दयो कहलूरिया, राजा ढिगु दीवांन।
देख बिकरमांजीत तब, लाग्यो करन बखांन ॥८१३॥
जहांगीर मानी नहीं, बिक्रम करी जु बात।
यहै लिख्यो तुम कांगुरो, लीजहु जिह तिह घात ॥८१४॥
नगरकोट घेरौ पर्‌यो, बहुरि लगे दल साहि।
टूट्यौ गढ़ छत्रपत्तिकै, पूजी मनकी चाहि ॥८१५॥
राजा बिक्रमजीतनैं, हेंदू तुरक बुलाइ।
सगरै दलसौं जांन कहि, बात कही समझाइ ॥८१६॥
कर आयो है कांगरौ, राखहु करि कै गाढ़।
जोया गढ़ ऊपर चढ़ै, बढ़ै मान ह्वै बाढ़ ॥८१७॥
तब हिंदुवन मिलि यों कह्यौ, बिदाम कैकौं देहु।
कै तुम गढ़ में रहनकौं, नांव न हमसौं लेहु ॥८१८॥
राजा बिक्रमजीतनै, तक्यो वीर दीवांन।
हौं रहिहौं कै तुम रहौ, रहि न सकत को आंन ॥८१९॥
डिष्ट करी करतार पर, रहे उतहिं दीवांन।
पातसाह हरखे सुनत, बढ़्यो मन सब मांन ॥८२०॥
छत्रपतिकै चित्तमै भई, गढ़ देखन की चाहि।
हित सौं आये कांगरै, जहांगीर पतिसाहि ॥८२१॥
जहांगीर दीवांनकौं, पठयो यहै लिखाइ।
तुम जिनसौं है आइही, हम देखैंगे आइ ॥८२२॥
पातसाह गढ़ पर चढ़े, लगे पाइ दीवांन।
दिलीपतिनै दिल सहित, दीनौ आदुर मांन ॥८२३॥
नौछावर पतिसाह पर, कीनी बहुत दीवांन।
जहांगीर अति प्यार कर, दीनौं गज केकांन ॥८२४॥

पातसाह उतते उतरि, चले वीर कसमीर।
अलिफखांन राखें उतहि, साहस सत्त सधीर ॥८२५॥
सोर भये फिर ठटामैं, तब टेर्‌यो दीवांन।
उतहिं पठायो छत्रपति, दै बहु आदुर मांन ॥८२६॥
ठटा जाइ साध्यो भलैं, अलिफखांन दीवान।
हरख वंत सुन कै भयो, जहांगीर सुलतांन ॥८२७॥
सोर पर्‌यो फिर कांगरै, सुन्यो दिली सुलतांन।
तब दल बल बहु संग दै, पठयो सादक खांन ॥८२८॥
भये पहारी येक सब, भले लगाये हाथ।
आगै पांव न धर सकै, सादक खांकौ साथ ॥८२९॥
बात सुनत पतसाहनै, पठय दयो फुरमांन।
तबहि ठटातैं कांगरै, फिर आये दीवांन ॥८३०॥
आये जबहि दीवांन जू, कंपे हार पहार।
मिलके सकल पहारिये, आये करन जुहार ॥८३१॥
सादिक खां देखत रह्यौ, आवत ही दीवांन।
मिले पहारी आइ कैं, धन रजवट चहुवांन ॥८३२॥
काबिलके भुमिया फिरे, परी बहुत ही रौर।
तब आपुन पतिसाह चलि, आये हैं लाहौर ॥८३३॥
टेर लये हैं अलिफखां, काबिल पठवन काज।
चक्रवती चहुवांन तब, आयो दल बल साज ॥८३४॥
लक्खी जंगलकी तबहि, आई बहुत पुकार।
भटी ढुढ़ी डोगर बटू, कीनौं मुलक उजार ॥८३५॥
बादसाह सोचत यहै, को पठऊं उह ठौर।
लक्खी जंगलके भोमिया, गहि आनैं लाहौर ॥८३६॥
आसिफखां तब यों कह्यौ, अैसो और न कोइ।
अलिफखांन चहुवांनतैं, यहु मुहिम सर होइ ॥८३७॥
बिदा कीये तब अलिफखां, दे घोरा सरपाव।
चाहुवांन दल साजकै, चले जैतकै चाव ॥८३८॥

लखी जंगलकौ बिदा भयो

अलिफखानुं चहुवांन जब, उतरे आइ कसूर।
डरत भाजि पतिसाह पै, गयो भटी मनसूर ॥८३६॥
गढ़ी तकी अरि वरनकी, चढ़ि आये दीवांन।
वैहूं आगै तें लरे, भली पर्‌यौ घमसांन ॥८४०॥
करवर बर अरवर हनै, कटे तीन सै मुंड।
कोऊ निकसन नां लह्यो, बंध परि अरि झुंड ॥८४१॥
अरवर छार मिलाइ कै, डोगर तके दीवांन।
आप आपकौं भजि गये, आवत सुनि चहुवांन ॥८४२॥
उतते फिर ताके बटू, सके सहारि न हाक।
ऐसौ कौन जु सहि सकै, अलिफ खांनकी धाक ॥८४३॥
उततें चढ़ि दीवांन जू, खाई डेरौ कीन।
आइ मिले भुमिया सकल, होइ दीन आधीन ॥८४४॥
फिर चिहुंनी देपालपुर, आये हैं दीवांन।
पाक पटंन ज्यारत करी, पूजी इछया प्रांन ॥८४५॥
आइ मिल्यौ आधीन ह्वै, टुढ़ी बहादर खांन।
भेट दई दीवांनकौं, पायो आदुर मांन ॥८४६॥
जंगल साध्यो अलफखां, मिलै भोमिया आंन।
लाग्यौ करन बखांन सुनि, जहांगीर सुलतांन ॥८४७॥
मिले भोमियां भेट दै, सोलै कै दीवांन।
पठय दई पतिसाहकौं, सुजस भयो चहुवांन ॥८४८॥
चिहुंनी अरु देपालपुर, महमदोट सु नांम।
और तिहारौ बिठंडौ, पट्टन भरिहैं दांम ॥८४९॥
आलमपुर पेरोजपुर, भेट दई भटनेर।
मिले जलालाबादके, दल दीवांनके हेर ॥८५०॥
धिग कबूला रहमता, बाद रहीमांबाद।
लक्खी जंगल दल मल्यो, मिले छाड कैं बाद ॥८५१॥

भटी समेजे जाइये, टुढी बटू नैपाल।
बैरियाह डोगर खरल, अरवर सब बेहाल ॥८५२॥
धोला खेरा भेजि दल, मारि मिलाये धूरि।
डारी भलै उखारि कै, सब दुर्जनकी मूरि ॥८५३॥
हौ पहार सरदार खां, जबहि भयो बस काल।
तबहि पहारी फिर गये, उपज्यो बहुरि जंजार ॥८५४॥

श्री दीवांनजी कांगरे आये चौथी बार

॥ दोहा ॥ जहांगीर पतिसाहनै, लये अलफखां टेर।
हुकम कर्यौ तुम जाइ कै, करहु पहारहिं जेर ॥८५५॥
अलफखांन तसलीम करि, चल्यौ राइ जूझार।
गहर न लाई पंथमैं, पैठ्यौ आइ पहार ॥८५६॥
भाजे फिरैं पहारीये, सनमुख आवत नांहि।
छपते डोलहिं वोट लै, ज्यों सूरज तें छाहि ॥८५७॥
काहलूर लै कै लये, मंडई और सुखेत।
लीनौ बहुरि सिकंदरौ, अलफखान जस हेत ॥८५८॥
उतहि तुरक को नां गयो, बिना सिकंदर साह।
कै उत पहुंचे अलफखां, साहस सत्त अगाह ॥८५९॥
भाजे फिरहिं पहारिये, छुटि गये घर बार।
सार धार नां सहि सकै, डोलै धार पहार ॥८६०॥
तबहि पहारी येक ह्वै, कीनौं यहै विचार।
लरहिं जाइ दीवानसौं, सब मिल एकै बार ॥८६१॥
जगत सिंघ पैठांनिया, अरु विसंभर चंब्याल।
चंद्रभान गढ़ भौनकौ, पुनि फतू जसवाल ॥८६२॥
भोपत और अमूल पुनि, बूला सूरजचंद।
ठकर कल्यानां स्यामचंद, सबै जुद्ध केकंद ॥८६३॥
जगतमाल अलिया चढ़े, आयो राइ कपूर।
कौन कौन कौ नांव ल्यौं, सब ही भये हजूर ॥८६४॥

नगरोटै डेरे कीये, जगतै दल बल साज ।
तलवारै कै गोरवै, है चहुवांन सकाज ।।८६५।।

पहली लराई

।। दोहा ।। अलिफ खांन इतते चढ़े, उतते कटक पहार ।
लूमि झूमि आई मनौं, भादौं घटा अपार ।।८६६।।

भुजंगी छंद

इतही क्यामखांनी, उतही सब पहारी ।
बनी सैन गज की, घटा मेहकारी ।
परै बूंद गोली, भयौ जुद्ध भारी ।
मनौं कौंध कौंधा, बरच्छी दुधारी ।।८६७।।
लरै जोध जोधा, भई मार मारं ।
लगै बान बानं, बजै सार सारं ।
थकै नांहि मारत, हनै बार बारं ।
मिटे तब पहारी, भजे हार हारं ।।८६८।।
परे टूक टूकं, मरे सूर बीरं ।
गज ह्वै किरच्चे, बिरचे सधीरं ।
पहारी सुभट नां, भजे ह्वै अधीरं ।
सु तौ रंच रंचक, करे चीर चीरं ।।८६९।।

।। सवईया ।।

सतके रजके गज सैन बदै न झुकै न रुके रहै आंडनके ।
खां अलिफ बिरचि किरची कीये पै पहारी नहीं पग छांडनके ।
भये रंचक टूट गये उडि पौन रहे नजरावंन गांडनके ।
लह्यो ईसं न सीस न मांस सियारहु ये न हडाहल हांडनके ।।८७०।

।। दोहा ।। जगतसिघ सब संग सौं, भाजि गयो तजि लाज ।
जैत भई दीवांनकी, पूजे मनसा काज ।।८७१।।
दूजै दिन दल साजि कै, लगे पहारी आइ ।
जबहिं पर्‌यो घमसांन घन, बहुरौ गयो पराइ ।।८७२।।

तीजै दिन आये बहुरि, दल बल साज अपार ।
जैत भई दीवांनकी, गये पहारी हार ॥८७३॥
बहुरौं आये भोमियां, चौथे दिन दल साज ।
मार परी तब मरि परे, उबरे गये जु भाजि ॥८७४॥
फिर आये दिन पाचवें, जूझ करनकै चाइ ।
मिटे पहारी खेत तें, अंत होइ घन घाइ ॥८७५॥
बहुर छठै दिन आइ कै, नीकी बाही रार ।
हाथ लगाये अलफ खां, अंत चले वै हार ॥८७६॥
सादक खां पैठांन हौ, चीठी दई पठाइ ।
कै दल मोपै पठइयो, कै तुम मिलियो आइ ॥८७७॥
रोस होइ दीवांननै, तब दल दयो पठाइ ।
दुर्जन उतर्‌यो सांम है, हौं क्यौं छांडौ पाइ ॥८७८॥
चित नहीं रंन मरन की, सुजस रहै संसार ।
जो जिय गयौ तौ जान दे, रज राखे करतार ॥८७९॥
सुनी बात यहु जगतसिंघ, दल थोरे दीवांन ।
ठटु कटकनिके साजकैं, चढ्यौ देत नीसांन ॥८८०॥
खरे भये दीवांन चढ़ि, तलवारैके खेत ।
संपूरन रज लाज के, साहस सत्त समेत ॥८८१॥
अनी तीन कीनी तबहि, अलिफखांन भोपाल ।
येक वोरकौ रूपचंद, इक बासो डढ़वाल ॥८८२॥
बीच भये दीवांन जू, चित लरिबेको चाइ ।
रज अपनी नां जान दे, जौ जिय जाइत जाइ ॥८८३॥
घेरो कर्‌यौ पहारीयों, कटत अपार अनंत ।
आडौ आये घूमते, मद बहते मैंमंत ॥८८४॥
जुध भयो अतिहि प्रबल, पर्‌यो महा घमसांन ।
कौरौ पांडौसे लरे, कै कीचककौ घांन ॥८८५॥

रूपचंद बासो भगे, जबहिं परचो बहु भार ।
सत साहससौं अलिफखां, खरे रहे जूझार ॥८८६॥
जुद्ध सरकी धार पर, दई लिखे द्वै आँक ।
जो जूझै तिहिं सिर कटै, जो भाजै तिहि नांक ॥८८७॥
अंक बि दीसे जुद्ध समै, जानहु सेवक स्वांम ।
जे आगे ते दस गुने, पाछे के नहिं कांम ॥८८८॥
पांनिपु अपनी राखि है, सूरा यहै सुभाइ ।
जिय तन हान न गनत है, जो रज नांहीं जाइ ॥८८९॥
सूरबीर अरु मीन जल, इनको येक सुभाइ ।
तरफि तरफि दोऊ मरै, जौ पानी घटि जाइ ॥८९०॥
रहै न केहूं हीन जल, सहे न दोऊ गार ।
सूरबीर पुनि मीनकौ, पानी ही सौं प्यार ॥८९१॥
येक बात कवि जांन कहि, बढ्यौ मीन तें सूर ।
मीन मरै पानी घटे, सूर मरै जल पूर ॥८९२॥
रूप रूपचंदको गयौ, भाज्यो ह्वै बेहाल ।
सत नास्यो बासो नस्यो, डाढ़ी बिन डढ़वाल ॥८९३॥
भार परचो दीवांन पर, जूझत अचल जूझार ।
येक वोर चहुवांन है, इक दिस सकल पहार ॥८९४॥

॥ सवईया ॥

उतहिं पहारी इत संभरी नरेस धायौ
उधम मचायौ जुध सुमिर इलाह जू ।
परी बहु मार करवार भई आर
रतनारे रतनारे चले गहर अथाह जू ।
बाल तरु नाई ब्रिध तीनों पनपाइ सिध
आद अंत नीकौ करचौ करता निबाह जू ॥
कहा चली ढाढी भाट चारन कलावत की
सांहस अलिफखां सराह्यो पतिसाह जू ॥८९५॥

॥ दोहा ॥ हय गय नर कटि कटि परें, टूटत हैं हथियार।
फिर फूटै गुरजें लगें, छूटत है रतिधार ॥८६६॥

॥ सवईया ॥

लरत अलिफखांनु परत है घमसांन
दे दै बहु दांन सिव कीनौ है निहाल जू।
भसम हसम धूरि रत सत सिध मूरि
आवधि त्रिसूल लहे खपर हैं ढाल जू॥
बोलत है घाव सू सुभाव डमरू कौ अैन
पायो सरभाव भयौ चाव गज खाल जू।
निरत करत हरखत हर हेर हार
सुंडनके व्याल और मुंडनिकी माल ज्यूं ॥८६७॥

साहू जू के काज कुल लाजकौं अलिफखांन
गाढ़े पाइ कीने है पहारसे पहारमैं।
बाने बहु बाने लगे सूरिवां सुहाने अैसै
जैसै फुलवारी फूल रही है बहारमें।
कीचकको घांन घमसान परचौ दहूं वोर
घाइल धुकत मतवारेसे अहारमें।
धाई गज सैन आई अैंन ही नबाब पर
मार बिचराई भाजो सिंधकी दहार में ॥८६८॥

मांतौ गजराज आयो कितौं परबत धायौ
झरना बहायौ मद सैन घहरानी है।
रूंख ज्यौं उखारत तुणं नर डारत
निहार रूपचंद बासो भाजबेकी ठानी है॥
भये सनमुख आनि नबाब अलिफखांन
कुंजर भजानो माथै बरछी लगानी है।
गैवर घटा सो बग पंत सो लगत दंत
तामैं सार धार मानौ बीज चमकानी है ॥८६६॥

॥ पैडी ॥ आवै हाथी घूमते, घूमै मतवारे ।
जैसी सावनकी घटा, वै तैसें कारे ।
कै परबतसे देखिये, वै भारे भारे ।
ज्यों घन गरजै भादुवै, त्यों गरज चिंघारै ॥६००॥
हाथी ठाड़े ही रहे, वे थर थर करि हैं ।
जैते पाव उचाइ है, आगै ना परि हैं ।
घाव लगे बहु अंगमें, तिनतें रत ढरि हैं ।
गिरवर तें कवि जांन कहि, झरनासे झरि हैं ॥६०१॥

॥ दोहा ॥ करी कहा पशु बापुरे, सहैं जु डिष्ट करूर ।
सूर देखि गज यों चले, ज्यों निस देखे सूर ॥६०२॥

॥ सवइया ॥ जुध मच्यौ विरच्यौ चहुवांन
संजोव गयौ उड़ि सांगनि लागै ।
राते भये रत सौं सत सौं असौ
कौन लर्‌यौ है कसूंभल बागै ।
खां महमदकौ नंद अलिफखां
मेर करे पग केहूं न भागै ।
जोधा भये हैं जितने बसुधा पर
कांन गह्यौ है दीवांनके आगै ॥६०३॥
सेन अनंत झुकंत पहारी लरंत कहंत न असो बियौ है ।
मारत डारत पारथ जों अलिफखां को धन हाथ हियौ है ।
स्रोनि समुद्र न घुंटनि टुटत जुगिन जुथ अघाइ पियौ है ।
मुंडनि भार गई झुकि नार मनोहर हार जुहार कियो है ॥६०४॥

॥ दोहा ॥ मुंड माल हर पहरि हैं, जानत कौंन सुभाइ ।
सुभटनिके सिर देखि कैं, गरै लेत है लाइ ॥६०५॥
मुंड बिना तन धर परे, तरफत है इहं भाइ ।
मानों पगिया गिर गई, करिहै सैख समाइ ॥६०६॥

खुले देख द्रिग सुभटके, डरपैं गिर्भ सियार।
बिकट लगै ह्वैबे निकट, जौ मरि गये मुछार ॥६०७॥
रुहिर जुगिनी भछि गई, स्यार मांस अरु चांम।
हाड न कोऊ लेत है, असत कहावत नाम ॥६०८॥
घाव जु बोले सुभटके, कहत मार ही मार।
जीभ थकी तब अंगही, लाग्यौ करन पुकार ॥६०६॥
साहिमखानी को लरयौ, अलिफखांनकै संग।
धार मुरी हथियारकी, पै नहिं मोरयौ अंग ॥६१०॥

॥ सवईया ॥

हैदल गैदल पैदल जोर के,आये अनंत अपार पहारी।
नाचत है हरखे हरि जुगिन छूटत नाल बंदूक सुतारी।
भीरपरी बिचले तब भीरक सांहिमखां समसेर संभारी।
काहू को मुड कटी कटि काहू की ही
मिसरी पै लगी आईखारी ॥६११॥

॥ दोहा ॥ सूरं सुभट दीवांनके, बहुते आये कांम।
केते येक गनाइ हैं, लै लै उनको नांम ॥६१२॥
येदल अरिके दल हनत, पुनि भाईया कमाल।
द्वै काइम नीके लरे, नाथा और जंमाल॥६१३॥
करे मुजाहद मेर पग, भीखन पुन बहलोल।
लाडू अरु पेरोज खां, राख्यौ अपनौ तोल ॥६१४॥
द्वै खानू दौला अबू, इसकंदर रज रास।
अरु मारू उसरीफ पुनि, कीनौ नांव प्रगास ॥६१५॥
ऊदा परता चतुरभुज, जगा मनोहरदास।
पुनि कौ जू हरदास ये, परे येक ही पास ॥६१६॥
ओंद राज मोहन जुगल, मुये येक ही ठौर।
कौन २ को नांव ल्यौं, कटे बहुत ही और ॥६१७॥

जे जूझे दीवांन संग, अमर भये सैंसार।
जों जिहाजमैं पैठ कै, सागर कीजत पार ॥६१८॥
मार मार ही उचरै, अलिफखांन चहुवांन।
जोर पर्‌यो करवार कर, अरि मारे दीवांन ॥६१६॥
हाथी येक दीवांनकौ, नांव चतुर गज ताहि।
खलनि उखारत ब्रिच्छ ज्यों, ऐरापति सम आहि ॥६२०॥
कछु हाथी हाथी हने, कछू हने दीवांन।
जोधा पाइन तर मथे, भलौ भयौ घमसांन ॥६२१॥

॥ सवईया ॥

धायौ है मातो गयंद अधीर ह्वै काहू नहीं तब धीर धरी है।
खानु अलिफ खरे इतही गज आइ दबाये नहिं ढील करी है।
बाही भलैं करवार चरन कौं सावन तावर की ज्यों निकरी है।
टूटके पांव करी यों गिर्‌यो मनौं फूटिके खंभ चौखंडी परी है ॥६२२॥

॥ दोहा ॥ जबहि जुद्ध भारी भय, बिरचे कटक पहार।
तब दिवांन पाछैं परे, बहुत गिराये मार ॥६२३॥
तेरहसै मानस हनें, पर्‌यो बहुत घमसांन।
इनहूंके बहुतै मरे, गनत न आवै ग्यांन ॥६२४॥
देख्यो जबही पहारी यों, भाजे छाडत नांहि।
येक मतौ करिकै फिरे, आइ मिले तब मांहि ॥६२५॥
बहुर लड़ाइ फिर परी, जूझे जोध अपार।
भये सही दीवांन जू, सुजस रह्यो सैंसार ॥६२६॥
खेत मांहि जो मरि पड़े, है ताहीको खेत।
जाके पाइ न छूटि हैं, जैत दई तिहं देत ॥६२७॥
जिय जान्यो जान्यो मरन, अलिफखांन चहुवांन।
ऐसी विध ना मर सकै, कोऊ राजा रांन ॥६२८॥

॥ सवईया ॥

प्रबल सबल सत लाज सौं अलिफखां
जूझत झुकंत अकुलात नहीं दलतैं।

जुद्ध कौ समुद्र है सहादत कै नग भर्यौ
बूडकलै पावे जो न डरै काल जलतें।
महमद खांन अंग जीते नित जोरि जंग
आरन अभंग बडौ साकौ कीयो चलतें।
बड़े बड़े राजा राव रानां उमराव भूप
ऐसी भांति मरिबेको मुये हाथ मलतें ॥९२९॥

बासोहद कीनी बस चंबे दीनी पेसकस
जस भयो जीत्यौ है नगरकोट भौनकों।
काहलूर जैतवा मंडई सुखेत मां
बिकट पहार पैठे मारग न पौंनकौ।
भाजे भाजे फिरत पहारी हार येक भये
कोरनिसौं लरै ऐसौ साहस है कौनकौ।
गए अमरापुर अलिफखां अमर भये
संभरी नरेशने चढायो लौंन लौंनकौ ॥९३०॥

॥ **दोहा** ॥ जो लौं जीये जगत में, अलिफ खांन सिरमौर।
गढ़ मनसब लेते रहे, आज और कल और ॥९३१॥

॥ **सवईया** ॥

दोइ बार दछिन में वाती तीन बार मली
कछवाहै तीन बार खेत तें खिसाये हैं।
साधी है मेवार दोइ बार औ ठटा हूं साध्यो
मार २ कै भिवानी भोम भोमिया मिलाये हैं।
चार बार कांगरौ पजायो करवर बर
जंगल लखी के मारि डंड भखाये हैं।
खरे ईसरस भये सरसै . अलिफखांन
गंजे उमराव दलपति हूं भजाये हैं ॥९३२॥

॥ **दोहा** ॥ सोरहसै जु तियासिया, सन सहस पैंतीस।
अलिफ खानु बैकुंठ गये, रोजै अठ्ठाईस ॥९३३॥

करामात परगट भई, ज्यारत करत जहांन ।
देखत ही दरगाहकौ, पूजत इछ्या प्रांन ॥६३४॥
करामात दीवांनकी, है हाजिरा हजूर ।
गिरवर पर बादुर रहै, ज्यौं रोजै पर नूर ॥६३५॥

॥ सवईया ॥

होत दुख दूर देखें नूर दरगाहकौ
निरधन पावै बितु निरसुत पावै सुत
अैसी अद्‌भुत बात करम इलाहकौ।
निरबुधि पावै बुधि बेसुधको होत सुधि
मारग लहत जु भुलानौ आवै राहकौ।
अलिफखां चहुवांन लोभ नहीं कीनौ प्रांन
पायो फल राख्यौ स्वांमधर्म पतिसाहकौ।
न्यामत संपूर है जहूर हाजिरा हजूर
होत दुख दूर देखें नूर दरगाहकौ ॥६३६॥

ह्वै सुख लीजिये नाम सकारे ।
व्याध असाध ते होत समाध
मिटै अपराध अगाध जे न्यारे ।
चिंत कछू चितमैं न रहै
उमहैं कलप ब्रिछ की डारैं ।
खांन अलिफ करामात पूरन
चूरन है है सब रोस विकारैं ।
देखिये ना चुखहूं दुख को मुख
ह्वै सुख लीजिये नाम सकारे ॥६३७॥

प्रांनकी इंछ दीवांन पुजांवै ।
न्यामत और करामत पूरन
होहिं सुखी जे दुखी तकि आवैं ।
पीर महा परगट्यौ पुहमी ।

परपीर पिराये की पीर पिरावें ।
खान अलिफ समुद्र अथाह है
जो मनसा सोई धावत पावें ।
कान गहें तेई मान लहें जगु
प्रान की इच्छा दिवान पुजावें ॥६३८॥

॥ दोहा ॥ सोरह सै इक्यानुवै, ग्रन्थ कर्‌यौ इहु जांन ।
कवित पुरातन में सुन्यौ, तिह बिध कर्‌यौ बखांन ॥६३६॥
दौलतखां दीवांनकौ, अब हौं करौं बखांन ।
तेग त्याग निकलंक है, जानत सकल जहांन ॥६४०॥

श्री दीवांन दौलतखांके पुत्र

१ ताहरखां, २ मीरखां, ३ आसफखां ।
ताहरखां कुल को तिलक, रचि कीनौं करतार ।
मीर खांन पुनि असद खांन, भइया ताहि विचार ॥६४१॥

दौलतखांकौ बखांन

॥ दोहा ॥ जबहिं भये बस काल के, अलिफखांन दीवांन ।
बैठे उनकी ठौर तब, दूलह दौलत खांन ॥६४२॥
जहांगीर पतिसाह जू, दे कै मनसब मान ।
सौंप्यौ है गढ़ कांगरौ, दौलत खां चहुवांन ॥६४३॥
पातसाह असौ कह्यौ, तुम बिन असौ कौन ।
जाते निहचल रहत है, नगर कोट अरु भौन ॥६४४॥
आइ बिराजे कांगरै, दौलतखां चहुवान ।
भुमियनको भै उपज्यो, संके राजा रान ॥६४५॥
बासी सकल पहारके, जेर करे चहुवांन ।
डंड भरै सेवा करै, थहरै ज्यौं तर पांन ॥६४६॥
जहांगीर कीनौं गवन, तब उपजी जग रौर ।
सब थाने उठि उठि गये, रह्यौ न कोऊ ठौर ॥६४७॥

दौलतखां दीवांन तब, कीने गाढे घाइ।
दुर्जन दलतें ना डुरे, रहे अचल ठहराइ ॥६४८॥
सबै पहारी येक ह्वै, घेरो कीनौ आइ।
मेद चरन दीवांनके, डुरहि न लागें बाइ ॥६४९॥
अपनै दलसौं यों कह्यौ, दौलतखां दीवांन।
निकसि लरहु मारहु मरहु, करहु महा घमसांन ॥६५०॥
तब दल सबल दीवांनके, निकसे लरन रिसाइ।
नीकौ जुध मचाइ कैं, घेरौ दयौ छिड़ाइ ॥६५१॥
मरे पहारी जे लरे, उबरि गये जो भाजि।
बहुरे दल दीवांनके, लै उनकी रज लाज ॥६५२॥
साहिजहां बैठे तबहि, तखत दिलीके आइ।
बात सुनी दीवांनकी, भले रह्यो ठहराइ ॥६५३॥
और न कोऊ ठाहर्‌यो, तजि तजि आये थांन।
नगर कोट राख्यो भलैं, दौलतखां चहुवांन ॥६५४॥
मनसब बढ़यो छत्रपति, दै के आदुर मांन।
जग सगरे नामी भये, दौलतखां चहुवांन ॥६५५॥
रहे चतुरदस बरस उत, साध्यो भलैं पहार।
पाछै काबलकौं चले, चाहुवांन मुछार ॥६५६॥
काबिल और पिसौरमैं, रहे भली ही भांति।
सीवाली सब मिल चले, सहि न सके मुखक्रांति ॥६५७॥
बेटा दौलत खांनकौ, ताहरखांन सपूत।
जुध खर्ग दामिन दमक, दानझरी पुरहूत ॥६५८॥
साहिजहांसौं मिलनकौं, गये अकबराबाद।
प्यार कियो मनसब दीये, अति बाढ्यो अह्लाद ॥६५९॥
अमरसिंघ गजसिंहकौ, हन्यो सलाबत खांन।
छत्रपतिकै दरबारमें, उपजि पर्‌यो घमसांन ॥६६०॥

साहिजहां फुरमान दिय, मारि लेहु राठौर।
ग्रैसी बेअदबी बहुर, ज्यों न करै को ग्रौर ॥९६१॥
तबहि गुरजबरदार सब, चहुंधा लगे ग्रपार।
गुरजनि सौं ढाह्यो बुरज, गिरत लगी बहुबार ॥९६२॥
जे सेवक ग्रमरेसके, हुते ग्रागरै मांहि।
ते सुनिकै सब लरि मुये, कोऊ भाज्यो नांहि ॥९६३॥
राव कुटंब नागोर हौ, जोधावत बहु पास।
को नां लै नागौरकौ, ग्रैसी उनकी त्रास ॥९६४॥
नटे बहुत उमराव तब, ताहरखां सिरमौर।
ग्रागै ह्वै ग्रैसें कह्यो, में पाऊं नागौर ॥९६५॥
का मजाल जोधानकी, उतहि सकै ठहराइ।
हुकम रावरौ हैं बली, पलमें देऊं उडाइ ॥९६६॥
सुनि ग्रानंद्यो छत्रपति, लिख दीनौ नागौर।
ताहरखां पतिसाहके, जियमें राखी ठौर ॥९६७॥
पातसाह फुरमान लिख, टेरै दौलत खांन।
मनसब हूं डेढ़ौ कर्‌यो, ग्रौर बढ्यो बहु मांन ॥९६८॥
काबलमें दीवांन हे, चल्यौ जात फुरमांन।
ताही मैं यौं छत्रपति, पूछे ताहर खांन ॥९६९॥
पिता तिहारौ ग्राइ है, तब जैहै नागौर।
कै तूं पहले जाइ कै, काढहिगौ राठौर ॥९७०॥
इन्हन कह्यौ फुरमांन हौं, बांधौं ग्रपने सीस।
ग्रबहि जाइ जोधानिकौं, काढ़ौं बिसवा बीस ॥९७१॥
हर्षवंत हौ छत्रपति, दयौ ग्रानि सिरपाव।
ग्रादुर दै नागौर दै, कियौ बड़ौ उमराव ॥९७२॥
इनको सुत सरदारखां, संग हुतौ दुतिरास।
मनसब दैकै छत्रपति, राख्यौ ग्रपने पास ॥९७३॥

उतते ताहरखां चले, वतन आपने आइ ।
कूच कियौ नागौरकों, अनगन कटक बनाइ ॥६७४॥
जात जात नागौरकैं, निकट लगे जब जाइ ।
जोधावत गढ़ छाड कै, निकसे तबहिं पराइ ॥६७५॥

॥ सवईया ॥

मिटे उमराव राव साहिजहां जू कै आगे
तहां लायौ बीरानं करी है बात थोरी सी ।
हाथौ दयौ पोरकै पै मायौ दै सके न जोधा
गरद दबायें भाज गये खेल होरी सी ।
चहुरंग चमू बानि नागवर लीनौ आनि
भये हैं खिसाने जे कहत बात भोरी सी ।
ताहरखां कीरति अकीरति बिपछनकी
जगमैं रहैगी गंग जमुनाकी जोरी सी ॥६७६॥
पाखर संजोव गज जूहमें धुकार धौंसा
सघन घटामें मानौ घन घहरतु है ।
प्रबल सबल दल साजि चढ़े ताहरखां
खुरनि तुखारनि सौं जगु थहरतु है ।
धूरि उडि नभ छायौ सूरज न डिठ आयौ
तिमर जनायौ अरि हीयौ हहरतु है ।
पवन धन जानि कौ डुरावत समूह सैन
सागर समांन है सु जानौं लहरतु है ॥६७७॥
मूंछनि ताव सुभावहि देत बरा बरा जानि कै प्रान डरै जू ।
जौं करवार निकार निहारत तौ द्रिगबाल सबै थहरे जू ।
होत पलांन तुरंग कुरंग ह्वै भाजै बिपछ न धीर धरै जू ।
ताहरखांकी धाक दसौं दिस सेल चढ़े जगु अै लरैं जू ॥६७८॥
हिम्मतके बर मोह्यो छत्रपति साहिजहां मुख तेरी ये बातैं ।
जोध न कोऊ बिरोध सकै तुहि जानत तूं सब जुध की घातैं ।

ताहरखां तुब तेगकी त्यागकी फैली कीरति दीपनि सातें ।
दानके बीज धरा रसना कविनीके बये जसके बिखातें ॥६७६॥
दुरजनसाल मरद मुछाल है ताहरखाँ तरवारको रावत ।
कूरम धूरमें डारे मिलाइ कै सिघ हुते तेऊ गाइ कहावत ।
बंक रह्यौ नहीं बीकनिमें अरु पाइ लगे तजि बाद बिदावत ।
दौलतखानकों नंद नरिंद, अनंद भयौ अति देसमें आवत ॥६८०॥

॥ दोहा ॥ जैगढ़में डेरौ कीयौ, अमरसिंघके धाम ।
हिमतकै बर जगतमें, कीनौ अपनौ नाम ॥६८१॥
सुखमें मास चतुर गये, आये दौलतखान ।
पूत पिता दोऊ मिले, अति सुख उपज्यो प्रांन ॥६८२॥
जुगल रहत नागौरमें, बाढ्यौ हर्ष हुलास ।
मुंछारनकी मानि है, सीवांरी सब त्रास ॥६८३॥
सात आठ ही मास लौं, रहे उतहि दीवांन ।
पुनि आयो पतिसाहकी, अैसी बिध फुरमांन ॥६८४॥
बांचत ही फुरमांनकैं, ना रहियौ नागौर ।
अब तुम गहर निवार कैं, बेगे जाहु पिसौर ॥६८५॥
उततें सहिजादौ चलै, बलख लैनके चाइ ।
तब तुम उनके संग ह्वै, फतिह कीजियहु जाइ ॥६८६॥
तब दीवांन उतकौं चले, मियां रहे नागौर ।
आठ मांस बैठे रहे, सुखसौं वाही ठौर ॥६८७॥
फौज चलाई बलखकूं, सुनी मियां नागौर ।
छत्रपतिकौ पठई अरज, जै पुंहची लाहौर ॥६८८॥
तामै अैसें लिख्यौ हौ, सुनिये सहनसाह ।
मोहूकौं जो हुकम ह्वै, तौ आऊं दरगाह ॥६८९॥
येउ तबहि बुलाइ कै, दीने बलख पठाइ ।
लघु साहिजादै कटक लै, फतिहु करी है जाइ ॥६९०॥

पठये सहजादे जुगल, रुसतमखां दीवांन ।
पुंहचे है सतरज लये, इंद श्रोहके थांन ॥९९१॥
नीकी बिध थानै रहे, मलि उजबक्की मांन ।
इक रुसतमखां दखिनी, दौलतखां दीवांन ॥९९२॥
ताहरखां है बलखमें, सहिजादे के पास ।
मींच निगोड़ी पापनी, आइ गई अनयास ॥९९३॥
कैसै कहियै जीभ सौं, कैसै सुनिये कान ।
तरवर ताहरखान जू, जगते कीयो पयान ॥९९४॥
ताहरखांको मर्न सुनि, आयौ तनं जु प्रसेद ।
रोम रोम रोवन लगे, जियको उपज्यौ खेद ॥९९५॥
ताहरखां कीनौ गवन, स्रवन सुने ये बैन ।
बस्त्र भगौहे ह्वै गये, रत रोये जुग नैन ॥९९६॥
तरुनापै ही उठि गयो, दै तरवर बैराग ।
ब्रिधपनकौं पहुंच्यौ नहीं, बाव लोगके भाग ॥९९७॥
पूनौकौ पहुंच्यौ नहीं, भाग कमोदनि मंद ।
यह बपरीत लागै बुरी, गह्यो सप्तमी चंद ॥९९८॥
थारी के मुक्ता भये, ढरे ढरे ही जाहि ।
सुरतर ताहरखांन बिनु, केहूं न द्रिग ठहराइ ॥९९९॥
हियो कमल नाहिं न खुलत, मुर्झित पल पल मांहि ।
छबि रवि ताहरखांन जू, डिष्ट परत है नांहि ॥१०००॥
कहु कैसै कै ऊपजै, नैन चकोर अनंद ।
कहु वा डिष्ट परै नहीं, ताहरखां मुख चंद ॥१००१॥
मरि करि ताहरखांन जू, हिभुवन यह दत दीन ।
नैन बहन हिरदै दहन, मनहि गहन तन छीन ॥१००२॥
प्यारे ताहर खांन बिन, क्यों करि हैं मन गाढ़ ।
उन डाइन बैरन बलख, लयो करेजा काढ़ ॥१००३॥

धर्मराज कैसे कहूं, कौन धर्म यहु आहि।
काटत अैसौ कलपतर, कृपा न उपजी काहि ॥१००४॥
मन भावन बिन तप्ततन, बढ़ी सु मेटै कोइ।
असुंवनि छाती छिरकिये, पै नां सीरी होइ ॥१००५॥
ताहरखां बिनु चित्तकौ, चिंता भई असंख।
चन्द्रकांति मन भाति नित, चुयो करत है अंध ॥१००६॥
सज्जन द्रुजन येक सम, करे सु भली न कीन।
जीवत हित बनि सुख दयौ, मरि अनहित बन दीन ॥१००७॥
सज्जन द्रिग अरहट घरी, भरि २ ढरिरे जाहिं।
दुर्जन विहसत फिरत है, दसन अधर रस मांहि ॥१००८॥
ताहरखां या देसमैं, येक बार फिर आव।
सज्जन द्रुजन को अबहि, है परखंनकौ दाव ॥१००९॥
मरि कर आयो देसमैं, घर २ उपज्यौ सोग।
अैसी बिधकै मिलनमैं, क्यों सुख पावैं लोग ॥१०१०॥
दुर्जन सौ नाहिन झुके, कीया न सज्जन प्यार।
काहू तन चित यो नहीं, रंचक नैन उधार ॥१०११॥
देखत ही ताबूतकौ, रोर परी पुर मांहि।
कौन नींद सूते मियां, तौऊ जागे नांहि ॥१०१२॥
येक बार जियकी कथा, सुनी न प्यारे आइ।
मनकी मनही में रही, बिधु सौं कछु न बसाइ ॥१०१३॥
सीत पवन लू घाम घन, सहै रहै दुख मांहि।
जांनहि जिन सिरतें गई, कल्प ब्रिछकी छांहि ॥१०१४॥

॥ सवैया ॥

काल कौ तौ नाम कालकूटतें कटुक लागै
ताहरखां सौ कलपतर जिन दाह्यौ है।
रतननिकौ समुद्र पल में सुखाय डार्‌यौ
मिटत न काहू भांति करता जु चाह्यौ है।

भर तरुनांपै ही कुबैरतें कुबेर लूंट्यौ
सोने को सुमेर काहू करि कोप ढाह्यौ है।
रोम रोम दीनो दुख दया न करी है चुख
डाइन बलखतौ करेजा हाथ बाह्यौ है ॥१०१५॥

॥ दोहा ॥ मरन पूतको सुन पिता, कैसे धीर धरंत।
रोवनहार हि रोईये, यहु दुख आहि अनंत ॥१०१६॥

बात सुनी दीवान जू, अति दुख उपज्यो गात।
करता करहि सु सीस पर, कछु बर नाहिं बसात ॥१०१७॥

पातसाह यह बात सुनि, काहू अग्या दीन।
खां सरदार बुलाइकै, बहुत दिलासा कीन ॥१०१८॥

फिरी मुहिम बलाखकी, काबुल आई सैन।
बहुर पठाई फौज तब, गढ़ खंधारकौ लैन ॥१०१९॥

जैगढ़को घेरौ कीयौ, पै बर नांहि बसाइ।
और फौज गढ़की कुमक, दीनी साही पठाइ ॥१०२०॥

इत दल साहिजहांनके, उत दल साहि अबास।
आपुनमें लागे लरन, पुंहची धूरि अकास ॥१०२१॥

तबहि फौज लागी डिगन, तब रुस्तम दीवांन।
जै सनमुख लरन, बैरनि पर्‍यौ भगांन ॥१०२२॥

॥ सवईया ॥

साहिजहां करि क्रौध खंधारके लीबेकौ आपुनी फौज पठाई।
जुद्ध मच्यौ है नच्यो तहां नारद आगें तें फौज अबासकी आई।
दछिनी दछिन वोर भयो है दीवांन अनी तव लीनी है बाई।
दौलतखां दलनाइक साहिकी सैन भलैं लरिकै बिचराई ॥१०२३॥

॥ दोहा ॥ भाजी फौज अबासकी, जीते दल पतसाह।
लरे सु मरे परे उहां, भांजि बचे गुमराह ॥१०२४॥

जब तुसार मौसिम भये, सके न दल ठहराइ।
घेरो तजि खंधारकौ, काबुल बैठे आइ ॥१०२५॥

जबहि गयौ मिटि जगततें, जांमैको हंगाम ।
तबहि पठये बहुर दल, जाइ करहु संग्राम ॥१०२६॥
बहुर जाइ घेरौ कीयौ, पै ना आयौ हाथ ।
तजि खंधार काबल तबहि, आयौ सिगरौ साथ ॥१०२७॥
तीजै बहुर हुकम भयौ, तब फिर लागे जाइ ।
ना कछु छत्रपतिसौं चले, गढ़सौं कछु न बसाइ ॥१०२८॥
जुझां होत है रैन दिन, छूटत गोली नाल ।
जाकैं लागत जात है, तिहं जिय गोली नाल ॥१०२९॥
दौलतखां दीवान जू, चढ़ि चढ़ि दोरै आप ।
बिचकर कछुकी कछु भई, चढ़ी कालकी ताप ॥१०३०॥
केतक दिनमे मरि गये, यहै जगतकौ भाव ।
कालतें काहू न बचे, रानों होइ कि राव ॥१०३१॥

॥ सवईया ॥

जा दिनते चाहुवांन कलजुग प्रगटान्यों
ता दिनते येते भूप ज्याइ कीने नये हैं ।
दत्तिकौ करन मति भौज सति हरचंद
परदुख काटिबेकौं विक्रम ही भये हैं ।
हठकौ हमीर देव छाड़ी नहीं हठ टेव
प्रथीराज बलकौं सुजस जगु छये हैं ।
दौलतखां जीवत हे राजा षट इनकै मरत
इनकैं मरत आज वैउ मरि गये हैं ॥१०३२॥

॥ कवित्त ॥ प्रथम गंजि राठौर बहुरि भंजे कछवाहे ।
जहांगीरसौं बचन कहे ते भले निबाहे ।
बहुरि कांगरौ साध बलख खंधार सिधारे ।
कटक साहि अबास खेत चढ़ि बहुत संघारे ।
श्रीदौलतखां दीवांन तौ सप्तदीप नामी हुवौ ।
अैसै मरद मुछारको, कैसें कै कहिये मुवौ ॥१०३३॥

दौलतखाँ दीवांन जबहि बैकुंठ सिधायौ ।
सुख दाइक बिन बहुत लोगन दुख पायौ ।
अबहिं कहौं वह बरस छाड़ि दीनौ जगु जामैं ।
चार भेद समुझियो गुप्त प्रगट है जामैं ॥१०३४॥
संन सहस पचास पुनि तेरह लैहु प्रमांन जी ।
११० १७५ ६६ ५२ ६१५ ४५ = १०६३०

संवत सत्रह सै जु दस गवन कर्‌यो दीवांन जी
००० ६६ ५० २३७ ८४ ००० = १७१०

यहु करबित तुरकी लिखहुं, बहुरहि दसके काढ़ ।
संन संबत तूं देख लै, आवै घाट न बाढ़ ॥१०३५॥
जब यहु खबर दीवांनकी, पुंहची जाइ नरेस ।
तबहि खांन सरदारकौं, दीनौ इनकौ देस ॥१०३६॥
देस दयो सरपाव दै, बहुत दलासा कीन ।
पुनि दयाल ह्वै छत्रपति, बिदा वतनकूं दीन ॥१०३७॥
तब घर आये वतन लै, खां सरदार मुंझार ।
हितुवन मन आनंद भयो, द्रुजन भये बिकार ॥१०३८॥
सींवारी सब थरहरे, अैसी उपजी त्रास ।
घर घरनी सब छाड़िकै, जाइ गह्यौ बनवास ॥१०३९॥
दल सुनि खां सरदारके, द्रुवननि परी दहल ।
घटा देख फोरचों घटा, तुरियो टोडरमल ॥१०४०॥
तरवर ताहरखांन तन, साहस सत सपूत ।
सरदारां सरदार है, रजपूतां रजपूत ॥१०४१॥

॥ सवईया ॥

दान खग निकलंक राख्यो न दरिद्र रंक
सुभट असंक जसु प्रगट मुझारकौ ।
गुनीजन दै आसीस सत्रनि काटै सीस
बच्यौ जिन भाजि मग लीनो दधपारकौ ।

कुलको तिलक सब मुलककौ सुख देत
अजर अमर रहौं थंभ परवारकौ।
करतकरम करि कीनों है अनूप भूप
जग पर जागै कर खांन सरदारकौ ॥१०४२॥
रूप उजागर बागरकौ पति
लागत है दिन ही दिन नीकौ।
जो लौ है ससि सूरज धू नभ
है जगमैं जल गंग नदीकौ।
तोलौं करि करतार कृपाल ह्वै,
काइम क्यामल खांनकौ टीकौ।
नैनको तारो है प्रांनको प्यारौ
है खां सरदार अधार है जीकौ ॥१०४३॥
चाहत हैं मीन जल मिले ही परत कल
चाहत चकोर चंद चकई बिहानकौ।
चाहत मयूर घन चाहत बसेत बन
चाहै मनोरथ मन कंवल ज्यों भांनकौ।
अंध चाहै नैन चाहै पग गैन
गुम चाहै बोलौ बैन घट चाहै प्रानकौ।
जैसें येती बातनकौ येती बात चाहत है
तैसे मेरे नैन चाहे सरदार खांनको ॥१०४४॥
पूत पिताकौ देखिकै, बाढ़त है अनुराव।
फदनखां सरदारखां, कोट वरषकी आव ॥१०४५॥

॥ इति रासा सम्पूर्णम् ॥

परिशिष्ट

श्री अलिफखांकी पैडी लिखते

पहलैं अल्लहु सुमिरिये । जिन्ह सुभट उपाया ।
बोल जिलांवण कारणैं । रक्खैं नहीं काया ।।
मांणसदै सारै नहीं । सोकर सुभाया ।
सोई जिंत्तै जांन कहि । जिस वोड़ खुदाया ।।१।।
नांव महंमद लीजिये । सुभटां सिरदार ।
पंथ दिखाल्या दीनदा । सगलै सैंसार ।।
जिन्हां कलमां अक्खिया । ते लगों पार ।
दिल विच जिन रखी दगा । ते सटे मार ।।२।।
जहांगीर अकबर हंदा । दिली सुलिताणां ।
चार चक नव खंड विच । फिरवाई आणां ।।
सत्ताँ दीपाँ ऊपरे । तपियां ज्यौं भाणां ।
तिन थिर थप्या अलिफखां । टिका चौहाणां ।।३।।
दादे तेडैं क्यामखां । केंही गल किती ।
केती धरती मार कर । तेगां बल लिती ।।
मलूखाँसूं खेत चढ़ि । जुध बाजी जिती ।
खिदरखांनकी बांहि गहिं । दिली ले दिती ।।४।।
[टि]क्का क्यामलखांनदा । खानां सिरताज ।
वड्डा होई जु गोत विच । तिस वड़ी लाज ।।
भुंमियां फिरे पहाड़दे । सज्जहु दल साज ।
मांरण मरंण भिडंनदा । रजपुत्तां काज ।।५।।
बासो पहली होत तैं । कर जुध्ध भगाया ।
पछैं सूरजमल्ल भी । तैं खेत खिसाया ।।
इब जगतैं ऊपर चढ़ौ । उन सीस उठाया ।
तुम्ह बिण येहा कौण है । जिस लोभं न काया ।।६।।

साके तेंडे बड़ बड़े। नां जांहि गिणाये।
बिदा कीया तूं जंहानो। ते भैं पजाये॥
राणैं जेहे भूपति। तैं खेत खिसाये।
चारौं चकदे भूमियां। गहि आंण मिलाये॥७॥
नगरकोटदे भूमियां। हैं नितदे आकी।
लुट्टे सगले परगंने। छड्डी नहीं बाकी।
फौजदार सिकदारदी। कुंह रही न नांकी।
तहां पठाया अलिफखां। दे गज औराकी॥८॥
पातसाह बड़ मोलदा। सरपाव पिन्हाया।
बीड़ा दिता प्यार कर। खां पैर लगाया॥
बिछा होइ तसलीम कर। डेरैनौं आया।
तद हीं डेरैथैं चढया। चुख नां ठहराया॥९॥
हिक धापही अलिफखां। परबत पर धाया।
गहर न किता पंथ विच। बहला चलि आया॥
तद थरराये भूमियां। यदि यों सुणि पाया।
जगतैसूं चगता खिझ्झया। चहुवाण पठाया॥१०॥
खां चड़िया नगारची। नीसांण बजावै।
जेही भादौंदी घटा। घणहर घररावै॥
झूझ करणनौ अलिफखां। आनंदसूं धावै।
जाणौं नौसहु चौंपनाल। ब्याहंणनौ आवै॥११॥
पैठा आइ पहाड़में। दमांमे बज्जे।
सोर होवा सैंसार विच। परबत मिलि गज्जे॥
नाहर देखें गउ ज्यौं। राजे हंभ भज्जे।
जीव बँचाया रज तजी। अपजस नाँ लज्जे॥१२॥
अग्गे अग्गे भूमियाँ। पछै दीवाणं।
मिरग डार ज्यौं भज्जदे। हंढै उदयाणं।
निंद्द भूख त्रिसनां मिटी। छुट्टी सुखबाणं।
गिरवर गिरवर पंछ ज्यौं। वै लेहूं उडाँणं॥१३॥

नर नारी मिल सेज पर। नां करहि किलोल।
अंखी कजल नां रह्या। मुंह नाँहि तंबोल॥
पत्रांहदे कपड़ कीये। फटि बसंन अमोल।
कदहीं दरपण हथ्थ लै। नां तर्कहिं कपोल॥१४॥
भगे फिरैं पहाड़िये। भारी दुख पावैं।
पैर थके परबत चढ़त। संगती बिललावैं॥
अन्न पकावणनों नहीं। तरु छाल पकावैं।
दल देखें दीवानदे। छड़ि आप भगावैं॥१५॥
मौपै ठाण धमेहड़ी। मारी असराल।
जंबूदा जंबू हुवा। चूहा चंब्याल॥
नगरकोट अपबस कीया। असु चढ़ि ततकाल।
मंडई और सुखेत ले। कड्डी रिप खाल॥१६॥
कीता नगर सिकंदरा। बहु साह सिकंदर।
तहां अलिफखां जाइ। करि ढाहं अ...।
भगे फिरैं पहाड़ियै। ज्यों गिर गिरकंदर।
रुक्खां उपर कुददे। हंढ़ै ज्यौं बंदर॥१७॥
हंभ पहाड़ी हिक होइ। यह गल विचारी।
खां जीवत छड्डै नहीं। हम निजर निहारी॥
उड़ि न सकै फट्टै नहीं। धर काठी भारी।
करें लड़ाई बागले। हभ येकै बारी॥१८॥
जगता चढ़या पठाणियां। बिसभर चंब्याल।
सीबैंदा अभू चढ्या। फतू जसवाल॥
चड़या सुखेतड़ स्यांमदा। चंद सूरज मंडाल।
भोपत बिलूदा चड़या। ठक्कर चिड़ियाल॥१९॥
अंनरुध चड़िया राजपुर। और टलू कपूर।
चड्या कल्याण कूलूदा। चंदा कहलूर॥
अरु बूला कुटलहरिया। आइ हुवा हजूर।
चंद्रभाण तत्ता चढ्या। ज्यौं उगै सूर॥२०॥

....ड़च दल सज्जिकें। चड़िया पठियाड़ ।
खणिहाड़ चभी छड़िकें। आया खड़िहाड़ ॥
मन महेस भूटतदे । ढूढंदे.....राड़ ।
किसदा किसदा नांव ल्यों। हभ जुड्या पहाड़ ॥२१॥
मिलकर सकल पहाड़िये। दल सजे अपार।
गिणत न लेखा आंवदा। उंमड़ा सैंसार ॥
चड़ कर आये खांन पर। नां लग्गी बार।
आंगै हाथी घूंमदे । करदे हाकार ॥२२॥
तब यह गल दीवांणजी। येही सुंणि पाई।
अगणित फौज पहाड़दी। मुझ उप्पर आई॥
अलिफखांन नीसांन दे। तद सैण बंणाई।
जस लालचदे लालची । मिलि करैं लड़ाई ॥२३॥
अलिफखां फुरमाईया । ल्यावहु केकांण।
तद उठि दौड़्या सांहणी। दौला सहनांण॥
अणौं निल्ला नचदा । देख्या विच ठांण।
चौंर फुलांया पुंछदा । पाये अहन.... ॥२४॥
कीया खरहरा सांहणी। असु अंग दिपाया।
आण्यां नीर बिवाहदा। केकांण न्हवाया।
पांणी सट्टया पुंछ कर। रूंमाल फिराया।
आद लंगाम बणाइकै। सिरजोट पिन्हाया ॥२५॥
बांध गलतंणी मखमली। खौगीर धराया।
जींन कीया साखत सजी। ले तंग तणाया॥
जेबंध अगवंद कसि । पाखर पखराया।
दुमची और रकेब कढि। हभ साज बणाया॥
सिरी धरी सिर बाग रखि। बंधण खुलवाया।
सिंध ऊपर पाखर पड़ी । ताजी पीड़ाया।
इंद उचीस्रव छड्डिकै । देखणुंनों आया ॥२६॥

नीला आया नच्चदा। ज्यों मोर कलाइर।
ऊप्पर पखर फरसरै। लहरी रैणांइर॥
चाबक लगें उच्छलै। बिण छेड़्या साइर।
गज्जां हंदी सैंण बिच। नां होवै काइर॥२७॥
....बैठा अलिफखां। जिन सभ जग जित्ता।
चंगा नीर समोइ कर। खां गुस्सल कित्ता॥
अच्छै कपड़े पेंन्ह कर। रज प्याला पित्ता।
राग जिरह तन सज्जिकै। खोल सिर पर दित्ता।
सगले आवध बंधिकै। हथ बरछा लित्ता॥
बैरी डिठां दौड़ाई। ज्यों मिरगां चित्ता॥२८॥
दिता पाव रकेब बिच। सुमिर्‌या चित सांई।
चड़िया खां केकाण पर। हभ सैंण बणाई॥
अणियां रखी बंडिकै। दिस दखिण बाई।
अग्गै घुमें चतुर गज। ऐरापति नांई॥२९॥
कोतल अग्गै खाँनदै। चलै उछलंदे।
धुर ऐराक अरब्बदे। चंगे दीसंदे॥
लगै भारी सोहणें। आवें हीसंदे।
जेही मूरत कांमदी। मंनणों मोहंदे॥३०॥
सुनैं जेही कंध हैं। वै जरदे पीले।
रूपैदे मंदिर जिहे। वै निकुरे नीले॥
मंकल चांदणी रैंणसे। अबलक छबीलै।
पंख लगें चाबक लगें। बिण छेड़ै ढीले॥३१॥
पोते क्यामलखांनदे। हभहीं मरदानें।
दूनौं पखौं निरमलै। दादक अरु नांनें॥
बिरद बहै रजवट्टदा। राखंदे बांनें।
दिलीदै पतिसाहदै। दिल अंदर मांनें॥३२॥
पिरथीराज हमीरसे। हैं जिनदै पच्छै।
जुद्ध समैं फुले फिरैं। भिड़दे मन अच्छै॥

पेन्ह संजोवा खोल धर। जोगी गत कच्छै।
खाती हो रिप ब्रिछनों। तच्छै ही तच्छै ॥३३॥
ताजनदे पोते तिलक। सुभटां सिरताज।
स्वांम धरमनौं पालदे। इंनदा इह काज ॥
खेत छड्डिकैं लूंणनौं। लावैं नां लाज।
बैरी दिट्ठां दौड़दें। ज्यों तित्तर बाज ॥३४॥
कूरम कमधज देवड़े। आये चौहाणं।
चाहिल मोहिल सांखुले। अरु मुगल पठाणं ॥
कुली छतीसौं बंणि रही। कुंद्दै केकांणं।
गज अगै करि भिड़ननौं। चड़िया दीवाणं ॥३५॥
रजपूतांसूं·········कहै। आपै दीवांणं।
जग विच जोइ जनमिया। सो मरै निदाणं ॥
मरण वड़ा सोई वड़ा। सिख रखौ कांणं।
सत साहससूं जो मरै। जीतब तिह जाणं ॥३६॥
निल्ले पीले उज्जले। वैबोर कुमैत।
अबरस मुसकी मंगसी। खिंग हरियल अैत ॥
हुये संजोईल सूरिवां। घोड़े पखरैत।
खुरी करावै चौंपनाल। रावत बिरदैत ॥३७॥
करनांयों घर रावदी। बजै सहनाइ।
मारूं सींधू सुभट सुंणि। नां अंग समाइ ॥
सत प्यालै मते हुये। रज छाक छकाइ।
दोड़े परदल विच पड़ै। सुधि गई हिराइ ॥३८॥
जुद्ध रागदी सुरति सुंणि। होवा चित चाइ।
भुजां फरकै भिडणनों। यह सूर सुभाइ ॥
फुल्ले सुभट संजोव विच। तन नांहि समाइ।
कदली दल ज्यों कापुरुस। डरि डरि थरराइ ॥३९॥
चड़े कटक दहुं वोड़थैं। रिस धरि मंन धाये।
हुवा अंधेरा धूल उड़ि। नभ सूर छपाये ॥

बिण बोलें को ना लखै। आपणें पराये।
जेही दरियादी लहर। दूनौं दल आये ॥४०॥
धरण धसमसी खुंद खुर। गिरवर थरराये।
कमठ कलमल्या कसमस्या। धौंलै सुख पाये।
सेस सांस रूंध्या हीया। अंग अंग भै छाये।
करन अहेड़ा जिददा। दूनो दल धाये ॥४१॥
जांण संजोइ लहैं घटा। गरजत नीसांणं।
गोली वोलेसे पड़ै। अरु बूंदै बांण।
चंद्रबांण निस बिच बणें। बिजली चमकारं।
अंधी ल्याई मेहनौं। दल धूलन जांणं ॥४२॥
असु हींसै मैमंत गज। मद बहै हंकारैं।
मार मार ही सूरिवां। मुंह बैण उचारैं॥
दुंद मच्या बिरचै कटक। मारैही मारैं।
दिनकूं दिन को नां कहै। हभ रैंण बिचारै ॥४३॥
चटकैं तीर चलावदें। कर सुभट कमाणं।
अटकैं विचही आंवदें। बांणैसू बाणं॥
सटकैं मिसरी म्यानथैं। बाहैं करपाणं।
लटकै सिर वै नस लगै। नालक दूजाणं ॥४४॥
दुंह दल अग्गैं गज बणें। उमँड़े घण काले।
गुंज गरज बगपंतसे। है दंत उजाले॥
मद बरसणि अंकस असणि। घूमंणि मतवाले।
मंदिर जेहे गज बणं। अरु सुंड पनाले ॥४५॥
हाथीसूं हाथी लड़ै। मद बहत अपार।
मिली जांण काली घटा। बरसंदी जल धार॥
बाव चली है जोरदी। कबि कीया बिचार।
तर तमालदे ज्यौं मिलैं। तेंही उणिहार ॥४६॥
हाथी देखे आंवदे। सुख सुभट अपार।
घटा देख ज्यों होइ सुख। संजोगिण नार॥

काइर कंपै थरहरै। अंखी अंधियार।
इनकूं गज येहे लगें। निसदी उणिहार ॥४७॥
देखि तुरंग कुरंगसे। कुंजर पये धाइ।
भज्जि चले असु चमकिकैं। गज पहुंचे आइ।
कहत जांन कवि जाणियों। यहु हुवा सुभाइ।
पिच्छै हो काली घटा। अग्गैं हो बाइ ॥४८॥
तट सुभटा कर ताजणां। सनमुख असु आंणै।
घाव लगाये रोस विच। जेहे मन मांणें॥
अग्गे हथी भग्गदे। असु गैल लगाणें।
जेहे बदल बावथैं। वै फिरैं भगाणें ॥४९॥
साथी अल्लिफखांदे। हथी मद बहंदे।
गुरज मोगरी नां बदैं। गड़ सांगै सहंदे॥
अंधियारी हल धूलदे। राखें नां रहंदे।
चरखी बांण न मांणदे। हंढै रिप गहंदे ॥५०॥
लाई भारी जांण कर। हो सूर करूर।
गज तन बरछी गड गई। बैठी भरपूर।
कीये महावत बहुत बल। न होंदी दूर।
परबत ऊपर देखिये। जाणूं पड़े खिजूर ॥५१॥
रोस होइ करि सूरिवैं। गज मारे भारी।
बाद बाद बाही भलैं। समसेर दुधारी॥
लीक कसौटी देखियें। कबि उक्ति बिचारी।
कै मिलि बैठी मोटियार। सिंदूर सँवारी ॥५२॥
जोधा क्रोध बिरोधसौं। गज सौंहैं धाये।
हथियारौं हाथी हंणें। हथ चंगे लाये॥
सुंड कटी करवार लगि। ये भेद बताये।
नाग जांण डिग रूंखथैं। धरती पर आये ॥५३॥
सुभट अमिट गजसूं लड़ै। चित्त हंदै चाइ।
कट्टि सटि है क्रोध विच। किरमांणी धाइ।

सुंड मुंड भू टुट पये । यह हुवा सुभाइ ।
गिरवरथे उखली खिजूर । लग्गें जणुं बाइ ।।५४।।
घोड़े हसती सैंण बिच । सोंहणि उछलंदे ।
झुकि आई काली घटा । जाणू मोर नचंदे ।।
टूटि टूटि फल सांगदे । गज अंग गडंदे ।
तारे काली रैंणमें । तेहे चमकंदे ।।५५।।
हाथी दोड़ै रोस विच । वैं मिटहि न मेटे ।
सौहें आया सूरवां । सुभटांदें बेटे ।।
पकड़ फिराये जे लहे । गहिं सुंड समेटे ।
आई वधूलें जांन कहि । जाए तिएँ लपेटे ।।५६।।
कुहक बांण गज लगिकै । छुट्टै चिणंगार ।
तिसदी उपमां देख कर । जांन कीया बिचार ।।
हथ्थी पख्खर जल उठी । येही उणिहार ।
परबत पर भांही लगी । घाहु जल्या अपार ।।५७।।
मद बहंदे रहदे महीं । नां मंनै सार ।
गोली केती लगिकैं । निकली दुसार ।।
गोलै भनां पेट गज । कबि कीया विचार ।
ज्यों कंदरा पहाड़ विच । तेहीं उणिहार ।।५८।।
सुंड कटो जाएं गिरै । मंदिरथै नाले ।
पड़े महावत सथ्थ ही । घावांदे घाले ।।
बांदर जानूं धर पये । टूटे तर डाले ।
कै ज्यौं आवै परबतथें । ढुलदे मतवाले ।।५९।।
हाथी दौड़े क्रोधसूं । बंधए जद खोला ।
दल कंप्या ज्यों तर कंपै । लगि पवन झकोला ।।
पीलवांन उड़ि धर पड़े । लग्या तन गोला ।
चिड़ी पड़ै भू रूंखथैं । ज्यों लगिग गिलोला ।।६०।।
पीलवान पग डिग गये । लग्गे सर भाल ।
धरती पड़देही मुये । आइ दब्बे काल ।।

छूट्टे जग-दल विच फिरनि । तिन्ह येहा हाल ।
भैंही पसर उछेर कर । जाणू सूते ग्वाल ॥६१॥
गोली निकली अंग गज । चलणी उणिहारे ।
दीसैं घाव दुसार यों । ज्यों नभ विच तारे ॥
पड़े रुंख धर पवनथैं । कबि वेद बिचारे ।
कै जाणू मन्दिर ढह गये । बरषादे मारे ॥६२॥
हसती मारणि कोह कर । जे सुभट सुजात ।
हाथी धरती पर पये । तिन्हंदी सुणि बात ॥
येहे लग्गे जांन कहि । काले गज गात ।
पड़छाहीं सी देखिये । कै सुती रात ॥६३॥
तीन पाव कुंजर कटे । तरवारी घाव ।
डिग हथ्थी भू पर पया । मगरादं दाव ॥
हिक्क पाव उप्पर खड़ा । सुणि येहा भाव ।
तल तर जड़ उप्पर हुई । उखल्या लगि बाव ॥६४॥
मद बहंदे रहंदे नहीं । दौड़ै मैमंती ।
दंती दंती आप विच । होवै चौ दंती ॥
धोलै धोलै दंत मुह । जेही बगपंती ।
घंटा घण विच बीजली । जाणूं चमकंती ॥६५॥
हाथी आया खान पर । चीर दंसार ।
खांजी आग्गै तमक कर । बाही तरवार ॥
सुंड पई कटि देखियें । येही उणिहार ।
पइया नाग पहाड़थैं । कबि किया विचार ॥६६॥
और गज आया खान पर । गति परबत जेही ।
झरणैंदी उणिहार ही । मद बहंदा देही ॥
बरछी मारी खांनजी । सुंड पैठी केही ।
बंबई विच नागण बड़ी । वह लगै येही ॥६७॥
आगैं परैं न धर सकैं । दंती मैमंत ।
बाव हलावै रूंखनौं । त्यों गज थररंत ॥

बरछी सुंड भकोल कर । काढ़ी इह अंत ।
सर्प सर्पनों देखिये । निगलत उगलंत ॥६८॥
खांदे चक्कर सूँरिये । बहुले गज मारे ।
हार गई भुज मारदें । चित नाहीं हारे ॥
बरछी पोये पीलवांन । कबि भेद बिचारे ।
जाणू कांपा लाइकैं । तर पंछ उतारे ॥६९॥
लोहूदे नाले चले । नदियां सीआंणी ।
गोला लग हाथी पये । धरती कंपाणी ॥
उछली बुंदै रगतदी । तिसक्या नीसाणी ।
जाणु कराड़ा टुट्टिकै । पइया विच पांणी ॥७०॥
बजैं भुभाऊँ दुहु दल । नीसांण गमकै ।
तीर चक्र छुंणके करैं । अरु सांग धमंकै ॥
सुंकारे गोली करैं । तरवार भमंकैं ।
जाणुँ कालीं घटा बिच । वै बीज चमंकै ॥७१॥
हथ्थी हथ्थी जुद्ध करैं । और लड़ै महावत ।
पाइकसूँ पाइक भिड़ै । रावतसूं रावत ॥
सुभटसूँ निपट निसंक होइ । मारणनों धावत ।
काइर कोट जतंन करै । जिद वोट बंचावत ॥७२॥
भले भिड़ै भिड़ आपमैं । कुदैं कर छालैं ।
वोट होइ कर चोटनों । बै नांही टालैं ॥
सांगौ मारे धर पये । तरफैं कर डालैं ।
लहरी लैंदे देखियें । खाये अहि कालैं ॥७३॥
लगे ताजणौं कोह कर । असु करी जगंद ।
हस्तीदै मस्तक चढ्या । चित्त बीच आनंद ॥
नाल रह्या गड़ि सीस गज । सुणि उकति निरंद ।
जाणूँ निकल्या दूजनों । दुतियादा चंद ॥७४॥
सुभट सुभट लड़ रत रंगे । कर खेल धमाल ।
सभनांदै गल बिच होवै । है कपड़े लाल ॥

उछलंदे असवार यों। लगि गोली नाल।
बंदर लेदें देखिये। उलटी कर छाल ।।७५।।
भिड़दे भार आप बिच। सुभटाँदे झुंड।
हाथ पांव कटि कटि पवैं। अरु फुट्टै मुंड ।।
टूटि गई करवार भी। हथी रहे टुंड।
चंगे न्हाये सूरिवां। धारांदै कुंड ।।७६।।
बरछी बाही सूरिवैं। जेही विच जांणी।
चोट लगी रत उछलैं। विच सिप्पर आँणी ।।
सिप्पर बरछी पोइली। तिसक्या नीसाँणी।
जाणूं किरछित नालियां। भीगंदै पांणी ।।७७।।
लोहैंसूं लोहा मिलै। सुणियै ठणकार।
झाल सहारै लोहदी। सापुरस झुझार ।।
गज्जैं जोधा क्रोध बिच। अरु बज्जै सार।
कुंभ फुटि सिर टुट्टिदे। छुट्टैं रत धार ।।७८।।
फड़फड़ाहि सिर सुभटदे। वै तनथै न्यारे।
मार मार बिण और कुछ। नां बैण त्रिचारे।
तड़फड़ाहि धर धरणि पर। सिर विण बेचारे।
डगमगाहि घाइल चरण। मदुवै उणिहारे ।।७९।।
लोहू नदी सुरस्सती। जमनां गज मारे।
गंगा जेहे दंद मुंह। करतार सँवारे।
तिरवैणी संगम होवा। जांन भेद बिचारे।
सुभट परे रत न्हांवदे। जाणूं पूजारे ।।८०।।
पड़े सूरिवां खेत बिच। अरु कुंजर पास।
सुंड लगी मुँह सुभटदै। सुणि उकत प्रगास ।।
जाणूं सुत्ते देख कर। पीवणदी प्यास।
निकल्या सर्प पहाड़थैं। पीवंदा स्वास ।।८१।।
अंदादे धगे कीये। हौर मणके सीस।
गज सुंडांदे मेर कर। माला कीनी ईस ।।

करै कपरदी रत डिहूँ। सुमिरण जगदीस।
अति हरिखिदा जांन कहि। दे सुभट असीस ॥८२॥
मुंडहृदीं माला करी। पुजे सिव काज।
गलै लग्गि सुभटां मिल्या। मन फुल्या आज ॥
सूरांदे लोइण खुले। अति रहे बिराज।
गिरभ्भै दौड़े अंख पर। ज्यौं दल बै बाज ॥८३॥
पड़े सूरिवां खेत बिच। घाव भकभक बोलें।
पास न आवें गिदड़े। वै भगदे डोलैं ॥
·······वेखैं मुंछां हलदी। जद पवन झकोलें।
गिरभ्भ अखंदा त्यौर तकि। मुंह नांही खोलै ॥८४॥
धूल पई उड़ नैंण विच। डिठ त्योर छिपाये।
निडर होइ द्रिग सूरदे। तद गिरभ्भौं खाये ॥
अंख बाभ्भ तन सुभटदे। दिट्ठां रहसाये।
तद सियाल डिठ बंधकै। खांणेंनौं आये ॥८५॥
अत किलकंदी चौंपनाल। जुग्गिन उठि धाई।
घांण पया जित सुभटदा। तित प्यासी आई।
खप्पर भर छांणहि रगत। दिल विच हरखाई।
रैंणी जांण कसूंमुदी। रंगरेज चढ़ाई ॥८६॥
हाथी कटि धरती पये। घाइल होइ भारी।
जिद निकाल्या सूरवें। सांगोदी मारी ॥
जुगिणं गज उतरें चढें। जेही उणिहारी।
टिब्बै चड़ि चड़ि कुद्दी। ज्यों कन्या कवारी ॥८७॥
रिण विच वस जुगणीं। मिलि करी धमाल।
पिचकारी गज सुंड कर। छिड़कै रत बाल ॥
लाल हुये रंग हभांदे। रंग रगत गुलाल।
मुंड कुंड विच न्हाइ कर। वै हुई निहाल ॥८८॥
पीवे प्यालै खोपरी। मिलि जुगिणीं बाली।
मद लोहूथें हढ़िहें। हंभै मतवाली ॥

गजक कलेजेदी करी। अंखा विच लाली।
अंदा विच गिरभाँ फँधी। ज्यों पंखी जाली ॥८९॥
मुंड किथांहूँ कटि पये। धड़ सिरथैं न्यारे।
रज सहदा प्याला पीया। डर मरंण निवारे ॥
राहु केत अंब्रित लिया। वै मरहिं न मारे।
अमर हुये मरि सूरिवां। ग्रहदी उणिहारे ॥९०॥
दिती अंदै गिरभनौं। होर अंख कराल।
लोहू दित्ता जुगणी। होर सिभ कपाल ॥
हड्ड सुघर तीनों दये। चंम मास सियाल।
हभ तन दित्ता वंडि कर। जस लंया मुछाल ॥९१।
सांहिमखां सिरदार है। जिस वड्डा तोल।
सही भतीजा खांनदा। जग रख्या बोल ॥
येदल नाथा भाइया। कम्माल अमोल।
काइम दोइ जमालखां। रिए करहि कलोल ॥
तुग्गू हंदे मुजाहदा। भीषंन बहलोल।
लाडू अरु पेरोजखां। पइया हिक कोल ॥
खानूं अबू सरीफ भी। रंगिया रंग चोल।
अरु मारूफ सिकंदरै। सहिया भकभोल ॥
खानूं खासा खांनदा। भिड़िया दै ढोल।
उदा परता चतुरभुज। रांणां खग खोल ॥
कौजू हरदा मनोहर। जग्गा घमरोल।
दोदराज मोहन जुगल। तेगां तन छोल ॥
किसदा किसदा नांव ल्यौं। भूझे हभ टोल।
यों खधी तलवार मुंह। ज्यों खांहि तंबोल।
खां उपर हभ सथ्थनैं। जीव सट्या बोल ॥९२॥
सुभट मुये दुंह बोड़दे। आवै नां गिणांए।
हय गय नर मिलकै पया। कीचक भमसांए ॥

पातसाहदै कंमनों । झूझै दीवांण ।
हूर भिसत बिच ले गई । बैठाइ बिवांण ॥६३॥
अलिफखांदी जोडनों । उमराव न आंण ।
जहाँगीर पतिसाह भी । यों किया बखांण ॥
जीवंदे बहु गढ़ लीये । जाणंत जहांण ।
मुयें भिसत ली जाइ कर । धंन धन दीवांण ॥६४॥
येहा जुध सैंसार बिच । किनहीं न मचाया ।
दुहूं बोड़दे सूरिवां । हिक जीव तन पाया ॥
बिरचे जोधा आप बिच । किरचेकी काया ।
जगतै बिसंभर भगि कर । जिंद आप बंचाया ॥६५॥
स्वांम धरम पाल्या भलैं । चिकवै चौहाँण ।
पातसाहदै कंमनौ । दित्ता जीव दांण ॥
जारत आवै खांनदी । चलि सकल जहांण ।
करामात परगट हुई । सिझे……दीवांण ॥६६॥
नांव घिणंदे अलिफ़खां । दुख दालद भग्गै ।
मनदी मनसा पुज्जवै । भाग सुत्ता जग्गै ॥
पावै धन सुत लखमी । जोई दिल मग्गै ।
हम कुह पावै भोर उठि । जो पैरा लग्गै ॥६७॥
सुभट सुणें गल हथ्थियार । तौ रथ्थी लीजै ।
जेही कीती अलिफखांनु । जेतेही कीजै ।
पांणी हथियारा हंदा । अंम्रित ज्यों पीजै ॥
कड़ही नांव मरै नहीं । जै देही छीजै ॥६८॥
ढाढ़ी पठ पंजाबदी । बोली पहिच…(चानी ?)
वह तौ सुध आवै नहीं । जे करूं बढ़…(बढानी ?)
भाषादी चिंता नहीं । गल सची ज…(जानी ?)
उकत बिसेख जु कहि गये । सोई परव…(बानी ?) ॥६९॥

सोलहसै ईकईसमें । जनमें दीवांए ।
कीये ऊजले क्यामखां । चकवै चौहांए ।।
संवत हुवा तियासिया । लैखै परवांए ।
बैकुंठ पहुंचे अलिफखां । छड्ड दीया जहांए ।।१००।।

।। इति श्री दीवांन अलिफखांकी पैड़ी संपूर्ण ।।

सम(मा)प्ता । अथ संवत् १७१६ मिती कातिक बदी ११ सनीसरवार । तारीख २३ मा० मुहर्रम सन् १०७० लिखाइतं पठनार्थ फतैहचंद लिखंत भीखा ।।

———o———

क्यामखां रासाके टिप्पण

पृष्ठ १, पद्यांक ९. नूर महम्मदको रच्यो......

ग्रन्थकर्ताने, मुसलमान होनेके कारण, जगत्की सृष्टिकी मुसलमानी परम्पराका अनुसरण किया है।

पृष्ठ ४, पद्यांक ३८. वाकै राजा आद हुव......

इस पद्यसे जाँनने हिन्दू परम्पराको मुसलमानी परम्परासे जोड़नेका प्रयास किया है। इसके अनुसार आदमसे अनेक पीढ़ियोंके बाद आदि, अनादि, पुणादि, ब्रह्मादि, मेरु, मंदर, कैलास, समुद्र, वशिक, राहु, रावण और धुंधुमार हुए। धुंधुमार चक्रवर्ती राजा था।

शायद यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि यह कल्पित वंशावली पुराणसम्मत नहीं है।

पृष्ठ ४, पद्यांक ४४. प्रगट्यो तिहिं मारीच सुत......

सम्राट् धुंधुमारको मरीचि ऋषिका पिता बताना शायद चौहानोंके भाटोंकी कल्पना रही होगी। मरीचि तो केवल ऋषि मात्र थे।

पृष्ठ ४, पद्यांक ४५. वाकै राजा जमदग्गिन......

मरीचिका जमदग्नि, जगदग्निका परशुराम, परशुरामका शूर, शूरका वत्स, वत्सका चाहु और चाहुका चन्द्रमाके स्मरणसे उत्पन्न चाहुवान – यह नवीन चौहान-परम्परा किसी अंशमें कल्पित होती हुई भी महत्त्वपूर्ण है। सभी चौहान अपनेको वत्स गोत्री मानते हैं; किन्तु सभी अपनेको वत्सको संतान माननेके लिये तैयार नहीं हैं। क्योंकि वत्स गुरु-गोत्र भी हो सकता है। क्यामखां-रासामें स्पष्टतः इन्हें ऋषि वत्सकी संतान माना गया है, और यही संभवतः ठीक है। क्योंकि अनेक प्राचीन प्रमाणों द्वारा इस कथनकी पुष्टि की जा सकती है। बिजोल्याके शिलालेख (सं. १२२६) में स्पष्ट लिखा है कि प्रथम चौहान राजा अहिच्छत्र पुरका वत्स-गोत्री 'विप्र' अर्थात् ब्राह्मण था। सूंधाके संवत् १३१९ और अचलगढ़ (आबू) के संवत् १३७७ के शिलालेखोंमें भी चौहानोंका वत्स ऋषिसे सम्बन्ध, प्रायः इतना ही स्पष्ट है। केवल पृथ्वीराज-रासाके आधार पर उन्हें अग्निवंशी मानना इतिहास-विरुद्ध है। वस्तुतः आरम्भमें चौहान ब्राह्मण थे; धर्मकी रक्षाके लिए क्षत्रियो-चित कार्य संभालनेके कारण, बादमें उनकी गणना क्षत्रियोंमें की गई। प्राचीन कालमें इसी तरह ब्राह्मणोंसे अनेक क्षत्रिय-वंशोंका और क्षत्रियोंसे अनेक ब्राह्मण-वंशोंका प्रवर्त्तन हुआ है।

पृष्ठ ५, पद्यांक ५०. संभर लयो निकास जिहं......

पृथ्वीराज-विजय एवं बिजोल्याके शिलालेखमें वासुदेव चौहानको सांभरका उत्पादक माना गया है। शायद उसका यह मतलब हो कि इसी राजाने सर्व प्रथम शाकम्भरी क्षेत्रको झीलका रूप देकर नमक निकालना आरंभ किया हो।

पृष्ठ ५, पद्यांक ५४. क्यामखान देवरे सीसोदिये......

चौहानोंकी शाखाओंकी यह सूचि महत्त्वपूर्ण है; किन्तु इनमेंसे कुछ अपने आपको अब चौहान नहीं मानते। विषय गवेषणीय है।

नैणसीके अनुसार चौहानोंकी निम्नांकित शाखाएँ थीं–

सोनगरा, खीची, देवडा, राकसिया, गीला, डेडरीया, बगसरिया, हाडा, चीबा, वाहिल, सेलोत, बेहल, बोडा, बोलत, गोलासण, नहरवण, बैस, निर्वाण, सेंपटा, ठीमडिया, हुरडा, म्हालण और बंकट।

कर्नल टॉडके अनुसार २४ शाखाएँ ये थीं–

चौहान, हाडा, खीची, सोनगरा, देवडा, पबिया, सांचोरा, गोहेलवाल, भदोरिया, निरवाण, मालण, पुरबिया, सूरा, मादडेचा, संकरेचा, भूरेचा, बालेचा, तरसेरा, चाचेरा, निकुंभ, रोसिया, चांदू, भांवर, बंकट।

पृष्ठ ६, पद्यांक ५८. राज कियो है दिल्ली में मानक दे चहुवांन......

दिल्लीमें मानिकदे आदि चौहानोंका शासन राजभाटों और कवियोंकी कल्पना मात्र है। विग्रहराज चतुर्थसे पूर्व दिल्लीमें चौहानोंके राज्यके लिये कोई प्रमाण नहीं दिया जा सकता। क्यामखां रासाकी वंशावली और घटनावलीका यह भाग अधिकांशमें कल्पित है।

पृष्ठ ७, पद्यांश ८२ से. चंवका अप्सरासे सम्बन्ध और उससे क्यामखांके पूर्वजोंकी उत्पत्ति......

ऐसी कल्पित कथायें अन्य ऐतिहासिक व्यक्तियोंके विषयमें भी प्रचलित हैं।

पृष्ठ १०. पद्यांक ११०, ताके गूंगा वैरसी......

क्या यही ददरेवेका वीर चौहान है? हम एक पीढ़ीके लिये लगभग चौबीस वर्ष रखें तो गूंगा महमूद गज़नवीके समकालीन बैठता है।

पृष्ठ ११, पद्यांक ११९. तिहुंनपाल सुत ऊपज्यो मोटेराई सकाज......

ददरेवेमें चौहानोंका राज्य पर्याप्त प्राचीन समयसे है। डाक्टर टैसीटोरी द्वारा संपादित संवत् १२७० के शिलालेखमें मंडलेश्वर गोपालके पुत्र राणा जयतसिंहका उल्लेख है।

(एशियाटिक सोसाइटी बंगालका मुखपत्र, पु० १६, पृ० २५७)

पृष्ठ ११, पद्यांक १२७. उतरें है हिसारमें आइ......

इस पर पृष्ठ ११४ की क्यामखांकी मृत्यु पर की टिप्पणी देखें।

पृष्ठ १४, पद्यांक १६३. फौजदार करि क्यामखा, सौंपी दिल्ली ताहि।
आपुन दलबल साजिकै, चले ठटाकौं साहि॥

फिरोजसाह तुगलकने सन् १३६२ में ९०,००० सैनिक लेकर ठटा पर आक्रमण किया। सिंधियोंने तुगलक सुल्तानका इतनी वीरतासे सामना किया कि उसे ठटाका घेरा उठा कर

कुछ समयके लिए गुजरात लौटना पड़ा। सेनाके बहुतसे आदमी भूख, प्यास और बीमारीसे रास्तेमें मर गये। दिल्लीमें भी बहुत दिनसे कोई समाचार न पहुँचनेके कारण घबराहट फैल गई। केवल प्रधान मन्त्री मलिक मकबूलकी सावधानीसे स्थिति संभली रही। बादशाहकी अनुपस्थितिमें दिल्लीका कार्यभार इसीके हाथमें था। चौहानवंशी क्यामखांकी तरह मकबूल भी किसी समय हिन्दू था। किन्तु उसकी जाति राजपूत नहीं, ब्राह्मण थी और वह शुरूमें तेलिंगानेका रहने वाला था। उसको मुसलमान बनानेका श्रेय भी फिरोज तुगलकको नहीं, मुहम्मद बिन तुगलकको है। मकबूलकी मृत्यु सन् १३७२-७३ में हुई। क्यामखां उससे कहीं अधिक समय तक जीवित रहा। उसकी मृत्यु सन् १४१९ में हुई। (देखें, शम्से सिराज अफीफकी तारीख फिरोज शाही)

पृष्ठ १५, पद्यांक १७७. क्यामखांनको नाम तब, राख्यो खांनु-जहान......

रासाके कथनानुसार क्यामखांने मुगलोंको हराया। इससे प्रसन्न होकर सुल्तान फिरोज़शाहने उसे 'खान जहां' की उपाधि दी। किन्तु यह कथन भी अशुद्ध है। फिरोज़शाहके समय मुगलोंसे युद्ध प्रायः बन्द ही रहा। वास्तवमें क्यामखानी क्यामखां तो जीवनके अन्त तक क्यामखां ही रहा। खां जहांकी उपाधि तो उस मकबूलको मिली, जिसका हम उपरोक्त टिप्पणमें निर्देश कर चुके हैं। मकबूल (खां जहां) की मृत्युके उपरान्त फिरोज़शाहने उसके पुत्रको खां जहांकी उपाधि दी।

रासाके रचयिताने यह भूल क्यों की इसका हमने अन्यत्र विशद रूपसे विचार किया है। यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि मकबूलको भी खां जहां बननेसे पूर्व किवांम-उल-मुल्ककी पदवी मिल चुकी थी। अतः एक किवामके कार्योंको अनेक सदियोंके बाद दूसरे प्रायः तत्सामयिक ही अन्य किवामके समक्ष लेना कोई बड़ी बात न थी। (देखें, ईलियट और डाउसन, ३, ३६८)।

पृष्ठ १६, पद्यांक १८०. जबहि भयौ बस कालकैं फेरोसाह सुतलान।
तब महमद महमूदनैं, फेरि जगुमें आन॥

वास्तवमें फिरोज़शाहके उत्तराधिकारियोंकी परम्परा निम्नलिखित थी—

१. गियासुद्दीन तुग़लक़ द्वितीय सन् १३८८
२. अबूबक तुग़लक़ १३८९
३. मुहम्मद तुग़लक़ १३९०
४. अलाउद्दीन सिकन्दर तुग़लक़ १३९४
५. नासिरुद्दीन महमूद तुग़लक़ १३९४
६. नसरत तुग़लक़ १३९६ (५ का प्रतिपक्षी)
७. महमूद तुग़लक़ १४०१ (पुनः स्थापित)

रासाके रचयिताने केवल मुहम्मद और महमूदके नाम दिये हैं। संभव है कि क्यामखांका मुख्य कार्यकाल १३८८ से १४१३ का यही अशांतिका समय रहा हो।

पृष्ठ १६, पद्यांक १८२. तब नसीरखां पुत्र उहिं, ठौर गद्दी ततकाल।......

नसीरखांसे मतलब संभवतः नासिरुद्दीन महमूदसे है। इसके लिये हमारा मल्लूखां पर टिप्पण देखें। यह कुछ समय तक दिल्लीका नाममात्र सुल्तान था।

पृष्ठ १६, पद्यांक १८५. मल्लूखां चेरौ हतो......

मल्लूखां दीपालपुरके सूबेदार सारंगखांका भाई और सुल्तान महमूद तुगलकके समयका प्रभावशाली सरदार था। अपने प्रतिद्वन्द्वी सादतखांसे विद्वेषके कारण जब सुल्तान महमूद बयाना जाता हुआ ग्वालियर पहुँचा तो मल्लूखांने एक षड्यंत्रकी रचना की। भेद खुलने पर मल्लूखांके अनेक साथी मारे गये; किन्तु स्वयं मल्लूखां बच निकला। दिल्ली पहुँच कर उसने मुकर्रबखां नामके अन्य प्रभावशाली सरदारके यहाँ आश्रय ग्रहण किया और उसकी सहायतासे केवल क्षमा ही नहीं, इकबालखांकी पदवी भी सुल्तानसे प्राप्त की। सादतखां भी मौन न रहा। कई अमीरोंको अपने पक्षमें कर फिरोजशाहके एक पुत्रको उसने नसरतशाहके नामसे गद्दीनशीन किया। जून सन् १३९८ में, मल्लूखां नसरतशाहसे जा मिला और कुरान पर शपथ खाकर उसे दिल्ली ले आया। दो दिनके बाद मल्लूखांने नसरतशाह पर धोखेसे हमला किया और उसे पहले फिरोजाबाद और फिर पानीपतकी तरफ भगा दिया। अपने शरणदाता मुकर्रबखांको भी इसी तरह उसने धोखा दिया, और उसे मार कर महमूद तुगलकके नाम पर, कुछ समय तक राज्य-शासन अपने अधिकारमें रखा।

इसी साल तिमूरने भारत पर आक्रमण किया। मल्लूखांको हराना उसके लिये बांये हाथका खेल था। सुल्तान महमूदने गुजरातमें शरण ली। मल्लूखां बरान (बुलन्दशहर) भाग गया। वहां भी उसने किसी अंशमें अपना आधिपत्य जमाया, और अपने कुछ प्रतिद्वन्द्वियोंको धोखेसे मारा। सन् १४०५ में दिल्ली लौट कर मल्लूखांने सुल्तान महमूदको वापिस बुलाया और उसे एक महलमें कैद कर उसके नामसे राज्य किया। एक साल बाद सुल्तान महमूदने कन्नौजमें अपना डेरा जमाया। सन् १४०४ में मल्लूखांने सय्यद खिज्रखां पर चढ़ाई की और पाकपट्टनके निकट युद्धमें मारा गया।

उसके जीवनकी उपर्युक्त घटनाओंसे स्पष्ट है कि मल्लूखां वास्तवमें पक्का बेईमान था। किन्तु रासाकारने यह बात माननेमें भूल की है कि उसने नासिर महमूद शाहका वध किया था। उसने केवल जहाँ तक संभव हुआ उसे कैद रखा। यह बहुत संभव है कि मल्लूखांकी बेईमानीसे रुष्ट होकर सन् १४०१ में क्यामखांने उसका विरोध किया हो। (मल्लूखांके विशेष विवरणके लिये देखें, तारीख मुबारकशाही, इलियट एण्ड डाउसन, खंड ४, पृष्ठ ३२-४०)।

पृष्ठ १९, पद्यांक २२२-२४. तक का वर्णन......

रासाने इस पृष्ठके वर्णनमें क्यामखांको प्रायः उत्तर भारतका सम्राट् बना दिया है। यह वर्णन स्पष्टतः अतिशयोक्ति-पूर्ण है।

पृष्ठ २०, पद्यांक २३७. खिदरखांनूंकों सौंपकै, दिली चले पतिसाह......

तिमूरने खिज्रखांको दिल्लीका राज सौंपा या नहीं इस विषयमें इतिहासकारोंमें मतभेद है। उस समयके इतिहास तारीख मुबारकशाहीमें केवल इतना लिखा है कि कुछ दिन बाद खिज्रखां जो तिमूरसे डर कर मेवातके पहाड़ोंमें भाग गया था, बहादुर नाहिए, मुबारकखां और जिरकखांके साथ तिमूरसे मिला। तिमूरने खिज्रखांके सिवाय सबको कैद कर लिया। तिमूरने खिज्रखांको मुल्तान और देपालपुरकी जागीर दी और उसे वहाँ भेज दिया। (इलियट और डाउसन, खंड ४, पृष्ठ ३५-३६)।

पृष्ठ २१, पद्यांक २४१.—

रासाका यह कथन ठीक नहीं है कि तिमूरके चले जाने पर खिज्रखांने दिल्ली पर अधिकार कर लिया और मल्लूखां दिल्लीको वापस लेनेके प्रयत्नमें मारा गया। वास्तविक घटनाके लिये मल्लूखां पर टिप्पण देखें।

पृष्ठ २१, पद्यांक २४२ से.—

रासाकारने एक नवीन खिदरखांकी असत्य कल्पना की है। एकको उसने दिल्लीमें तिमूरका अधिकारी बनाया है और दूसरेको मुल्तानका सूबेदार माना है। वास्तवमें मुल्तानके सूबेदारका ही नाम खिज्रखां था और कुछ इतिहासकारोंके मतानुसार तिमूरने हिन्दुस्तानमें अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया था। रासाने गल्तीसे दौलतखांको खिज्रखां पठानका नाम दिया है। सय्यद खिज्रखांका प्रतिद्वन्दी और क्यामखाँका शत्रु था। उसीसे खिज्रखांने दिल्ली छीनी। (इलियट और डाउसन, ४, ४५)।

पृष्ठ २४, पद्यांक २८२-८३.—

खिज्रखांने भाटियों, क्यामखानियों, सांखलों आदिकी सहायतासे राठौड़ वीर चूंडा पर चढ़ाई की। जब खिज्रखां मरोट पहुँचा तो भाटी राजकुमार चाचाने उसका अच्छा स्वागत किया। जांगलूके देवराज सांखलेने मुसलमानोंको सहायता दी। नागोरके दुर्गका द्वार स्वयं चूंडाने खोल दिया और वीरतापूर्वक युद्ध करता हुआ धराशायी हुआ। (देखें, छंद राउ जइतसी)।

पृष्ठ २५, पद्यांक २८६ से. क्यामखांका मुलतानके खिजरखांको सहायता देना......

मल्लूखांकी मृत्युके बाद दौलतखांके हाथमें राजकार्यकी बागडोर आई। महमूद नाममात्रके लिये सुल्तान बना रहा। सन् १४०७में खिज्रखांने दौलतखां पर आक्रमण किया। दौलतखांके सब साथी खिज्रखांसे जा मिले। इनमें क्यामखां भी रहा होगा। खिज्रखांने विजयी होने पर हिसारका जिला (सिक्क)क्यामखांको सौंप दिया। दिसम्बर १४०७ में सुल्तान महमूदने हिसार पर आक्रमण किया और क्यामखांने उससे संधि कर अपने पुत्रको सुल्तानके पास भेज दिया। रासाने इसी आक्रमणको हिसार पर खिज्रखां पठानका आक्रमण मान लेनेकी भूल की है। विजय भी दूसरे पक्षकी हुई; क्यामखांकी नहीं। सन् १४१२ में सुल्तान महमूदकी मृत्यु

हो गयी और दिल्लीके अमीरोंने दौलतखांको गद्दी पर बैठाया। रासाने फिर भूलसे यह मान लिया है कि अमीरोंने खिद्रखां पठानको गद्दी पर बैठाया। खिद्रखां पठानके स्थान पर दौलतखां करने पर, रासाकी बातें प्रायशः ठीक और उक्तिसंगत बैठ जाती हैं।

रासामें लिखा है कि खिद्रखां पठान (वास्तवमें संभवतः दौलतखां) के हिसार पर आक्रमणसे क्रुद्ध होकर क्यामखां मुल्तान पहुँचा और वहांके सूबेदार खिजरखांको दिल्ली पर चढ़ा लाया। शायद यह कथन ठीक ही है। कमसे कम यह तो निश्चित है कि क्यामखांने खिज्रखांका पक्ष लिया था। सन् १४११ में उसने खिज्रखांसे हिसारकी शिकदारी प्राप्त की थी। सन् १४१४ के मई मासमें जब खिज्रखां ने दिल्ली पर कब्जा किया तो उसने दौलतखांको किवामखां (क्यामखां) को सौंप कर हिसारके किलेमें कैद कर दिया। (देखें, इलियट और डाउसन, ४,४२–४५)।

पृष्ठ २६, पद्यांक ३०१. येक थोंस तो क्यामखां, ठाढे हुते सुभाइ।
खिजरखानु दीनो धका, परो नदीमें जाइ॥

ख़िज्रखांके हाथ क्यामखांकी मृत्युका तारीख-मुबारकशाहीमें निम्नलिखित वर्णन है–

"सन् १४१९ – खिज्रखां बदाऊंकी तरफ बढ़ा और कस्बा पटियालीके पास उसने गंगाको पार किया। जब (बदाऊंके अमीर) महाबतखांने यह सुना तो उसका हृदय धकसे रह गया, और उसने घेरा सहनेकी तैयारी की। खिज्रखां ६ महीने तक घेरा डाले रहा। जब वह दुर्ग को हस्तगत करने वाला हो था, उसे मालूम हुआ कि दिवंगत सुल्तान महमूदके कुछ अमीरोंने उसके विरुद्ध षड्यन्त्रकी रचना की है...इनके अन्तर्गत किवाम (क्याम) खां इख्त्यारखां थे। ज्योंही खिज्रखांको यह मालूम हुआ उसने घेरा उठा लिया, और दिल्लीकी तरफ कूच किया। रास्तेमें गंगाके किनारे २० जुमादल अव्वल, ८२२ हिज्री सन्के दिन किवामखां (क्यामखां) इख्त्यारखां और सुलतान महमूदके दूसरे अफसरोंको पकड़ कर उसने राज्य-द्रोहके अपराधमें मरवा डाला और फिर स्वयं दिल्ली वापस गया। (तारीख मुबारकशाही, पृष्ठ ५१, इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४)।

रासाके वर्णनानुसार क्यामखां निरपराध था। केवल सन्देह और व्यर्थके भयके वशीभूत होकर ख़िज्रखांने उसे मार डाला।

पृष्ठ २६, पद्यांक ३०४. जीयो बरस पचांनुंवै क्यामखानु चहुवांन।......

क्यामखांनुंका ९५ वर्षकी आयुमें मरना कई कारणोंसे असंगतपूर्ण प्रतीत होता है—

(१) षड्यन्त्रका नेतृत्व ही नहीं, सेनामें ख़िज्रखांके साथमें रहना भी, सिद्ध करता है कि क्यामखां उस समय अतिवृद्ध न रहा होगा। ९५ वर्षका बुड्ढा सेनाके साथ जानेका क्या साहस करेगा?

(२) रासाके अनुसार फ़िरोज़शाह करमचंद (क्यामखां) को उस समय पकड़ ले गया जब वह हिसार आया। हिसारकी स्थापना सन् १३५१ के बादकी है। करमचंद उस समय नादान बालक था। मृत्युके समय ९५ वर्षकी आयु माननेसे वह फ़िरोज़शाहके राज्यके प्रारंभमें भी सत्ताइस या अट्ठाइस सालका होता।

(३) क्यामखांका कार्यकाल विशेषतः फ़िरोज़शाहकी मृत्युके बाद है। रासा वाली आयु मानने पर हमें यह भी मानना होगा कि क्यामखांके मुख्य युद्ध आदि उसके ६४ वर्षके हो जानेके बाद हुए।

(४) रासाके अनुसार क्यामखांका पुत्र ताजखां बहलोलखां लोदीके राज्यमें वर्त्तमान था। बहलोल सन् १४५१ में गद्दी पर बैठा। ताजखांको उस समय ६० सालका मानें तो उसका जन्म सन् १३९१ में होना चाहिये। रासा द्वारा दी गई क्यामखांकी आयु स्वीकृत करने पर हमें यह मानना पड़ेगा कि क्यामखांके सब से बड़े पुत्रका जन्म उस समय हुआ जब क्यामखां ६७ वर्षका हो चुका था।

पृष्ठ २७, पद्यांक ३११. खिजरखानुपै ना गये, रह्यौ बुलाइ बुलाइ।
बैठे रहे हिसारमैं कर्‌यो जूहार न जाइ॥

रासाके इस कथनके अनुसार कायमखांके पुत्रोंने हिसारको अपने अधिकारमें रखा; किन्तु तारीख मुबारकशाहीसे स्पष्ट है कि अपनी मृत्युसे कुछ पूर्व ख़िज्रखांने हांसी और हिसार मलिक रजब नादिरको दिये थे। ख़िज्रखांके पुत्र मुबारकशाहने हिसार अपने सम्बन्धी मलिक-उशूशर्क मलिक बदाको सौंप दिया।

पृष्ठ २७, पद्यांक ३१३-१५.—

रासाने सय्यद वंशकी सूची इस प्रकार दी है–

(१) खिज्रखां
(२) मुबारक
(३) मुहम्मद फरीद
(४) अलाउद्दीन
(५) अमानतखां

इनमें तीसरे सुल्तानका नाम अशुद्ध है। वास्तवमें यह नाम न मुहम्मद था, और न फरीद ही। ठीक नाम मुहम्मद शाह बिन फरीदशाह है। रासाने पिता और पुत्रके नाम मिला दिये हैं। फरीदशाह सुल्तान मुबारकशाहका पुत्र था। अमानतखांके राज्यका वर्णन हमें मुस्लिम इतिहासमें नहीं मिलता। अलाउद्दीनके समयमें ही दिल्लीका राज्य सय्यदोंके हाथसे निकल गया। केवल बदाऊंका जिला ले कर उसने दिल्लीकी बागडोर अपने सामन्त बहलोलशाहके हाथमें सौंप दी।

पृष्ठ २७, पद्याङ्क ३१७. ढोसी ऊपर अखन है......

अखन शायद इख्त्यारखांका नाम है। (देखिये, अग्रिम ३१८ वां पद्य)।

पृष्ठ २८, पद्यांक ३३१. ताजखांनुं महमदखां, दोउ रहे हिसार।
ठौर पिता राखी भले......॥

रासाके इस पद्यमें फिर क्यामखानियोंके हिसार पर अधिकारका वर्णन किया गया है।

किंतु जैसा ऊपर निर्देश किया जा चुका है, कुछ समयके लिये तो हिसार अवश्य क्यामखानियोंके हाथसे निकल गया था, और इसी कारण सम्भवतः ताजखां और महमूदखांको कुछ समय तक नागोरीखां (फिरोजखां) के यहाँ आश्रय ग्रहण करना पड़ा।

पृष्ठ २९, पद्यांक ३४० से. राणा मोकलसे नागोरके खां और क्यामखानी भाइयोंका युद्ध......

रासाने मेवाड़के स्वामी राणा मोकल और नागोरीखांका अच्छा वर्णन दिया है। राणाकी विजय इतिहास द्वारा समर्थित है। क्यामखानियोंकी राणा पर विजय संभवतः कल्पित है।

सम्वत् १४८५ (सन् १४२९) के शृङ्गी ऋषिके शिलालेखमें इस युद्धका प्रथम उल्लेख है। क्यामखानी भाई सन् १४१९ में किवामखां (क्यामखां) की मृत्युके बाद ही हिसार छोड़ कर नागोर पहुँचे होंगे। वास्तवमें उन्होंने यदि इस युद्धमें भाग लिया हो तो हम युद्धको सन् १४१९ और १४२९ के बीचमें रख सकते हैं। शिलालेखमें राणा मोकलके दो प्रतिपक्षियोंका वर्णन है—एक फिरोजखांका और दूसरा महमद का। फिरोजखां नागोरका स्वामी था। क्या यह संभव नहीं कि महम्मद उसका मित्र एवं अनुगामी क्यामखानी महमूद हो?

पृष्ठ २९, पद्याङ्क ३४१. पहलै तौ गोली चली, और छुटी हथनाल।......

गोलियोंका भारतमें प्रयोग शायद मुगलकालसे आरंभ हुआ। यह उससे पूर्वकी बात है।

पृष्ठ ३१, पद्यांक ३६५.—

रासाके अनुसार नागोरीखांसे सर्वथा हारने पर ताजखां वापिस हिसार पहुँच गया। यह बात सर्वथा असंभव नहीं है। क्योंकि सय्यद् वंशके परतर सुल्तान बहुत निर्बल थे। किन्तु यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण है कि केवल नागोरका खां ही उससे न डरता था; निरवाण, चौहान, तंवर, कछवाहे एवं अनेक अन्य जमींदार भी उसे कर देते थे और उसने खेतड़ी, खरकरा, रेवासा, बौहाना, पाटन, गबरगढ़ आदिको लूट लिया था।

पृष्ठ ३१, पद्यांक ३७४. ताजखांनुं जब चलि गये, फतिहखानु सिरमौर।
बैठौ कोट हिसारमैं, भलै पिताकी ठौर।

फतहखांके राज्यका हिसारमें आरम्भ होना भी संभव है। किन्तु यह अवश्य ध्यानमें रहे कि फतहपुरकी स्थापनासे पूर्व बहलोल लोदीने इस पर अधिकार कर लिया था। सय्यद सुल्तान अलाउद्दीनके समय लोदी सरहिन्द, स...सन्नाम, हिसार और पानीपतके स्वामी थे। (तारीखे खांजहां लोदी, खंड ५)।

पृष्ठ ३२, पद्यांक ३७९–८०.—

सम्वत् १५०८ में फतहपुरकी स्थापना हुई। उस समय चैत्र शुक्लकी पंचमी थी। हिज्री सम्वत्की यही तिथि सन् ८५७ तारीख २० सफ़रके रूपमें दी हुई है। इन दो तिथियोंमेंसे हमें एकको अशुद्ध मानना होगा। सन् सत्तावन आठसेके स्थान पर सन् पचावन आठसे होने पर यह अन्तर दूर हो सकता है। इसी सालमें बहलोल भी दिल्लीके सिंहासन पर बैठा।

पृष्ठ ३२, पद्यांक ३८२-८३.—

पल्लू, सहेवा, भादरा, मारंग आदि फतहपुरसे बहुत दूर नहीं है। संभव है कि वहाँ क्यामखानियोंने अपना आधिपत्य स्थापित किया हो।

पातसाहकी चोलसौं रहि ना सके हिसार।......

पातसाहसे मतलब बहलोलसे है। किन्तु जैसा ऊपर बताया जा चुका है बादशाह होनेसे पूर्व ही बहलोलने हिसार ले लिया था।

पृष्ठ ३३, पद्यांक ३८६-८७.—बहलोलका रणथंभोर पर आक्रमण और फतहखांका जुहार करना...

तबकाते अकबरीके अनुसार बहलोलने सन् ८८६ हिज्री अर्थात् सन् १४८२ ई० में रणथंभोर पर आक्रमण किया। फतहखांने सचमुच इसमें भाग लिया हो तो इससे कायमखानियोंके इतिहासमें निश्चित तिथि मिलती है। हम इसके आधार पर कह सकते हैं कि फतहखांने सन् १४५१ से कमसे कम सन् १४८२ ई. तक राज्य किया।

पृष्ठ ३३, पद्यांक ३९३. मांडूका सुल्तान हिसामद्दीन......

मांडू मालवा राज्यकी राजधानी था। वहाँ हिसामुद्दीन नामका कोई सुल्तान न था। बहलोलके समय ख़लजी महमूद प्रथम मालवेकी गद्दी पर वर्त्तमान था। बहलोलका इस सुल्तानसे दिल्लीके सुल्तान मुहम्मदके समय सन् १४४१ में सामना हुआ। महमूद जब दिल्लीके सुल्तानसे सन्धि कर वापिस जा रहा था, बहलोलने उस पर आक्रमण किया और किसी अंशमें विजय प्राप्त की।

हिसामखां नामके एक व्यक्तिका नाम भी इस समय सुननेमें आता है। वह दिल्लीका वजीर और सुल्तान मुहम्मदका परम हितैषी था। बहलोलने मुहम्मदकी सहायता इस शर्त्त पर की कि हासिमखां कत्ल कर दिया जायगा। (तारीखे खां जहां लोदी, इलियट और डाउसन, खंड ५, पृष्ठ ७२)।

पृष्ठ ३४, पद्याङ्क ४०६. नारनोलते अखनकी, आई यहै पुकार।......

अखन इख्तयारखांका ही नाम है। देखो पृष्ठ २७ और इस वर्णनका पद्य ३१८।

पृष्ठ ३५, पद्याङ्क ४१४. फतहखांका कांधलको हराना और प्रजाको मारना......

हार शायद क्यामखानियोंकी हुई न कि बीकानेरके संस्थापक बीका के चाचा कांधलकी। इस युद्धमें बहुगुनके मारे जानेसे फतहखां बहुत नाराज हुआ। (देखिये, पृष्ठ ११९ पर का टिप्पण)। अजा सांखला शायद सांगाका साला रहा हो। ख्यातोंके अनुसार सांगाने २८ विवाह किये थे। इनमें संभवतः एक सांखली रानी भी रही हो।

पृष्ठ ३५, पद्याङ्क ४११. मुल्कीखां किरांनाका वध......

रासाने युद्धस्थलका नाम सरसा दिया है। इतिहासमें मुल्कीखां किरानीका नाम अप्राप्य है। किन्तु जौनपुरके सुल्तान मुहम्मदने सन् १४५२में दिल्ली पर आक्रमणकी इच्छासे

सरसेमें अवश्य मुकाम किया था, वहां बहलोलके पक्षसे फतहखांका उससे युद्ध करना असम्भव नहीं है। परन्तु क्यामखानियोंने सन् १४८२ में ही लोदियोंसे मेल किया हो (देखो, पृष्ठ ११७ का टिप्पण) तो ऐसा अनुमान अवश्य असंगत होगा।

पृष्ठ ३६, पद्याङ्क ४२४. फतहखांका आमेर और भिवानी पर आक्रमण......

इस वर्णनमें कितनी सत्यता है और कितनी अतिशयोक्ति, यह कहना कठिन है।

पृष्ठ ३६, पद्याङ्क ४३३. कांधिल बहु गुन हम्यौ हो, रिस राखत मन मांहि।......

रासाके पिछले वर्णनमें कांधल की पराजयका वर्णन है, (देखें, पृष्ठ ११७ का टिप्पण) परन्तु इस पंक्तिसे प्रतीत होता है कि उसने क्यामखांनियोंको हराया था।

पृष्ठ ३७, पद्याङ्क ४३६. झुंझनूके शम्सखांका जोधाकी पुत्रीसे विवाह......

यह कथन असत्य प्रतीत होता है। जोधपुर राज्यके संस्थापक और महाराणा कुम्भासे लोहा लेने वाला जोधा क्यामखानियोंसे न कमजोर था और न दबा हुआ जो उन्हें अपनी पुत्रीका डोला भेजता।

पृष्ठ ३७, पद्याङ्क ४४५. चिमनको हंन लीनो नीसांन......

चिमन न जाने कौन था। रासाने इससे पूर्व फतहखांकी जीवन-घटनाओंका वर्णन करते हुए इसका नाम नहीं दिया है। इस श्लाघापूर्ण सवैयेमें जादो (संभवतः भाटियों) को भी फतहखांके परास्त शत्रुओंमें सम्मिलित कर दिया गया है। जान कवि ही तो ठहरा, अत्युक्तिका उसे अधिकार है।

पृष्ठ ३८, पद्याङ्क ४४६. दिल्लीके पतिसाहकौं, बदै न खानु जलाल......

यह अतिशयोक्ति प्रतीत होती है। किन्तु झूंझनूके बारेमें सुलतान बहलोल और जमालखांमें वैमनस्य असंभव प्रतीत नहीं होता। (देखो, पृष्ठ ३९)

पृष्ठ ३९, पद्याङ्क ४५८-४५९. छापौरी और आमेर पर हमले......

आम्बेर फतहपुरसे काफी दूर है। शायद उस राज्यके किसी भूभाग पर आक्रमण किया गया हो।

पृष्ठ ३९, पद्याङ्क ४६६-६७. बीका और बीदाका भानजा मुबारकशाह......

बीदा बीकानेर राज्यके संस्थापक बीकाका छोटा भाई और द्रोणपुर, छापर आदिका स्वामी था। मुबारकशाहसे इन भाइयोंके सम्बन्धके विषयमें पृष्ठ ११९ का दूसरा टिप्पण देखें।

पृष्ठ ४०, पद्याङ्क ४७७-७८. बीदाका फतहपुर पर आक्रमण......

बीकानेरकी ख्यातोंमें बीदाके इस आक्रमणका वर्णन नहीं मिलता। 'छन्द राउ जइतसीरउ' में अवश्य यह लिखा है कि बीकाने फतहपुर और झूंझनूको अधीन किया और उन्हें बांहका सहारा दे कर कायम रखा (छंद ४६)।

पृष्ठ ४०, पद्याङ्क ४७८ से. बीदाका सहायक दिलावरखां......

इसका उल्लेख "छंद राउ जइतसीरउ" में भी है। यह नाहड और नरहडका स्वामी था। बीकानेर राज्यके संस्थापक वीर बीकाने उसे इस प्रदेशसे निकाल दिया (छंद ४५)

पृष्ठ ४२, पद्याङ्क ४९९. बीका ढोसी गयो हो उतते आयो भाजि......

बीकाकी अनेक विजयोंका सूजा नगरजोतरचित, 'छंद राउ जइतसीरउ' में वर्णन है। इसने दिल्ली तक धावा किया था (छंद ४६)। यह संभव है कि ढोसीके आसपास उसे विशेष सफलता न मिली हो।

पृष्ठ ४३, पद्याङ्क ५१० से. लूणकरणका ढोसी पर आक्रमण......

बीकानेरके इतिहाससे सभी को ज्ञात है कि ढोसी पर आक्रमण बीकाके पुत्र लूणकरणके जीवनकी अंतिम घटना थी। 'छंद राउ जइतसीरउ'के अनुसार क्यामखानियोंने लूणकरणकी अधीनतामें अपनी फौज भेजी थी (छंद ८०)। यह वर्णन ठीक हो तो हमें मानना पड़ेगा कि बीदावतोंकी तरह लड़ाईके समय इन्होंने राव जैतसीका साथ छोड़ दिया था।

क्यामखानियों और राठौड़ोंका वैर काफी पुराना था। रासासे हमें ज्ञात है कि राव बीकाके चाचा रावत थे। कांधलने इन्हें खूब दुःख दिया था और उनकी बहुतसी पैतृक भूमि पर उसने अधिकार कर लिया। रावके विषयमें यह प्रसिद्ध है कि उसने फतहपुरके बहुतसे गाँव जीत लिये (देखिये, दयालदासकी ख्यात; 'सादूल प्राच्य ग्रन्थमाला', पृष्ठ २८)। स्वयं रासाने दौलतखांकी बड़ाई करते समय केवल इतना ही लिखा है कि न उसने दूसरोंकी भूमि दबाई और न दूसरोंको अपनी भूमि दबाने दी (पृष्ठ ४२, पद्य ४९७)। एक गाँवकी जीतको एक प्रान्तकी जीत लिखने वाला कवि जब अपने एक पूर्वजकी स्तुतिमें केवल इतना कहनेको विवश हो तो यह सिद्ध है कि दौलतखां निर्बल शासक था और उसके समय कायमखानियोंको संभवतः अपने राज्यका कुछ भाग छोड़ना पड़ा।

पृष्ठ ४३, पद्याङ्क ५११. तुरक मान कीनी मदत, जाँनत सकल जहांन......

ढोसीके स्वामी पठान अवश्य थे, किन्तु यह बताना कठिन है कि उनके सहायक तुर्कमान किस स्थानके अधिकारी थे।

पृष्ठ ४४, पद्याङ्क ५१८. बाबरका दौलतखांसे मिलना......

यह मनगढंत कथा है। हाँ, इससे इतना अवश्य प्रतीत होता है कि क्यामखानी गोवधके विरोधी थे; वे सर्वथा अपने हिन्दू संस्कारोंको न छोड़ सके थे।

पृष्ठ ४४, पद्याङ्क ५२५. अलवरमें हसनखां......

हसनखां मेवाती अपने समयका प्रसिद्ध वीर पुरुष था। गुजरातके प्रसिद्ध एवं प्रतापशाली सुल्तान बहादुरशाहको इसने शरण दी थी। बाबरके प्रबल विरोधियोंमें यह एक था और इसका प्रभाव इतना अधिक था कि बाबरने इसे विद्रोहियोंकी जड़ लिखा है। (तुजके

बाबरी, इलियट और डाउसन, खंड ५, पृष्ठ २६३)। खानवाके युद्धमें इसने राणा सांगाका साथ दिया था। लगभग चौदहवीं शताब्दीके आरम्भसे उसके पूर्वज मेवातमें राज्य करते आये थे, और उन्होंने अंशतः ही दिल्लीके सुल्तानोंका प्रभुत्व स्वीकार किया था। बाबरने दिल्लीकी विजयके कुछ समय बाद मेवात पर आक्रमण किया। हसनखांने कुछ विरोधके बाद अधीनता स्वीकार की। बाबरने अलवरका दुर्ग और तिजारा अपने अफसरोंको सौंपे और अलवरका खजाना हुमायूंको दिया, किन्तु हसनखांको भी उसने नाराज न किया। मेवातके बदले बाबरने कई लाखकी एक अन्य जागीर उसे दी। (वही, पृष्ठ २७३–४)।

पृष्ठ ४५, पद्याङ्क ५३२. निरबांन......

यह चौहानोंकी प्रसिद्ध शाखा है। इस समय नागौरका खां मुहम्मद प्रतापी था। शायद क्यामखानी उसकी तरफसे लड़े हों।

पृष्ठ ४५, पद्याङ्क ५३६. मुहब्बत सारखानी......

इतिहाससे इसका कुछ पता नहीं चलता। शेरशाहके सामन्तोंमें अनेक सरवानी थे। शायद उनमेंसे किसीसे मतलब हो।

पृष्ठ ४७, पद्याङ्क ५७३. झूंझनू......

झूंझनूमें क्यामखानियोंकी एक शाखा राज्य करती थी। रासामें इसका बार बार जिक्र है। उसकी वंशावली इस प्रकार है :—
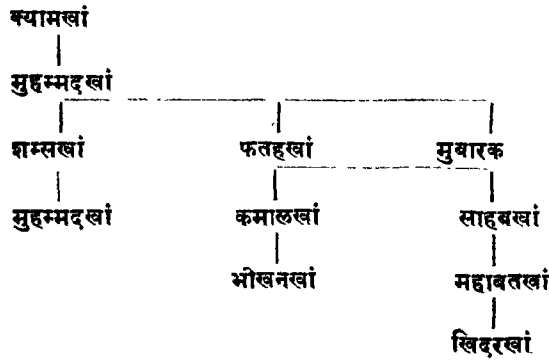
पृष्ठ ४८, पद्यांक ५८१. नाहरखांसे बीकानेरके राव लूणकरणकी बेटीका विवाह......

रासाने लिखा है कि अपने जीते ही लूणकरणने अपनी बेटी नाहरखांसे विवाहनेका वचन दिया था। जो राजपूत क्यामखानियोंसे कर मांगता और शायद लेता भी था, वह उन्हें बेटी देनेका वचन दे, यह संभव प्रतीत नहीं होता।

पृष्ठ ४९, पद्यांक ५८८. नाहरखांका महल चिनवाना......

इसका सम्वत् १५९३ भादवा सुदी अष्टमी है। यह क्यामखानी इतिहासकी पुनः एक

निश्चित तिथि है। इससे लगभग चार साल बाद शेरशाह दिल्लीका बादशाह हुआ। रासाके अनुसार नाहरखांने उसकी अच्छी सेवा की।

पृष्ठ ५०, पद्यांक ५९०. नागोरी खां और राना......

रासामें राना और नागोरीखां इन दोनोंके नाम नहीं हैं। इसलिए यह घटना संदिग्ध है। इस समयके आसपास हजखांका अजमेर और नागोर दोनों पर अधिकार था, और उसे उदयपुरके महाराणा उदयसिंहसे युद्ध भी करना पड़ा था। किन्तु इस घटना का समय सन् १५५७ ई. होनेके कारण गांगा और जैतसी आदि कई राजा और सरदार जिनके नाम रासाने गिनाये हैं, वास्तवमें उसमें वर्तमान नहीं हो सकते। उनका देहान्त इससे पूर्व ही हो चुका था।

पृष्ठ ५४, पद्यांक ६४२. फदनखांन......।

मुगल मनसबदारोंमें इसका नाम नहीं मिलता। अकबरको इसने किस सालमें बेटी दी यह भी मालूम नहीं होता। किन्तु घटना रासाकी रचनासे अधिक दूर नहीं है, अतः इसकी सत्यतामें सन्देह करनेकी आवश्यकता नहीं। अनेक सामन्तों और राजाओंको वैवाहिक सम्बन्धों द्वारा अपनी तरफ करना अकबरको नीतिका एक अंग था।

पृष्ठ ५४, पद्यांक ६४२. रायसाल की बांही......।

यह जातिका शेखावत था। इसके दादा रायमलके यहाँ शेरशाहके पिता हसनखां सूरने कुछ दिन नौकरी की थी। रायसाल अकबरी दरबारमें जनानखाने पर तैनात था। इसकी जहाँगीरके समय दक्षिणमें मृत्यु हुई। अच्छा वीर पुरुष था। तबकाते अकबरीके अनुसार इसका मनसब २००० था। फदनखांसे यह कहीं अधिक प्रभावशाली रहा होगा। इसलिये रासाका यह कथन कि फदनखांकी जमानत पर बादशाहने रायसालको नौकर रखा था, संगत प्रतीत नहीं होता।

पृष्ठ ५४, पद्यांक ६४३. बीदावत......।

ये राव बीकाके भाई बीदाके वंशज थे।

पृष्ठ ५७, पद्यांक ६७४. ताजखांका अलवरसे रेवाड़ी पर आक्रमण......।

अकबरके राज्यमें ३४वें सालमें शेखावतोंने मेवातसे रेवाड़ी तक गड़बड़ की। ३५वें सालमें अकबरने शाहकुलीको उसे दबानेके लिए भेजा। संभव है ताजखां उस समय सेनाके साथ रहा हो।

पृष्ठ ८२. पद्यांक ६६५, दयो फतिहपुर छत्रपति लिखि अपनौ फुरमांन......।

अग्रिम पंक्तियोंसे प्रतीत होता है कि फतेहपुर कुछ समयके लिए क्यामखानियोंके हाथसे जाता रहा था।

पृष्ठ ५८, पद्यांक ६८१. अलिफखांका पहाड़ पर आक्रमण......।

कछवाहा जगतसिंहकी अधीनतामें यह अकबरके ४२वें राजवर्ष अर्थात् सन् १५९३ ई. में

हुआ। राजा बसु, तिलोकचन्द आदिने अकबरकी अधीनता स्वीकार की। (देखें, अकबरनामा; तृतीय खंड, पृ. १०८१ और ११९३)।

पृष्ठ ५८, पद्यांक ६८५. सलीमका राणा पर आक्रमण......।

सलीमका राणा पर यह आक्रमण सन् १५९९ ई. में हुआ। राजा मानसिंह, शाहकुली आदि अनेक सेनापति उसके साथ गये। इस समय अलिफखांका पहली बार अकबरनामेमें वर्णन मिलता है। उसमें लिखा है:—"जब शाहजादा सलीम राणाको दंड देने के लिए भेजा गया, तब अपनी आरामपसन्दगी, मद्यप्रियता और बुरी संगतीके कारण कई दिन तक अजमेरमें ठहर कर वह उदयपुरकी ओर चला। राणाने दूसरी तरफसे निकल कर मालपुरा तथा अन्य उपजाऊ इलाकोंको लूट लिया। इस पर शाहजादेने माधोसिंहको सेनाके साथ उधर भेजा। राणा पहाड़ोंमें लौट गया और लौटते हुए उसने रातके समय शाही फौज पर हमला किया। राजकुली, लालबेग, मुबारिकबेग और आलिफखां टिके रहे, जिससे राणा लौट गया।" (अकबरनामेका अंग्रेजी अनुवाद; खंड ३, पृ. ११९५)।

पृष्ठ ५९, पद्यांक ६९१. ऊँटाले हो समसखां, उत आयो कर साथ......

डाक्टर गौरीशंकर हीराचंद ओझाने वीरविनोदके आधार पर लिखा है कि सलीमने मेवाड़में प्रवेश कर मांडल, मोही, मदारिया, कोसीथल, बागोर, ऊँटाला आदि स्थानोंमें थाने बिठला दिये। ऊँटालेके गढ़में उसने बड़े सैन्यके साथ क्यामखानी शम्सखांको नियत किया।

ऊँटालेका युद्ध मेवाड़के इतिहासमें विशेष प्रसिद्धि रखता है। चूंडावत और शक्तावत दोनों ही हरावलमें रहना चाहते थे। राणा अमरसिंहने आज्ञा दी कि हरावल उसीकी रहेगी जो दुर्गमें प्रवेश पहले करेगा। शक्तावत बल्लूने किस प्रकार अपने शरीरको भालोंसे छिदवा कर हाथियों द्वारा दरवाजा तुड़वाया और चूंडावत किस प्रकार सीढ़ियों द्वारा किले पर चढ़े यह पठनीय कथा है। जैतसिंह चूंडावत घायल हो कर नीचे गिर पड़ा। गिरते ही उसने अपने साथियोंको आज्ञा दी कि वे उसका सिर काट कर किलेमें फेंक दें। इस प्रकार चूंडावत ही सर्व प्रथम किलेमें पहुंच पाये, और हरावल उन्हींकी रही।

राजप्रशस्ति महाकाव्यमें लिखा है कि--दिल्लीपतिका भृत्यवर क्यामखां इस युद्धमें मारा गया। क्यामखांसे आपाततः क्यामखानी शम्सका अर्थ लिया जा सकता है। किन्तु शम्सखां युद्धमें मारा नहीं गया। संभवतः काव्यका क्यामखां शुजातखांका पोता क्यामखां हो, जिसे तरबियतखांकी उपाधि मिली थी, और जो अकबरके राज्यके पांचवे वर्षमें अकबरका फौजदार बनाया गया।

पृष्ठ ५९, पद्यांक ६९६. राइ मनोहर......

राय मनोहर लूणकरण शेखावतका पुत्र था। अकबरके समय मेवाड़, गुजरात आदिके युद्धोंमें इसने अच्छी ख्याति प्राप्त की थी। जहांगीरके राज्यके दूसरे वर्षमें, यह १५०० जात ६००

सवारका मनसबदार नियुक्त किया गया। इसके नौ वर्ष बाद दक्षिणमें उसकी मृत्यु हुई। राय मनोहर फारसीका अच्छा कवि था।

पृष्ठ ५९, पद्यांक ६९७. दलपत बीकानेरीये......।

यह राजा रायसिंहके बाद बीकानेरकी गद्दी पर बैठा। सन् १६१२ ई. में जहांगीरने उससे अप्रसन्न हो कर सूरसिंहको बीकानेरकी गद्दी दी। दलपतसिंहने हिसारके आसपास विद्रोहका झंडा खड़ा किया।

पृष्ठ ५९, पद्यांक ६९८. ज्यावदी......।

संभवतः जहांगीरके मनसबदार जियाउद्दीन काजवानीसे मतलब है। जहांगीरने उसे एक हजारी मनसबदार बनाया और तबेलेके हिसाब-किताब पर नियुक्त किया। (देखें, तुजुके जहांगीरी, अंग्रेजी अनुवाद, पृ. २५)। दयालदासने अपनी ख्यातमें इसका नाम जावदीन दिया है (पृ.१४४-६)।

पृष्ठ ५९, पद्यांक ६९९. शेख कबीर......।

यह शेख सलीम चिश्तीका वंशज था। इसकी दूसरी उपाधियां शुजातखां और रुस्तमे जमा थीं। यह मऊका रहने वाला था। जहांगीरने गद्दी पर बैठनेके समय इसे १००० का मनसबदार बनाया। बंगालमें उसने बड़ी बहादुरीसे बादशाही सेवा की। इसकी वीरताके कारण ही बादशाहने उसे रुस्तमे जमाकी उपाधि दी थी।

पृष्ठ ६१, पद्यांक ७१७. फिर पठयो पतिसाह पैं......।

तुजुके जहांगीरीमें दलपतको पकड़ कर भेजनेका श्रेय खोरतके फौजदार हाशिमको दिया गया है।

पृष्ठ ६२, पद्यांक ७२०. दक्षिणमें अलिफखां......।

यह वास्तवमें दक्षिण पर खांजहांके आक्रमणके समयका वर्णन है। मलिक अम्बर (अग्रिम टिप्पण देखें) के अहमदनगर राज्यमें अत्यन्त प्रबल हो जाने पर जहांगीरने १६०८ में अब्दु-र्रहीम खानखानाको उसके विरुद्ध भेजा। खानखाना असफल रहा। अहमदनगरका दुर्ग भी मुगलोंके हाथसे निकल गया। नाम मात्रके लिये इससे कुछ पूर्व जहांगीर शाहजादे परवेज़को दक्षिणका सिपहसालार नियुक्त कर चुका था। उसकी मददके लिये खांजहां लोदीकी अध्यक्षतामें बादशाहाने एक बहुत बड़ी फौज भेजी जिसमें अलिफखां भी सम्मिलित था। सन् १६११ में यह निश्चय हुआ कि अब्दुल्ला गुजरातसे नासिक और त्र्यम्बककी तरफ बढ़े, और बरार एवं खान-देशसे खांजहां, मानसिंह आदि उसे सहायता प्रदान करें। किन्तु अब्दुल्लाने बिना परवाह किये एकदम हमला बोल दिया। दौलताबाद पहुँचते पहुँचते उसकी बहुत सी फौज क्षीण हो गई। बाकी फौजका बहुत सा अंश बागलाना पहुँचनेसे पूर्व नष्ट हो गया। अब्दुल्लाको हारते देख कर बाकी शाही फौजें भी पीछेकी तरफ लौट पड़ी। रासा कारने ठीक ही लिखा है :–

अब्दुल्लहके विचरते, विचर भई दल मांहि ।
आये सब रहानपुर, कहूँ रह्यो को नांहि ॥

पृष्ठ ६२, पद्यांक ७३५. अंबर आयौ साजि दल, गनती आवै नांहि......।

अंबरका अर्थ यहां मलिक अंबर है। ऐसे राजनीतिज्ञ दक्षिणने कम ही उत्पन्न किये हैं। शासन-प्रबन्ध एवं सैन्य-संचालन इन दोनोंमें यह निपुण था। खानखाना, खाने जहां आदिको परास्त करना इसी वीर हब्सीका कार्य था। अहमदनगरके राजाकी इसने अच्छी सेवा की। सन् १६२६ में इसकी मृत्यु हुई। इसके विस्तृत वर्णनके लिये जहांगीरका कोई इतिहास देखें।

पृष्ठ ६२, पद्यांक ७३३. अब्दुल्लह...... ।

अब्दुल्ला जहाँगीरका प्रसिद्ध सेनापति था। मेवाड़में इसने अनेक विजय प्राप्त की। इससे प्रसन्न हो कर जहाँगीरने इसे फिरोज जंगकी उपाधि दी। मेवाड़से यह गुजरात भेजा गया।

पृष्ठ ६४, पद्यांक ७६०. सगरपै......।

सगर महाराणा अमरसिंह प्रथमका चाचा था। शाहजादे परवेजको मेवाड़ पर भेजते समय बादशाह जहांगीरने इसे मेवाड़के राणाकी उपाधि दी और मुगलों द्वारा अधिकृत मेवाड़का अधिकांश प्रदेश इसे दे दिया। मेवाड़से संधि होने पर जहाँगीरने इससे राणाकी उपाधि ले कर रावतकी उपाधि दी। सन् १६१७ ई० में इसका देहान्त हुआ।

पृष्ठ ६५, पद्यांक ७६९. खुसरो बीतर बीतखां......।

पद्यांक ८०० के टिप्पणका अन्तिम भाग देखें। यह इसका सामान्य उदाहरण है कि जहाँगीर-के राज्यमें दिल्लीके निकट भी गड़बड़ थी।

पृष्ठ ६७, पद्यांक ७९८. राजा विक्रमजीतकै......।

यह राजकुमार खुर्रमका अत्यन्त विश्वासपात्र था। सन् १६१८ में जहाँगीरकी आज्ञासे सोरठके जामको इसने दिल्लीके अधीन किया। सन् १६१९ में शाहजादे शाहजहांकी तरफसे यह कांगड़े पर भेजा गया। इसीके साथ अलिफखां भी रहा होगा। दक्षिणमें अम्बरके विरुद्ध शाहजहाँकी सफलताका पर्याप्त श्रेय विक्रमजीतको है। शाहजहाँके विद्रोही होने पर विक्रमजीतने आगरेको लूटा। दिल्लीके निकट बिलोचपुर नामके स्थान पर शाहजहांके पक्षमें शाही सेनाके विरुद्ध युद्ध करता हुआ यह मारा गया। इसका असली नाम सुन्दर था।

पृष्ठ ६७, पद्यांक ८००. सूरजमल......।

यह मऊ नूरपुरके राजा वसुका पुत्र था। सन् १६१४ में जब मुर्तजाखांने कांगड़ा लेनेका प्रयत्न किया तो यह भी शाही फौजदारोंमें था। शाही विफलतामें सूरजमलका षड्यन्त्र भी शायद कुछ कारण रहा हो। इसके विरुद्ध शिकायतें होने पर भी बादशाहने इसे क्षमा कर दिया। दक्षिणमें शाहजादा शाहजहांको इसने अच्छी सेवा की। मुर्तजाकी मृत्युके बाद इसे शाही सेनाका मुख्य सेना-

पति बना कर बादशाह जहांगीरने कांगड़ेके विरुद्ध भेजा, किन्तु भाई-बन्धुओंसे कहना इसे अभीष्ठ न था। यहाँ विद्रोह कर इसने पहाड़ी राजाओंका एक प्रबल संघ तैयार किया।

सय्यद सफी वहाँको इसने युद्धमें हराया और शाही परगने लूटे, किन्तु विक्रमजीतके सामने इसका कुछ वश न चला। इसकी राजधानी मऊ नूरपुर पर विक्रमजीतने अधिकार कर लिया। रासासे प्रतीत होता है कि अलिफखांको इस स्थान पर विक्रमजीतने शाही सेनाके कुछ भागके साथ रखा। इसके कुछ दिन बाद सूरजमल बीमार हो कर मर गया। जहाँगीरने इसके स्थान पर उसके भाई जगतसिंहको नियुक्त किया और उसे १००० जात, ५०० सवारकी मनसबदारी दी। (कुछ विशेष वर्णनके लिये अवशिष्ट टिप्पण देखें)।

पृष्ठ ६९, पद्यांक ८१४. जहांगीर मानी नहीं, विक्रम करी जु बात......।

इस पंक्तिसे प्रतीत होता है कि विक्रमाजीत सर्वप्रथम साम द्वारा कार्य सिद्ध करनेका प्रयत्न किया करता था!

पृष्ठ ६९. पद्यांक ८१५, टूट्यो गढ़......।

गढ़की विजयका समय नवम्बर १६ सन् १६२० है।

पृष्ठ ७०, पद्यांक ८२७. ठटा......।

यह भी पहाड़ी दुर्ग है। सिन्धका ठटा नहीं।

पृष्ठ ७२, पद्यांक ८४४. सरदारखां......।

सरदारखां पचास वर्षका हो कर ११ मुहर्रम सन् १०३५, तदनुसार सं० १६८२ आश्विन सुदी १३-१४ को दस्तोंकी बीमारीसे मर गया। बादशाहने यह सुन कर पंजाबके पहाड़ोंकी फौजदारी अलिफखांको दी जो उसके मददगारों में से था। (जहांगीरनामा)

पृष्ठ ७२, पद्यांक ८४४.

पहाड़ी नेताओंके स्थानादिके लिये इस पुस्तकके परिशिष्ट रूपमें प्रकाशित अलिफखांकी पैड़ी देखें।

पृष्ठ ७३, पद्यांक ८६५. नगरोटै डेरे कीये जगतै दल बल साज......।

जगतसिंह राजा बसुका दूसरा पुत्र था। (पद्य ८०० वाला ऊपर का टिप्पण देखो) अब शाहजहांने विद्रोह किया तो उसका कृपापात्र होनेके कारण जगतसिंहने पहाड़ोंमें पहुँच कर उपद्रव किया। (ग्लैडविन, जहांगीर, पृष्ठ १४३)।

पृष्ठ ७४, पद्यांक ८७७. सादकखां पैठान हो, चीठी दई पठाय......।

सादिकखां पंजाबका सूबेदार बनाया जा कर जगतसिंहके विरुद्ध भेजा गया। इस कार्यमें उसे विशेष सफलता न मिली। जहाँगीरकी मृत्युके बाद आसफखांने इसे शाहजहांकी तरफ कर

किया। (तुजुके जहांगीरी अंग्रेजी, अनुवाद, खंड २, पृ. २५९; इकबाल नामा, पृष्ठ २०१)।

पृष्ठ ८०, पद्यांक ९३३. अलिफखांका मृत्यु सम्वत्......।

सं० १६८३ जहांगीरके राज्यका अंतिम वर्ष था। अलिफखांकी पैड़ीके अनुसार इसका जन्म संवत् १६२१ था। इसलिये ६२ वर्षकी अवस्थामें रण-प्रांगणमें इस वीरने अपने प्राण दिये।

पृष्ठ ८२, पद्यांक ९३९. ग्रन्थका रचनाकाल......।

संवत् १६९१ रासाके मुख्यांशका रचनाकाल है। इसके बादका भाग इसकी अनुपूर्ति मात्र है।

पृष्ठ ८२, पद्यांक ९३९. कवित पुरातन मैं सुन्यौ, तिह बिध कर्‌यो बखान......।

क्या इन शब्दोंसे यह अर्थ लिया जाय कि अलिफखांके मृत्युके कुछ ही समय बाद, किसी अन्य कविने इस विषय पर कोई कवित्त लिखा और जांनने उसे अपनी रचनाका आधार बनाया। अधिक संभव तो यह प्रतीत होता है कि केवल रासाके आदि भागके लिये कविने उसका आश्रय किया है। अन्य बातें उसके प्रायः समसामयिक थीं।

पृष्ठ ८३, पद्यांक ९६०. अमरसिंह राठौरका आगरेमें काम आना......।

मुसलमानी इतिहासकारोंने इस विषय पर जो कुछ लिखा है उसका सारांश निम्न-लिखित है –

अमरसिंह दरबारसे कुछ दिनोंसे अनुपस्थित रहा था। जब वह जुलाई २६, १६४४ ई० सन्‌के दिन वापस आया तो मीरबख्शी सलावतखां उसे दाराके स्थान पर बादशाहसे मिलनेके लिये ले गया। अमरसिंह बांई तरफ खड़ा था और बादशाह शामकी नमाजके बाद कुछ हुक्म लिखा रहा था। सलावतखां मुल्ला करामतसे कुछ बातचीत करने लगा। अमरसिंहको संदेह हुआ कि सलावतखां उसकी शिकायत कर रहा है। अचानक ही अमरसिंहका खंजर सलावतखां पर पड़ा और सलावतकी इह लीला समाप्त हो गई। खलीलुल्लाखां और अर्जुनने एक दम अमरसिंह पर हमला किया, और शीघ्र ही कुछ और मनसबदार और गुर्जबदार उनसे आ मिले। अमरसिंह मारा गया। अमरसिंहके साथियोंने अर्जुनसे इसका बदला लेनेका प्रयत्न किया और इसी झगड़े में मीर तुजुकखां मीरखां, मुशरिफ मुलकचंद आदि मारे गये। अन्ततः सय्यदखां जहां और रशीदखां अन्सारी आदिने अमर-सिंहके आदमियों पर आक्रमण किया और उन्हें मार डाला।

इसी घटनाका अतिरंजित रूप अनेक राजपूती ख्यातोंमें मिलता है। सबसे विश्वस्त वर्णनकी दो जैन कृतियां हैं जिन्हें श्री अगरचंद नाहटाने 'भारतीय विद्या' खंड २ में प्रकाशित किया था। इनके अनुसार वास्तविक घटनाका रूप यह था :–

बीकानेर और नागोरके बीचमें कुछ सरहदी झगड़ा पैदा हो गया था। इसीके बाद अमरसिंह शाहजादा दाराशुकोहकी हवेलीमें बादशाहसे मिलने गया। बादशाह गुसलखानेमें था। सलावतखांसे अमरसिंहका कुछ वाद विवाद हो गया और अमरसिंह कह बैठे "अच्छा खबर

पड़ेगी।" सरहदी झगड़ेमें सलाबतखांने ताना देते हुए कहा, "क्या खबर पड़ेगी ? बीकानेर तो खबर पड़ी। क्या रावजी गंवारी करते हो ?" इतना सुनते ही अमरसिंहने कटारी चलाई। वह सलाबतखांके पेटमें घुस गई। शाहजहांने अमरसिंहको पहले तो घर जानेका हुक्म दिया, किन्तु दाराशिकोहके कहने पर मनसबदारोंसे कहा, "देखो, न जाने पाये। अमरसिंहको मार लो।" गौड़ विट्ठलदासके लड़के अर्जुनने धोखेसे वार कर अमरसिंहको गिराया और गुर्जबरदारोंने आ कर अमरसिंहका काम तमाम किया। जब लाश बाहर भेजी गई तो गोकुलदास, मीरखां और हरनाथ भाटीने बख्शी मूलकचंदको मार डाला। गोकुलदास और हरदास अमरसिंहके दस अन्य नौकरों सहित यहीं लड़ कर काम आये। प्रातःकाल होते ही राठौड़ बलू, राठौड़ भावसिंह, गिरधर व्यास आदिने अमरसिंहकी रानियोंको सती किया और फिर अर्जुनसे बदला लेनेका विचार किया। बादशाहने उनके विरुद्ध खांजहां सैयदको भेजा। बलू राठौड़ आदि अमरसिंहके ६४ आदमी वीरतासे लड़ते हुए काम आये।

संवत् १७०१ श्रावण शुक्ला द्वितीयकी तीन या चार घड़ी बीतने पर अमरसिंहने सलाबतखांको कत्ल किया और स्वयं मारा गया। लाशके बाहर आते ही उसी समय उनके १२ साथियोंने भी लड़कर वीर गति प्राप्त की।

बलू राठौड़का सैयद खांजहांसे युद्ध श्रावण सुदी ३ के तीसरे पहर हुआ।

पृष्ठ ८७. पद्यांक ९९३, ताहिरखां हैं बलखमैं साहिजादै के पास......।

शाहजादा मुरादने सन् १६४६ ई. जुलाई सातके दिन बलखमें प्रवेश किया।

पृष्ठ ८७, पद्यांक ९९१. इंद खोहकै......।

इसका असली नाम अन्दरूखद है। इस स्थान पर मुगल सेनाने अस्त्राखानी नज्रमुहम्मदको परास्त किया।

पृष्ठ ८९ पद्यांक १०१९, फिरी मुहिम बलखकी......

औरंगजेबने सन् १६४७ अक्तूबर ३ के दिन बलख से प्रयाण किया।

पृष्ठ ८९, पद्यांक १०१९. बहुर पठाई फौज तव, गढ़ कंधारकौ लैन......।

ईरानके बादशाह अब्बास द्वितीयने फरवरी १६४९ में मुगलोंसे कंधार जीत लिया। शाहजहांने औरंगजेबको कंधार जीतनेकी आज्ञा दी। शाहमीरकी लड़ाईमें, जिसका संभवतः रासामें वर्णन है, मुगल सेनापति रुस्तमखां विजयी हुआ। सितम्बर ३, १६४९ के दिन औरंगजेबने दुर्गका पहला घेरा उठाया।

पृष्ठ ८९, पद्यांक १०२३. कंधार पर दूसरा आक्रमण......।

यह सन् १६५२ में फिर औरंगजेबकी अध्यक्षतामें हुआ।

पृष्ठ ९०, पद्यांक १०२६. कंधार पर तीसरा आक्रमण......।

तीसरा आक्रमण सन् १६५३ में दाराकी अध्यक्षतामें हुआ।

पृष्ठ ९०, पद्यांक १०३०. दौलतखांकी मृत्यु......।

संवत् १७१० अर्थात् सन् १६५२ में हुई।

अवशिष्ट टिप्पण

विक्रमाजीत द्वारा कांगड़ाकी विजय–

सूरजमल पर विक्रमाजीतके आक्रमण और कांगड़ाकी विजयका शाहजहांके मुन्शी जलाला तिबा द्वारा रचित शाश फतह कांगड़ामें अच्छा वर्णन है। इससे पहाड़ी प्रान्तके भूगोल और तत्कालिक राजनैतिक परिस्थिति पर पाठकोंको कुछ अधिक प्रकाश मिलेगा। अतः इसका सार यहाँ प्रस्तुत करते हैं :–

बादशाहने सूरजमलके विद्रोहके विषयमें सुनते ही उसे दबानेके लिये शाहजहांको नियुक्त किया और उसे कांगड़ा जीतनेकी भी आज्ञा दी। सूरजमलने पंजाबके कई परगनोंमें लूटमार मचा रखी थी। शाहजहांने विक्रमाजीतको सेनाका नायक बनाया, और बादशाह जहांगीरके १२वें वर्षके शहीरयार महीनेमें (१ शाबान, हिज्री सन १०२७) उसे गुजरातसे एक बड़ी फौजके साथ रवाना किया। सूरजमल यह सुनते ही पठानकोटकी तरफ भागा और मऊके दुर्गमें जा कर ठहरा। मऊ चारों तरफसे पहड़ों और जंगलोंसे घिरा हुआ है, देशके बहुत विशाल और मजबूत दुर्गोंमें उसकी गिनती है। राजा विक्रमाजीतने शीघ्र दुर्गको घेर लिया। सूरजमलने सामना किया, किन्तु पराजित हुआ। उसके ७०० व्यक्ति, मर्द और औरत मारे गये। स्वयं सूरजमल राजबसुके बनाये हुए नूरपुर नामके किलेमें कुछ साथियों सहित भाग गया। विक्रमाजीतने यहाँ उसका पीछा किया, और सूरजमलने चम्बाके राज्यमें घुस कर तारागढ़के किलेमें आश्रय लिया। चार दिनके घेरेके बाद विक्रमाजीतने यह किला भी हस्तगत किया। यहां उसकी फौजके बहुतसे आदमी मारे गये। सूरजमल फिर भागा और उसने चम्बाके राजाके यहाँ शरण ग्रहण की।

विक्रमाजीतने तारागढ़की विजयके बाद हारा, पहाड़ी, ठठा, पकरोटा, सूर और जावालीके किले जीते। इसी बीचमें सूरजमलके भाई माधोसिंहने कुछ उपद्रव किया। विक्रमाजीतने नूरपुर और कांगड़ेके बीचके कोटिला दुर्गमें उसका मुकाबला किया। भयंकर रक्त-पातके बाद शाही सेना किला जीतनेमें समर्थ हुई। कुछ ही दिनोंमें विक्रमाजीतने सब पहाड़ी प्रदेश पर अधिकार कर लिया। शत्रुके थाने उठा कर उसने शाही थाने बिठाये और शाही नौकरोंको अनेक जागीरें दीं। सूरजमलका चम्बाके राजाके दुर्गमें देहान्त हो गया। चम्बाके राजाने उसकी तमाम सम्पत्ति, जिसमें चौदह बड़े हाथी और २०० अरबी और तुर्की घोड़े शामिल थे, विक्रमाजीतको सौंप कर बादशाहसे क्षमा प्राप्त की।

इसके बाद विक्रमाजीतने कांगड़े पर घेरा डाला। अन्तमें शाही सिपाहियोंने एक जगह दुर्गकी दीवार तोड़ डाली। भयंकर लड़ाई हुई। शाही तोपखानेने शत्रुको भून डाला। शत्रु भाग निकले। राजा विक्रमाजीतने कांगड़ेमें घुसकर विश्वस्त अफसरोंको नियुक्त किया और जिन शूरोंने इस युद्धमें वीरता दिखाई थी उनके मनसब बढ़ाये। इससे पूर्व कांगड़े पर कोई विजय प्राप्त न कर सका था। (इलियट और डाउसन, भाग ६, पृष्ठ ५१८–५३१)।